वैश्विक संवाद

7.1

17 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

क्रांति के पश्चात मिस्र — मोना अबाजा

यथार्थ से पूछताछ — ल्यूक बोलतोन्सकी

एक असाधारण संस्थान — सराह मोसोएत्सा

अफ्रीकी–अमरीकी महिलाओं का प्रतिनिधित्व — पेट्रिशिया हिल कालिन्स

सिंगापुर का समाजशास्त्र — विनीता सिन्हा, नूरमन अब्दुल्लाह, यूवेन तियो, फ्राँसिस खेक गी लिम, डेनियल पी. एस. गोह

पोलेण्ड में गर्भपात के लिए संघर्ष — एग्निज्का ग्राफ, एंल्जबियता कोरोच्जुक, जूलिया कुबिसा

विशिष्ट कॉलम

> ISA का कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क
> इण्डोनेशियाई में *वैश्विक संवाद* का अनुवाद
> इंडोनेशियाई संपादकीय टीम का परिचय

पत्रिका

अंक 7 / क्रमांक 1 / मार्च 2017
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

GD

International Sociological Association

> सम्पादकीय

आगे क्या है?

हमारे सभी सुविज्ञ सर्वेक्षण शोध के बावजूद, बहुत कम ने डोनाल्ड ट्रम्प के चुनाव की भविष्यवाणी की। यह दर्शाता है कि अमरीकी समाजशास्त्रियों को अपने स्वयं के देश के बारे में सीमित ज्ञान है। जहाँ दक्षिण–पंथी आंदोलनों के बारे में उल्लेखनीय अध्ययन हैं–और हमने दो अंक पूर्व (GD 6.3) में अर्ली हाक्शाइल्ड के द्वारा एक को प्रकाशित किया था–वे वामपंथी झुकाव वाले आंदोलनो के अध्यनों से काफी कम संख्या में है। अन्य लोगों से अलग नहीं, समाजशास्त्री स्वयं जैसे सोचने वाले एवं कार्य करने वाले लोगों की तरफ झुकते हैं और भेदभाव, असमानता और अज्ञातजन मीति के खिलाफ होने वाले आंदोलनों का अध्ययन करते हैं। दूसरों को बेहतर समझना अपने मूल्य और प्रतिबद्धताओं को दबाना नहीं है – या यह ढोंग करना कि हमारे पास नहीं हैं – बल्कि उनके बारे में अधिक सचेत होना है। और ऐसा करने में हमें विदेशी समुदायों में खुद को डुबोना पड़ेगा।

इस प्रकार के कार्य की महत्तता इस अंक और इसके पूर्व अंक के लेख, जो गर्भपात अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं, से काफी स्पष्ट हो जाती है। एगनिस्जका ग्राफ और एलिजाबेथ कोरोलच्जुक पोलेण्ड में लिंग–विरोधी आंदोलन को मुखर बनाने वाली राजनीति और यह कैसे व्यापक वैश्वीकरण–विरोधी भावनाओं से जुड़ी है, का परीक्षण करते हैं। जुलिया कुबीसा उल्लेखनीय छाता आंदोलन – सरकार–विरोधी प्रदर्शन – जो पोलेण्ड की सड़कों पर फैल गया था, का वर्णन करती हैं। सड़के विरोध प्रदर्शन के स्थल होने के साथ सैन्यकरण का भी स्थान हो सकती हैं। यह मिस्र के 25 जनवरी की क्रांति से लेकर जनरल अल सीसीस के नेतृत्व में प्रतिक्रांति का विषय है।

इस अंक में हम एक विख्यात फ्रेंच समाजशास्त्री लुक बोलतान्सकी के साथ साक्षात्कार का प्रकाशन कर रहे हैं। वे अपनी आलोचना के समाजशास्त्र का एक पूर्ण सारांश प्रस्तुत करते हैं, जो संस्थागत यथार्थ और वास्तविक दुनिया के अनुभवों के मध्य अंतराल से उभरता है। राष्ट्रीय संस्थानों के हमारे वैश्वीकृत दुनिया के मध्य बढ़ते संघर्षों से टकराव और अवरोध तीव्र हो गये हैं। यह सिंगापुर के समाजशास्त्र पर पांच लेखों की भी थीम है। वे, अपने पहले प्रधानमंत्री ली कुआन यू की मृत्यु के बाद, इस लघु राष्ट्र के साथ साथ इसके विशिष्ट समाजशास्त्र की गति का अन्वेषण करते हैं। लेख सामाजिक गतिशीलता, नृजातीयता, धर्म और राजनीति जैसे क्षेत्रों में सत्तारूढ़ विचारधारा एवं जीवंत वास्तविकता के मध्य छितराव को रेखांकित करते हैं।

एशिया से हम अफ्रीका, विशेष रूप से दक्षिण अफ्रीका की तरफ चलते हैं जहाँ पिछले दो वर्षों में विश्वविद्यालय काफी राजनैतिक अशांति का स्थान रहे हैं। हालांकि, यहां हम सरकार द्वारा चलाये गये एवं समाजशास्त्री सराह मोसोएतसा के निर्देशन में एक अदभुत शैक्षणिक कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। उनका संस्थान पी एच डी विद्यार्थियों, सम्मेलनों, पुस्तक पुरस्कार एवं सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में प्रकाशन को समर्थन देने में अग्रणी है।

हम कोसोवो के एक युवा समाजशास्त्री लेबिनोट कुनुशेवकी द्वारा आयोजित एक साक्षात्कार भी प्रकाशित करते हैं जो प्रसिद्ध नारीवादी अफ्रीकी–अमरीकी समाजशास्त्री पेट्रीसिया हिल कॉलिन्स से बात करते हैं। इस अंक में वैश्विक संवाद की इन्डोनेशियाई दल का परिचय भी सम्मिलित है जिसमें अनुवार की चुनौतियों का वर्णन किया गया है। हम ओलेग कोमलिक के आई एस ए कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क के महत्वपूर्ण कार्य के स्मरण से अंत करते हैं। यह आई एस ए के सबसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट में से एक हैं – समाजशास्त्रियों की अगली पीढ़ी का समर्थन करना।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

मोना अबाजा, *मिस्र की अग्रणी समाजशास्त्री, इस्लाम एवं नगरीय जीवन पर कई पुस्तकों की लेखक, जनवरी क्रांति के बाद सैन्यकरण पर विचार रखते हुए*

ल्यूक बोलतोंस्की, *आलोचना के समाजशास्त्र के महान फ्रेंच सिद्धान्तकार, जासूसी उपन्यासों और समाजशास्त्र के लिए उनकी महत्तता पर उनकी नवीनतम पुस्तक पर बात करते हुए*

सराह मोसोएत्सा, *प्रेरणादायक दक्षिण अफ्रीकी समाज शास्त्री उनके द्वारा चलाये जा रहे अभूतपूर्व समाज विज्ञान और मानविकि संस्थान का वर्णन करती हैं।*

पेट्रिशिया हिल कोलिन्स, *अग्रणी अफ्रीकी–अमरीकी नारीवादी बुद्धिजन एवं सीमान्तता पर अपने मौलिक विचार साझा करते हुए।*

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Argentina:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

Bangladesh:
Habibul Haque Khondker, Hasan Mahmud, Juwel Rana, US Rokeya Akhter, Toufica Sultana, Asif Bin Ali, Khairun Nahar, Eashrat Jahan Eyemoon, Kazi Fadia Esha, Helal Uddin, Muhaimin Chowdhury.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Benno Alves, Julio Davies.

India:
Ishwar Modi, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Pragya Sharma, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Marjan Namazi, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Fuma Sekiguchi, Yutaro Shimokawa.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi.

Poland:
Jakub Barszczewski, Paulina Domagalska, Adrianna Drozdrowska, Łukasz Dulniak, Anna Gańko, Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Kamil Lipiński, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Jacek Zych, Łukasz Żołądek.

Romania:
Cosima Rughiniş, Raisa-Gabriela Zamfirescu, Costinel Anuța, Maria-Loredana Arsene, Tatiana Cojocari, Florina Dincă, Andrei Dobre, Diana Alexandra Dumitrescu, Iulian Gabor, Rodica Liseanu, Mădălina Manea, Mihai-Bogdan Marian, Anca Mihai, Andreea Elena Moldoveanu, Oana-Elena Negrea, Miora Paraschiv, Ion Daniel Popa, Susana Popa, Diana Pruteanu Szasz, Ioana Silistraru, Adriana Sohodoleanu, Andreea Vintilă.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova, Lubov' Chernyshova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultant: Gustavo Taniguti.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : आगे क्या है? **2**

> दुनिया भर से साक्षात्कार

क्रांति पश्चात के मिस्र का भाग्य : मोना अबाजा के साथ साक्षात्कार
माइकल बुरावे, यूएसए **4**

यथार्थ से पूछताछ : ल्यूक बोलतोन्सकी के साथ साक्षात्कार
लौरा चारटेन एवं **मेरीन जीन बाइसन**, फ्राँस **8**

दक्षिण अफ्रीका में एक असाधारण संस्थान : सराह मोसोत्एसा के साथ साक्षात्कार
मिशेल विलियम्स, दक्षिण अफ्रीका **11**

अफ्रीकी–अमरीकी महिलाओं का प्रतिनिधित्व : पेट्रिशिया हिल कालिन्स के साथ साक्षात्कार
लेबिनोत कुनुशेव्की, कोसोवो **15**

> सिंगापुर का समाजशास्त्र

ली कुआन यू के बाद
विनीता सिन्हा, सिंगापुर **17**

बहु–नस्लवाद के बाद
नूरमन अब्दुल्लाह, सिंगापुर **19**

श्रेष्ठ योग्यतातन्त्र के बाद
यूवेन तियो, सिंगापुर **21**

धर्मनिरपेक्षतावाद के पश्चात्
फ्राँसिस खेक गी लिम, सिंगापुर **23**

वैश्वीकरण के बाद
डेनियल पी. एस. गोह, सिंगापुर **25**

> पोलेण्ड में गर्भपात के लिए संघर्ष

अनुदारवादी भविष्य की ओर : लैंगिक–विरोधी एवं वैश्वीकरण–विरोधी
एग्निज्का ग्राफ, पोलेण्ड एवं **एल्जबियता कोरोच्जुक**, स्वीडन **27**

पोलेण्ड में प्रजनन अधिकारों की रक्षा करते हुए
जूलिया कुबिसा, पोलेण्ड **30**

> विशिष्ट स्तम्भ

ISA का कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क
ऑलेग कामलिक, इजराइल **32**

इण्डोनेशियाई में *वैश्विक संवाद* का अनुवाद
कमान्तो सुनार्तो, इंडोनेशिया **34**

इंडोनेशियाई संपादकीय टीम का परिचय **35**

> क्रांति पश्चात के मिस्र का भाग्य

मोना अबाजा के साथ साक्षात्कार

मोना अबाजा काहिरा में अमरीकी विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की प्रोफेसर हैं। वे समकालीन मिस्र की एक विख्यात विद्वान है जिन्होंने डिबेट्स ऑन इस्लाम एण्ड नॉलेज इन मलेशिया एण्ड इजिप्ट : शिफ्टिंग वल्डर्स (2002), द चेजिंग कंज्यूमर कल्चर ऑफ माडर्न इजिप्ट (2006), द कॉटन प्लांटेशन रिमेम्बरड (2013) सहित अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने स्वीडन, सिंगापुर, जर्मनी, फ्रांस, मलेशिया, इटली एवं नीदरलैंड सहित दुनिया भर में विजिटिंग पदों पर कार्य किया है। हाल के वर्षों में उन्होंने मिस्र में होने वाले समकालीन राजनैतिक परिवर्तनों पर लिखा है, उनमें से दो वैश्विक संवाद (खण्ड 1, अंक 4 और खण्ड 3, अंक 3) में प्रकाशित हुए हैं। माईकल बुरावे के साथ साक्षात्कार में वे, यहाँ 2011 के जनवरी 25 की क्रांति के बाद के वर्षों पर चिन्तन करती हैं।

मोना अबाजा

एम. बी. : आपने वैश्विक संवाद सहित अन्य में 25 जनवरी की क्रांतिकारी घटनाओं, जिन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति होस्नी मुबारक के 30 वर्षों के शासन को समाप्त किया, पर काफी लिखा है। इन घटनाओं ने ऐसी राजनैतिक प्रक्रिया को गति दी जिसने मुहम्मद मुर्सी के राष्ट्रपति पद पर निर्वाचन और इस्लामिक शासन की अल्पकालिक प्रधानता (2012–2013) का मार्ग प्रशस्त किया। जुलाई 2013 में सत्ता के सैन्य कब्जें में मुर्सी अपदस्थ किये गये और जनरल अल सिसी ने सत्ता संभाली और अपने आप को 2014 में मिस्र का राष्ट्रपति घोषित किया। 25 जनवरी के बाद उथल पुथल के इन वर्षों और विशेष रूप से सेना की भूमिका का आप कैसे आकलन करती हैं?

एम. ए. : 25 जनवरी की क्रांति, जहाँ टैंक सड़कों पर उतर गये और उन्होंने मुबारक की बेदखली के पहले तहरीर चौक को घेर लिया, के बाद से सेना की भागीदारी के बारे में काफी विवाद है। तथाकथित रूप से वे मुबारक शासन के ठगों से प्रदर्शनकारियों की रक्षा कर रहे थे। शायद मुबारक की बेदखली इतनी विचारणीय नहीं होती यदि सशस्त्र बलों को वाशिंगटन से क्रांति की दिशा में तटस्थ रहने के लिए हरी झण्डी नहीं मिली होती। जनवरी, 2011 के प्रारंभिक दिनों में ''लोगों'' और सेना के बीच यदि एक प्रकार की ''मित्रता'' पनपी, समय के गुजरने के साथ वहां सेना की घटती लोकप्रियता की कई प्रकार की व्याख्याएँ और अर्थ भी थे।

2011 में टैंकों के नीचे सोते प्रदर्शनकारी, या सेना के टैंकों पर लिखे मुबारक विरोधी नारे या गालियाँ या मुबारक की अपदस्थी के बाद तहरीर में सैनिकों को चुंबन देती बुजुर्ग महिलाएँ जैसी वैश्विक स्तर पर संचारित प्रतिष्ठित छवियों को स्मरण कीजिए। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन्हीं थोडे पुराने सेना के टैंकों (शायद किसी नगरीय युद्ध के संचालन के लिए पूर्ण रूप से अव्यवहारिक) ने कब्जा लिया और 28 जनवरी को मासपेरो गली में टेलीविजन की इमारत को घेर लिया। इसकी फ्री ऑफिसरस द्वारा जुलाई 1952 के राजा फारूख के तख्तापलट की घोषणा हेतु प्रसारण स्टेशन पर कब्जे के कदाचित प्रतीकात्मक दोहराव के रूप में व्याख्या की जा सकती है। हालांकि, SCAF (सशस्त्र/सैन्य बलों की सर्वोच्च परिषद) पर कब्जा करने के बाद, सेना की लोकप्रियता घटती गई। मार्च, 2011 में तहरीर में प्रदर्शनकारियों पर हमलें, महिला प्रदर्शनकारियों पर यातनाएँ एवं अनिवार्य कौमार्य परीक्षण, अक्टूबर 2011 में मासपेको नरसंहार, पोर्ट सईद में अल्ट्रा का अहली नरसंहार और फिर नवम्बर और दिसम्बर 2011 में मुहम्मद महमूद मार्ग पर हिंसक घटनाएँ जैसी सभी घटनाओं के खुलासे ने सेना के क्रांति–विरोधी पक्ष की तरफ स्थानांतरण को घोषित किया।

पीछे देखते हुए, जनवरी में क्या सेना वास्तव में प्रदर्शनकारियों की तरफ थी कि व्याख्या पर सवाल उठाना आवश्यक है। सेना का हस्तक्षेप शायद स्वतन्त्रता और लोकतंत्र की आकांक्षाओं को

> >

कसर अल ऐनी दीवार, जिसे बाद में हटा दिया गया और द्वार से बदल दिया गया। अल्ला अवाद द्वारा ग्राफिटी। मोना अबाजा द्वारा फोटो, दिसम्बर 7, 2012.

समर्थन देना कम और तहरीर चौक शायद होस्नी मुबारक, उसके ख्यात वारिस जमाल मुबारक एवं उसके घनिष्ठ पूंजीपतियों का समूह जिनकी अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण भाग पर आर्थिक पकड़ सेना की समानान्तर नियंत्रण से टकरा रही थी, से पीछा छुड़ाने का एक स्वर्णिम अवसर प्रदान कर रहा था। लेकिन 2013 में मुर्सी की सैन्य बेदखली एक अलग मामला था, चूंकि अल सीसी अब मुस्लिम ब्रदरहुड द्वारा प्रोन्नत वैश्विक इस्लामी नेटवर्क के विरोधी राष्ट्रवादी नायक के रूप में चित्रित किये गये थे।

एम. बी. : हम राष्ट्रीय विचारधारा और उसके आर्थिक आधार पर बाद में लौटेंगे, लेकिन सेना पर भी व्यवस्था बहाल करने का जुनून सवार था, क्या ऐसा नहीं था?

एम. ए. : सचमुच, जनवरी 2011 के बाद सेना सर्वव्यापी थी, विशेष रूप से वह शहरों के पुनर्निर्माण में दृष्टिगोचर थी। सामूहिक स्मृति में सिटी सेण्टर की सड़कों पर सेना के टैंक 2011 से 2014 तक लगातार प्रकट, गायब और पुनः प्रकट होते रहे। हमने प्रदर्शनकारियों एवं पुलिस बलों के मध्य बफर जोन के रूप में कंक्रीट की दीवारों का निर्माण नागरिकों द्वारा इन पृथक और कमजोर बनाने वाली दीवारों का छेदम एवं विध्वंस करते, सुरक्षा उपायों के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र की नाकाबंदी करते; खतरनाक हेलिकाप्टर, जो चोटी के क्षणों में उपर मँडराते रहते हैं; द्वारा शहर पर उर्ध्वाकार नियंत्रण 2011 और 2013 के मध्य पुलिस बल द्वारा शहर की मुख्य सड़कों पर होने वाले कई हमलों, पलायन और हत्याओं को; घातक आँसू गैस जिससे कई मौतें हुई और मिर्गी के दौरे पड़े; शहर में परेड करते नवनिर्मित अर्ध सैनिक बल, को देखा है। अगस्त 2013 में मुस्लिम ब्रदरहुड के सदस्यों का रबिया–अल अदाविया द्वारा नरसंहार इन नगरीय युद्धों का समापन प्रकरण था।

इस्लामवादियों द्वारा बढ़ते हुए सैनय आतंकी हमलों ने ''आतंक पर युद्ध'' के रूप में सैन्य आक्रमण को प्रस्तुत किया, जिसके बाद पूरे शहर में सरकारी भवनों और दूतावासों के चारों ओर (बगदाद में ग्रीन जोन की नकल करते हुए) विशालय अवतल दीवारों का निर्माण किया गया। हमारे पास दैनिक नगरीय जीवन के बढ़ते सैन्यकरण की बहुत सारी ज्वलंत छवियाँ हैं, जो सैन्य नियंत्रण से निपटने, दरकिनार करने या विरोध करने के जीवन के नये तरीकों को जन्म दे रही हैं।

एम. बी. : और नगरीय जीवन के बढ़ते सैन्यकरण के पीछे, अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण करने हेतु प्रतिस्पर्धा को क्या हो रहा था?

एम.ए. : जेनब अबुल–मगद का महत्वपूर्ण कार्य2 वर्तमान अर्थव्यवस्था में सेना की भागीदारी की महत्ती भूमिका और उनकी गतिविधियाँ क्यों अपारदर्शी रखी गई की तरफ इशारा करने वाला शायद सबसे पहला अध्ययन है। अबुल मगद के अनुसार सैन्य बल कई दशकों से, मिस्र की अर्थव्यवस्था में लगभग 25% से 40% योगदर कर, वित्तीय रूप से शामिल है। इनमें मेगा परियोजनाएँ, खाद्य और पेय उद्योगों में बड़े कारखानें, चालू कैफेटेरिया और गैस स्टेशन सम्मिलित है। जैसा कि मैंने कहा, यह इस बात की व्याख्या करता है कि सेना ने मुबारक और उसके पुत्र के गुट के क्रोनी पूंजीपतियों के निष्कासन के लिए क्यों किया चूंकि वे समानांतर प्रतिस्पर्धी अभिजात वर्ग का गठन कर रहे थे।

लेकिन सबसे अधिक, वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए किसी भी भूमि को प्राप्त करने की अनुमति वाले नियम के कारण सेना भारी मात्रा रियल स्टेट को गृहित करने में सक्षम रही है। सबसे ज्यादा विशिष्ट रेगिस्तान में विशाल परियोजनाओं में सेना की गोचर भागीदारी है जहां उसे संयुक्त उपक्रमों और आकर्षक वित्तीय सट्टेबाजी को विकसित किया है। सैन्य बल भूमि परियोजना एजेन्सी, जिसने आबू धाबी के शेख जायद के साथ हाल ही में 16000 एकड़ जमीन ली और नई राजधानी3 के निर्माण की देखरेख का कार्य लिया, पर मादा मसर की रिपोर्ट से यह और अधिक स्पष्ट हो गया है। एक वर्ष पूर्व अल सीसी ने अमीरात4 की अरबटेक कंपनी के साथ 40 करोड़ डालर की संयुक्त आवासीय परियोजना में सेना की भागीदारी

>>

काहिरा में अमरीकी विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार के सामने खड़ी नवनिर्मित अवतल दीवार। मोना अबाजा द्वारा फोटो, सितम्बर 21, 2015

की घोषणा की थी। फिर कैरोब्जखर ने हमें सूचित किया कि 2014 में रक्षा मंत्रालय ने UAE में स्थित मेगा कंपनी एम्मार के साथ एक विशाल एम्मार चौक जिसमें अपटाडन काहिरा में सबसे बड़ा शापिंग सेण्टर होगा, के निर्माण का करार किया है। यह दुबई उन्मुख नव उदारवादी बाजार तहरीर चौक को प्रतिरूपित करेगा।

बाजार व्यवस्था का यह सपना एक सत्तावादी सैन्य शासन जिसमें सेना अपने लेनदेन पर किसी प्रकार की पारदर्शिता के बिना विशाल भूमि बाजारों पर नियंत्रण रखती है, के तहत परिकल्पित है।5 बेशक, यह प्रथम बार नहीं है कि नवउदारवादी स्वपनों के साथ एक बाजार अर्थव्यवस्था सत्तावादी सैन्य शासन के साथ हाथ मिला कर कार्य कर रही है।

एम. बी. : आपने आर्थिक अभिजात के लिए जनरल अल सीसी का सत्ता में उदय का क्या मायने रहे हैं, का वर्णन किया। इसका बाकी आबादी, विशेष रूप से ''सड़कें'' जो अरब बगावत में इतनी प्रसिद्ध हो गई और जिसके बारे में आपने बहुत कुछ लिखा है, के लिए क्या अर्थ है?

एम. ए. : 2012–2013 में मुर्सी के नीचे इस्लामवादियों के लघु शासन के बाद, सड़कों पर सेना का कब्जा कई लोगों के लिए ''व्यवस्था बहाल'' करने के समकक्ष था लेकिन इसका अर्थ प्राचीन शासन की राजनैतिक हस्तियों और वित्तीय दिग्गजों की बहाली भी प्रतीत होता है। जनवरी 2011 के बाद अपराध और हिंसा में वृद्धि के साथ सड़कों पर ठगों का शासन (चाहे वे प्राचीन शासन के ठक थे) दिखाई दिया। हजारों सड़क विक्रेताओं ने सभी कल्पनीय और अकल्पनीय स्थानों को हथिया, पूरी गलियों, पुलों के नीचे और उपर के सभी कोनों, पूरे शहर के मार्ग और गलियों पर कब्जा किया और निश्चित रूप से यातायात को बाधित किया। यह सभी मध्य वर्ग के लिए घृणित ''अव्यवस्था'' का प्रतीक था। लेकिन सड़क विक्रेताओं की सार्वजनिक उपस्थिति हमें लाखों, जिसमें विश्वविद्यालय स्नातक भी सम्मिलित थे, को गरीब बनाने वाली कई वर्षों से विफल नव उदारवादी नीतियों के परिणामों के बारे में बताती है। इन के फलस्वरूप उनके पास जीवित रहने का एकमात्र विकल्प सड़क पर बेचना ही बचा था।

अल सीसी द्वारा शहर की बहाली सड़क विक्रेताओं, जो अनौपचारिक क्षेत्र पर आश्रित लगभग पचास लाख हैं, की जबरन बेदखली के माध्यम से व्यापारिक क्षेत्र की ''सफाई'' करने का वृहद अभियान था।

एम. बी. : तो सेना सड़कों पर नियंत्रण साबित करने में सफल रही है, यह सत्ता का नकारात्मक स्वरूप है, लेकिन क्या अल सीसी सैन्य शासन के लिए लोकप्रिय समर्थन प्राप्त करने में कामयाब रहे हैं?

एम. ए. : कुछ पश्चिमी पंडितों के मानने के विपरीत, अल सीसी ने राष्ट्रपति बनने के पूर्व ही देश में ''व्यवस्था'' और स्थिरता बहाल करने के विमर्श के साथ लोकप्रियता हासिल कर ली थी। अन्यथा शासन द्वारा स्वेज नहर परियोजना में नागरिक भागीदारी के लिए शेयर और बाण्ड की खरीद के सफल प्रचार की किस प्रकार से व्याख्या की जा सकती है? कुछ ही सप्ताह में, स्थानीय निवेशकों से लगभग 8.5 करोड़ डालर उठाये गये। यह स्पष्ट है कि अल सीसी की राष्ट्रवादी भावनाओं को छूने की क्षमता अत्यधिक प्रभावी थी।

डेविड हार्वे हमें स्मरण कराते हैं कि लुई नेपोलियन बोनापार्ट–नेपोलियन III जिसने 1852 से 1870 तक शासन किया – की पेरिस की बहाली शहर के पूंजीवादी विनियोग के माध्यम से अधिशेष मूल्य निकालने पर निर्भर थी। नेपोलियन के तहत पेरिस का रूपांतरण अग्रिम तानाशाही और अधिकारों की जब्ती – अल सीसी के शासन से चितग्राही सादृश्यता, के अभ्यास के साथ साथ चला। व्यवस्था की दोनों शासन भव्य बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं से आसक्त थे। दोनों ने स्वेज नहर को राष्ट्र निर्माण परियोजना के रूप में देखा। नेपोलियन ने नहर की खुदाई के लिए धन दिया

>>

जबकि अल सीसी वर्तमान में उसके विस्तार पर कार्य कर रहे हैं। जीर्णोद्धार में काफी समानताएँ हैं : दोनों ने इस बात को पहचाना कि शहर के पूंजीवादी संसाधनों को हथियाने के लिए बुनियादी सेवाओं का विस्तार आवश्यक है। उदाहरण के लिए, मिस्र की सेना काहिरा के आस पास और सभी प्रांतीय शहरों के लिए राजमार्ग और पुलों के निर्माण में अत्यन्त व्यस्त है।

एम. बी. : तुलना काफी पहेलीनुमा है, लेकिन यदि हम घर के पास ऐतिहासिक समानताएं ढूँढ रहे हैं तो फिर अल सीसी के राष्ट्रवादी प्रोजेक्ट और नासिर के प्रोजेक्ट के बारे में क्या विचार हैं?

एम. ए. : वास्तव में, 2013 में जब मुर्सी सेना द्वारा अपदस्थ किये गये, अल सीसी की तुलना अक्सर जमाल अब्देल नासिर से की गई – अल सीसी ने मुस्लिम ब्रदरहुड के इस्लामी अंतराष्ट्रीय नेटवर्क (संभवतः आतंकी) जो खतरनाक माने जाते थे, के विपरीत राष्ट्रवादी बयानबाजी पर जोर देने के लिए काफी प्रयास किये थे। जब ''नई स्वेज नहर'' के विस्तार का हाल ही में उद्घाटन हुआ तो अल सीसी ने एक बार फिर अपनाये गये प्रतीकों से राष्ट्रवादी भावनाओं को छुआ। समारोह के उद्घाटन के लिए काम में लिया गया बेड़ा अपदस्थ पूर्व शाही परिवार का था – वहीं बेड़ा जो 1869 में स्वेज नहर के प्रथम उद्घाटन के समय महारानी यूजीन को ले गया था। समारोह की व्याख्या भव्य बुनियादी ढाँचागत परियोजनाओं में राष्ट्रीय गौरव को सम्मिलित करने की इच्छा के रूप में की जा सकती है। ऐसा उन्होंने नव उदारवादी भावनाओं को छूने वाली औपनिवेशिक/महानगरीय संस्कृति का संदर्भ देते हुए किया। 2015 में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के मध्य राष्ट्रपति फ्रास्वाँ ओंलाद पर सबसे अधिक ध्यान देने ने फ्राँ के साथ ऐतिहासिक निरंतरता को चिन्हित किया। यह भी दिलचस्प था कि 1956 में नासिर के द्वारा स्वेज नहर के राष्ट्रीयकरण पर बिल्कुल बात नहीं हुई।

एम. बी. : बहुत अच्छा, तो आप राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रेषित करने वाली मेगा परियोजनाओं की तरफ इशारा कर रही है, लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी के राष्ट्रीय प्रस्तुतीकरण का क्या होगा? मैं जानता हूं कि आप शहर की वास्तुकला में बहुत रूचि रखती हैं, इस क्षेत्र में क्या बदला है?

एम. ए. : यहां पर भी हमें पूर्व राष्ट्रीयवाद की स्मृति दिखाते परिवर्तन दिखाई देते हैं। हमारे बातचीत करते समय ही 19 वी सदी के उत्तरार्ध और 20 वी सदी के पूर्वार्ध में निर्मित वेले इपोक डाउनटाउन अपने मुहारों, उदाहरण के लिए तलात हर्ब चौक के इर्द गिर्द की इमारतों पर जैसा मुबारक के तहत किया गया था, पर बड़े पैमाने पर सफेदी करा कर फेस लिफ्ट की प्रक्रिया से गुजर रहा है।[8] विशाल ओराबी चौक को पैदल यात्री क्षेत्र में बदल दिया गया जबकि अधिकारी शेरीफेन मार्ग पर सभी लोकप्रिय कैफे को बंद करवा रहे थे। एक बार फिर, इसे भव्यता की राष्ट्रीय भावना और उससे भी अधिक सड़कों पर 'व्यवस्था' बढ़ाने के एक लोकलुभावन कदम के रूप में देखा जा सकता है।

एम. बी. : और यहां भी, इन लोकलुभावन कदमों के पीछे क्या कोई आर्थिक हित छिपे हैं?

एम. ए. : हां, बेल इपोक डाउनटाउन, जिसकी ऐतिहासिक इमारतों ने पूंजीपतियों और उद्योगपतियों को इसके केन्द्र और इसके अधिशेष मूल्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से आकर्षित किया है, का जीर्णोद्धार करने में स्वार्थ हित निहित है। अल इस्लामिया रियल एस्टेट कम्पनी डाउनटाउन काहिरा में 1916 में निर्मित आर्ट डेको घरीब मोरकोस भवन, 1924 में बनी कोड़क भवन, डेविस ब्रयान इमारतें, 1920 के दशक में निर्मित अब्देल खालेक धारवात इमारतें और 1930 के दशक में निर्मित सिनेमा रेडियो जैसी ऐतिहासिक इमारतों को संग्रहित कर रही है। कोड़क इमारतें, यहूदी अराधनालय के चारों तरफ चौड़े मार्ग का काफी सुविज्ञ तरीके से जीर्णोद्धार किया गया।

एम. बी. : अतः राष्ट्रवादी परियोजनाएँ आर्थिक हितों को छिपा लेती है लेकिन अल सीसी की लोकप्रियता की छाया में क्या कोई अन्य हित हैं?

एम. ए. : वास्तव में, 'व्यवस्था' और स्थिरता की बहाली के विमर्श ने मानवाधिकारों के उल्लंघन, बड़े पैमाने पर कार्यकर्त्ताओं का बंदीकरण और लोप होने पर चिंताओं को ढँक दिया है। इन सभी पर पहले की तुलना में कम ध्यान दिया जाता लगता है। हालांकि, तीव्र आर्थिक संकट, सरकारी हलकों में व्यवस्थित भ्रष्टाचार और लगातार पुलिस दमन जैसे निर्णायक मुद्दे अनसुलझे रहते हैं जैसे कोई क्रांति हुई न हो। अब तक चुप बहुमत का बढ़ता असंतोष एक और सामाजिक विस्फोट की भविष्यवाणी का निमंत्रण देता है। यद्यपि सेना के खिलाफ संभावित विरोध की कीमत काफी बड़ी हो सकती है क्योंकि इसमें निश्चित तौर पर और अधिक हिंसा होगी। ■

मोना अबाजा से पत्र व्यवहार हेतु पता <mona.abaza@gmail.com>

[1] See Ketchley, N. (2014) "The people and the army are one hand!" *Comparative Studies in Society and History* 56(1): 155-186.

[2] Abul-Magd, Z. (2016) "The Army and the Economy in Egypt." *Midan Masr*, August 7, 2016, http://www.midanmasr.com/en/article.aspx?ArticleID=222

[3] Sawaf, L. (2016) "The Armed Forces and Egypt's Land." *Mada Masr*, April 26, 2016, http://www.madamasr.com/en/2016/04/26/feature/economy/the-armed-forces-and-egypts-land/

[4] Saba, J. (2014) "The military and the state: The role of the armed forces in post-30 June Egypt." September 27, 2014, http://www.dailynewsegypt.com/2014/09/27/military-state-role-armed-forces-post-30-june-egypt/

[5] "From Tahrir Square to Emaar Square," *Cairobserver*, February 23, 2014, http://cairobserver.com/post/77533681187/from-tahrir-square-to-emaar-square#.WHN1ptLhCM8

[6] Oakford, S. (2014) "Egypt's Expansion of the Suez Canal Could Ruin the Mediterranean Sea," October 9, 2014, https://news.vice.com/article/egypts-expansion-of-the-suez-canal-could-ruin-the-mediterranean-sea (accessed December 2, 2016).

[7] Abaza, M. (2014) "Post January Revolution Cairo: Urban Wars and the Reshaping of Public Space." *Theory, Culture & Society*, published online September 30, 2014.

[8] *Ibid*.

[9] http://al-ismaelia.com/buildings/, accessed December 2, 2016.

> यथार्थ से पूछताछ

ल्यूक बोलतोन्सकी के साथ साक्षात्कार

ल्यूक बोलतोंस्की आज के सबसे प्रतिष्ठित समाजशास्त्रियों में से एक है। पियरे बोर्दियू के पूर्व सहयोगी, वे पेरिस में स्कूल फॉर एडवांस्ड स्टड़ीज इन द सोशल साईंसेस (EHESS) में शोध निदेशक हैं। 1990 के दशक में, इन्होंने ईव चियोपेलो के साथ लिखी अपनी विख्यात पुस्तक द न्यू स्पिरिट आफ कैपिटिलिज्म, जो 1999 में प्रकाशित हुई, में पूंजीवाद के संगठन और उसके प्रभुत्व के नये स्वरूपों की जाँच की। फिर उनका शोध कार्य आलोचना के कार्यकलापों के अध्ययन और राज्य के समाजशास्त्र की तरफ मुड़ गया। 2009 में डे ला ब्रिटिक – अंग्रेजी में 2011 में आंन ब्रिटिक के रूप में जारी, के प्रकाशन ने संस्थाओं और यथार्थ के मध्य सम्बन्धों पर उनके विमर्श में पर महत्वपूर्ण मोड़ का उल्लेख किया। 2012 में उन्होंने 19वीं शताब्दी से जासूसी उपन्यासों के उद्भव और प्रसार के बारे में एक पुस्तक एनिग्मास एण्ड प्लाटज प्रकाशित की।

साक्षात्कारकर्त्ता **लौरा चारटेन** एवं **मेरीन जीन बाइसन** EHESS पेरिस, फ्राँस में डाक्टोरल विद्यार्थी हैं। एनिग्मास एण्ड प्लाटस पुस्तक में ल्यूक बोलतोंस्की की प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, वे समाजशास्त्रियों द्वारा संस्थओं पर सवाल उठाने व उनकी आलोचना करने के लिए प्रयोग में आने वाले उपकरण एवं दृष्टिकोणों का अन्वेषण करते हैं। हम विशेष रूप से एलेक्स बर्नाड, नथाली प्लोचार्ड–एंग्ल एवं एमिली मर्फी के प्रति फ्रेंच से अंग्रेजी अनुवाद के लिए आभारी हैं।

नीचे प्रस्तुत चर्चा ग्लोबल एक्सप्रेस में प्रकाशित एक लंबे साक्षात्कार से लिया गया है।

ल्यूक बोलतोंस्की

एल.सी. और एम. जे. बी. : सबसे पहले, जासूसी उपन्यासों पर कार्य करने का विचार आप को कैसे आया।

एल.बी : मैं जासूसी उपन्यासों का पाठक बिल्कुल नहीं हूं या लगभग बिल्कुल नहीं। बाकी अन्य लोगों की तरह, मैं उन्हें तब पढ़ता हूं जब मुझे नींद नहीं आती लेकिन मूलतः मैं यह समझना चाहता था कि साहित्य की एक ऐसी शैली, जो हमेशा चित्ताकर्षक नहीं है और जो समाज की एक बहुत रूढ़िवादी छवि प्रस्तुत करती है, शुरू से इतनी आकर्षक क्यों रही। दरअसल, यह पुस्तकों और बाद में फिल्मों और टेलीविजन श्रृंखलाओं के स्वरूप में वर्णनात्मक कार्य की एक प्रभुख शैली बन गये हैं।

अपने पेशे में जाँच कार्य सम्मिलित होने के कारण और इसके अलावा अपने पुत्र के रिपोर्टर होने से, मैं विभिन्न प्रकार की जाँचों का अध्ययन करना चाहता था। जब मैं यह पुस्तक लिचा रहा था, फ्राँस में निकोलस सरकोजी के राष्ट्रपति काल में ''अफेयरस'' और ''राजनैतिक कांड'' सामने आ रहे थे। इन अफेयरस और राजनैतिक कांडों की जाँचें और काउटंर जाँच की आवश्यकता थी। मैंने स्वयं से पूछा कि बीसवीं सदी की पश्चिमी दुनिया में ''जाँचों'' की इतनी महत्वपूर्ण भूमिका कैसे हो गई। इस प्रश्न ने मुझे विभिन्न प्रकार की जाँचों के मध्य समानताएँ और भिन्नताओं को ढूंढ़नें और जाँचों को पूरा करने के भिन्न तरीकों को अन्वेषित करने के लिए अग्रेषित किया।

एल.सी. और एम. जे. बी. : क्या आप जासूसी उपन्यासों के उत्पत्ति की छानबीन करना चाहते थे?

एल. बी. : यह ''पुरातत्व'' नामक एक पुरानी दुर्खीमवादी दृष्टिकोण के साथ, एक अन्य तरीके से फूकोवादी उपागम है। हम एक प्रघटना तब बेहतर समझते है जब हम उसे उसकी उत्पत्ति से समझते है यानि कि इससे पहले की वे ''क्षेत्रीय प्रभाव'' के कारण काफी बदल जाये। इस प्रकार के चिंतन को पियरे बोर्दियू ने लोकप्रिय किया। पहले एक नई शैली का सृजन होता है और फिर विभिन्न लेखक नवाचार करते हैं और इस क्षेत्र में एक दूसरे से अपने आप को अलग सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इस तरह वे शैली को संशोधित करते हैं। एक शताब्दी से, थोडा अधिक से जासूसी उपन्यासों की बडी संख्या से भिन्न शैलियाँ रही हैं। मैं उस काल में लौटने का प्रयास कर रहा था जब यह शैली मूल रूप से पनपी थी। जासूसी

> >

उपन्यासों के अध्ययन और जिस समय यह शैली पनपी, तब की ऐतिहासिक विशिष्टताओं की पूछताछ करने के लिए अर्द्ध–संरचात्मक पद्धति प्रयोग में लेना चाहता थ। लेकिन मैं इस पुस्तक को एक स्केच, या उत्तरों के एक पुंज की बजाय प्रश्नों का एक संग्रह अधिक मानता हूं।

एल.सी. और एम. जे. बी. : एनिग्मास एण्ड प्लाटस में आप इस विचार को विकसित करते हैं कि प्रत्येक जाँच सामाजिक कर्त्ताओं स्वयं द्वारा की जा सकती है, जब वे ''यथार्थ'' जैसी वे संस्थाओं द्वारा आकारित होती है और ''दुनिया'', जिसे वे रोज अनुभव करते हैं, के मध्य एक टू अंतर को देखते हैं। यह अंतर फिर असहमति, संशय और कर्त्ताओं के मध्य पूछताछ को भड़का सकता है। इस पुस्तक में आप बताते हैं कि ''एनिग्मा में ऐसी चीज होती है जो सामाजिक व्यवस्था के संचालन में खुद को प्रकट करती है जो यथार्थ को चकनाचूर करने में सक्षम हो सकती है।''

एल. बी. : वास्तव में, एडगर एलेन पो द्वारा आविष्कार किये गये जासूसी उपन्यासों में एनिग्मा विशिष्ट है। जेसटाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने भी एनिग्मा के इस विचार, जो तथास्थित स्थिर और कदाचित स्पष्ट के भंग होने से पैदा होता है, सामना करते हैं। पुस्तक का वैचारिक आधार, मूरी पूर्व पुस्तक आन क्रिटिक में मेरे द्वारा विकसित यथार्थ और दुनिया के मध्य भेद पर निर्भर है। यह भेद मेरे कार्य में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संक्षिप्त में, यथार्थ का अर्थ संस्थाओं द्वारा आकारित स्थिर व्यवस्था है जबकि दुनिया का अर्थ उन सभी से है जो सामाजिक कर्त्ताओं के अनुभवों में अनपेक्षित रूप से प्रकट हो सकते हैं और जो यथार्थ पर प्रश्न उठा सकते हैं।

इस भेद का उद्देश्य यथार्थ के सामाजिक निर्माण के पैराडाईम द्वारा उठाये गये सवालों का जवाब देना है। यह समस्या इयान हैकलिंग की प्रसिद्ध पुस्तक द सोशल कन्सट्रक्शन आफ व्हाट? में उठायी गई। यदि सब कुछ निर्मित होता है, तो हम इन निर्माणों को कैसे, किस दृष्टिकोण से समझ सकते हैं? क्या विसरंचना, जो इस तथ्य से उभरती है कि तथ्य ''सामाजिक रूप से निर्मित होते हैं'', में हमेशा एक नया निर्माण आवश्यक नहीं है। क्यया यह दृष्टिकोण एक सामान्य सापेक्षवाद की तरफ नहीं ले जाता जो अंततः समाजशास्त्रियों के कार्यों को पूर्ण रूप से स्वेच्छित बना देगा? अतः मैं यथार्थ के सामाजिक निर्माण के विचार को उन तरीकों को पता लगा जिससे सामाजिक संस्थाएँ यथार्थ को आकार देती हैं, सचमुच गंभीरता से लेना चाहता था। दुनिया को यथार्थ से अलग कर के, हम एक संदर्भ बिन्दु पा सकते हैं जो हमें दुनिया के अनुभवों से यथार्थ के निर्माण में भेद करने की अनुमति देता है। अतः हमें स्कॉटिश एनलाइटनमेण्ट से, मूर से और कुछ तरीकों में शुल्ज से विरासत में मिले ''सामान्य ज्ञान'' के सिद्धान्तों को एक तरफ रख देना चाहिए।

क्रिया के इर्द गिर्द अनिश्चितता की शर्त से प्रारम्भ करना आवश्यक हैं। लेकिन, निस्सन्देह, हमारे अनुभव भी आंशिक रूप से यथार्थ में स्थित होते हैं। एक बहुत सरल उदाहरण हैं, जब आप बस का इंतजार करते हैं, आप प्रत्येक 15 मिनट में उसके आने की अपेक्षा करते हैं; यह अनुभव यथार्थ के प्रारूप में स्थित है। एक बस स्टाप है, एक बस कम्पनी है और एक नगरपालिका हैं जिसने बस स्टाप बनाया और समय सारणी तय की। यद्यपि, दुनिया से निकलने वाले कई प्रकार के अप्रत्याशित कारणों की वजह से शायद बस न आये। इसलिए, हमारे अधिकांश अनुभव भी दुनिया में स्थित हैं और अनिश्चितता की विशेषता लिए हुए हैं। इन अनुभवों को स्पष्ट रूप से बताना काफी कठिन है।

संस्थाओं द्वारा आकारित क्रिया के ढाँचे का वर्णन करना और एकत्रित/एकजुट करना आसान है क्योंकि वे लेखन और लेखांकन की कृतियों में पहले ही विषयाश्रित हैं। ऐसा वे हमेशा नहीं बल्कि आंशिक रूप से राज्य के कार्यों, जो दुनिया से निकालने वाले तत्वों का चयन करते हैं, द्वारा संपादित करके करते हैं। दुनिया का एकजुट नहीं किया जा सकता क्योंकि वह अनिश्चित, परिवर्तनशील और बहुल है। अतः हम इसका वर्णन कर सकते हैं कि सामाजिक कर्ता संस्थाओं द्वारा आकारित यथार्थ के प्रारूपों का सामना कैसे करते हैं, कैसे वे उनकी आलोचना करते हैं, कैसे वे उनके बारे में बहस करते हैं और नये प्रारूपों को विस्तृत करने के लिए कार्य करते हैं। काफी हद तक, आलोचना अनुभवों की इस शैली की व्याख्या करने में मदद करती है।

अतः मैं इस बात पर विचार करना चाहता था कि यथार्थ का निर्माण कैसे उन संस्थाओं से जुड़ा था जिनका उद्देश्य ऐसी अनिश्चितता को कम करने वाले सामाजिक उपकरणों की स्थापना करना है। एनिग्मास एण्ड प्लाट्स में, मैं यूरोपीय राष्ट्र–राज्यों के विशिष्ट प्रोजेक्ट, विशेष तौर पर बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उनके लोकतांत्रिक स्वरूप को कानून यानि की सुरक्षा उपकरणों और सामाजिक एवं प्राकृतिक विज्ञानों दोनों से प्रेरणा ले कर यथार्थ को सचमुच संरचित करने या कार्यवाही को पुर्वोनुमेय बनाने के प्रयासों के रूप में देखता हूं। यह विचार मोटे तौर पर फूको के बायोपोलिटिक्स के विचार से पैदा होता है।

मैं आपको एक और उदाहरण देता हूं जो मुझे बहुत पसन्द है। मेरी एक मित्र है जो 70 के दशक में हमारे युवाकाल में प्रतिबद्ध वामपंथी और नारीवादी थी। वह अन्य महिलाओं एवं अल्पसंख्यक समूह के पुरूषों के साथ एक अति–वामपंथी आंदोलन में थी। एक दिन लड़कियों ने एक दूसरे को देखा और महसूस किया कि वे, महिलाएँ, लिफाफों में पत्र भर रही थी, कॉफी बना रही थी इत्यादि। तो उन्होंने क्या किया? उन्होंने लड़कों को निष्कासित कर दिया, खुद को दफ्तर में बंद कर लिया और लगातार चौबीस घंटों तक एक दूसरे से बात की। और यह फ्राँस में नारीवाद के जन्म का महत्वपूर्ण क्षण था। इससे पूर्व, इनमें से अधिकांश के पास विश्लेषण, मनोविश्लेषण का अनुभव था इसलिए यह कुछ नहीं से प्रारम्भ नहीं हुआ। मैं सोचता हूं कि ये आंदोलन सीखने से समाजशास्त्र, मनोविश्लेषण, संघीय कार्यवाही के माध्यम से, यह किसी भी प्रकार की सीख हो सकती है, अनुभव को अधिग्रहण एवं साझा करने के प्रयासों से विकसित होते हैं।

एल.सी. और एम. जे. बी. : समाजशास्त्री कर्त्ताओं के अनुभवों का विवरण कैसे देते हैं?

एल. बी. : वस्तुपरकता प्राप्त करने के लिए, समाजशास्त्रियों द्वारा विवरण के उपकरणों को उन संदर्भ बिन्दु के साथ जोड़ना आवश्यक है, जो इस यथार्थ पर एक आलोचनात्मक दृष्टि की हमें अनुमति देते हैं। इसे विशिष्ट नैतिकता से नहीं जोड़ना चाहिए क्योंकि जैसा मैंने आन क्रिटिक में बताया कि इन संदर्भ बिन्दुओं को एक प्रकार की सार्वभौमिकता पर दावा करना चाहिए। आगे बढ़ने का एक तरीका कर्त्ताओं का आलोचना करते समय अनुगमन करना। ये कर्त्ता यथार्थवादी हैं। वे जिस स्थिति में कार्य कर रहे हैं का ज्ञान रखते हैं ताकि वे विभिन्न संदर्भों को अपने लाभ के लिए मोड़ सकें। ऐसा वे प्रत्येक में कुछ अलग कह कर करते हैं। अतः एक कर्मचारी अपने बॉस के प्रति विनम्र होने के साथ घर पर आलोचनात्मक हो सकता है।

>>

मुझे लगता है कि हमें सामाजिक निर्माण प्रक्रिया, जिन तरीकों से लोग स्वयं दुनिया का निर्माण करते हैं, का अनुगमन करना चाहिए। प्रारम्भ में, प्रत्येक अनुभव विशेष होता है। दुनिया में विलक्षणता के अलावा कुछ नहीं है। लोग फिर उन अनुभवों का साझा करते हैं, उन्हें समकक्ष बनाते हैं उन्हें एक भाषा देते हैं, उन्हें माँगों में परिवर्तित करते हैं और प्रस्तावों और दावों के साथ साथ यथार्थ में आशोधन और जिन प्रारूपों पर यथार्थ टिका है, के निर्माण की कोशिश करते हैं। योग्यताओं और आलोचना के संचालन और यथार्थ के विभिन्न तत्वों के निर्माण और विसंरचना के तरीको का यथासंभव निकटता से पीछा करना बड़ा रोचक है। आप उपन्यास पढ़ कर उनका पीछा करते हैं, आप साक्षात्कार का संचालन कर उनका पीछा करते हैं और आप असहमति का अवलोकन कर उनका पीछा करते हैं। समाजशास्त्रीय कार्य को निर्माण और पुनर्निर्माण का अवश्य अनुगमन करना चाहिए और यथार्थ के नये प्रारूपों का स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

एल.सी. और एम. जे. बी. : क्या आपको लगता है कि समाजशास्त्रियों को और आगे जाना चाहिए एवं कर्त्ताओं और संस्थाओं की कार्ययोजना से अलग होना चाहिए ताकि वे बाकी ढाँचे के विश्लेषण का प्रयास कर सकें।

एल. बी. : अब मुझे लगता है कि समाजशास्त्र जो पूर्ण रूप से व्यवहारिक है, का स्थितियों के विश्लेषण के आधार पर निर्माण करना संभव नहीं है। संयोग से, कर्त्ता स्वयं भी ऐसा नहीं करते हैं। वे जानते हैं कि उनका जीवित पर्यावरण उन निर्णयों पर निर्भर करता है जिन पर व्यक्ति के रूप में और विशेष रूप से संस्थाओं पर जो कहते हैं कि क्या है, जैसा वे स्थिति को आकाद दे रहे हैं, पर सीमित नियंत्रण है। लेकिन वे संस्थाओं द्वारा यथार्थ को निर्मित करने के तरीकों को धमकाने वाले विरोधाभासों को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। बस के मेरे पहले उदाहरण पर वापिस आते हैं, उदाहरण के लिए, वे बता सकते हैं कि यद्यपि बस को समय पर होना चाहिए, व्यवहार में ऐसा लगभग कभी नहीं होता है।

यथार्थ के प्रारूपों के निर्माण की आलोचना करने के लिए समाजशास्त्री एक विशेष नैतिक दावे पर भरोसा नहीं करते बल्कि उन सामाजिक कर्त्ताओं के कार्य पर भरोसा करते हैं जो उन पर सवाल उठाते हैं और जो आदर्श स्वरूपों को स्थापित करने का प्रयास करते हैं। लेकिन समाजशास्त्री यथार्थ के नये स्वरूपों को स्थापित करने के अपने प्रयासों में कर्त्ताओं के अनुसरण करने से आगे जाने का प्रयास करते हैं। उन्हें औपचारिकता उपकरण का प्रयोग करना चाहिए जो कर्ताओं के अनुभवों का स्थिरीकरण किस पर निर्भर करता है, इंगित करता है। उन्हें लगभग असंभव कार्यवाही करनी चाहिए जिसमें मानक निर्णय के साथ इस प्रकार के कार्य के विवरण में अधिक सूचना शामिल होनी चाहिए। मेरी पुस्तक ऑन क्रिटिक में, मैं वर्णन करता हूं कि इस तरह के कार्यों को समाजशास्त्र के इतिहास में विभिन्न तरीकों से किया गया हैं मेरी मान्यता 'प्राकल्पना' भी नहीं है क्योंकि इसे सिद्ध करना बहुत कठिन है। मैं मानता हूं कि यथार्थ के कार्यान्वयन के प्रोजेक्ट की राष्ट्र–राज्य ढाँचें के भीतर सफलता की संभावना बहुत कम है क्योंकि यह पूंजीवाद के विकास से संबंधित प्रवाह के अनुरूप है। ये प्रवाह एक क्षेत्र और आबादी के भीतर यथार्थ को एकरूप करने के प्रयासों को जोखिम में डालते हैं। कई अध्ययन, जोखिम में डालते हैं। कई अध्ययन, विशेष रूप से जेरार्ड नूरिएल की – जो सीमाओं के सुदृढ़ीकरण, पहचान पत्रों और भाषाई एकीकरण पर कार्य करते हैं – क्षेत्रों और आबादी को एक जुट करने के राज्य के प्रयासों का विश्लेषण करते हैं। फ्राँस में, जैक रिवेल, डोमिनिक जूलिया और मिशेल डी सेरटेऊ के उत्कृष्ट अध्ययन ने इस विषय पर 30 वर्ष पूर्व फोकस किया था। यह अध्ययन आंशिक रूप से क्षेत्रों और प्रवाह के मध्य डेलियूज के विरोध को सूचित करता है, चूंकि राष्ट्र–राज्य का प्रोजेक्ट पूंजीवाद की कार्यप्रणाली के कारण उत्पन्न प्रवाहों से निरन्तर अस्थिर रहता है। सामाजिक संदर्भों में जहां जासूसी उपन्यास पैदा हुए, यह उन सभी राष्ट्र–राज्यों के उपर है जो यथार्थ का निर्माण करने का लक्ष्य रखते हैं और सक्षम हैं।

एल.सी. और एम. जे. बी. : क्या एकजुट होने की नई पद्धतियाँ जो इस फ्रेमवर्क के निर्माण और अस्थिरता को समझने में सक्षम हैं, की तलाश में समाजशास्त्रियों को राष्ट्र–राज्य के संदर्भ से परे जाने की आवश्यकता है?

एल. बी. : हाँ, बिल्कुल। राष्ट्र–राज्य के गठन के संबंध में जासूसी उपन्यासों के इतिहास में मुझे क्यों दिलचस्पी है? मैं ऐसा क्यों कर पाया? मुझे लगता है कि मैं ऐसा इसलिए कर पाया क्योंकि यह फ्रेमवर्क आज बहुत संकट में है। उसी समय, हम इस फ्रेमवर्क को बाहर से देख सकते हैं, भले ही इसकी बाध्यता का वर्णन करना मुश्किल है। वैचारिक प्रयोग के साथ हम कम से कम राष्ट्रीय और राज्य फ्रेमवर्क के परे जा सकते हैं। मुझे लगता है कि आज समाजशास्त्रियों की मुख्य समस्या है कि विशेष रूप से फ्राँस में, लेकिन न केवल फ्राँस में, समाजशास्त्र की वास्तुकला उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में स्थापित राष्ट्र–राज्य पर व्यापक रूप से निर्भर है। यही कारण है कि हमारे पास एक अंग्रेजी समाजशास्त्र एक जर्मन समाजशास्त्र, एक फ्रेंच समाजशास्त्र है ..... यह देखते हुए कि हम इस फ्रेमवर्क में उल्लेखनीय गिरावट और परिवर्तन को अनुभव करते हैं, समाजशास्त्र के कई उपकरण अब कार्य नहीं करते हैं और यथार्थ के स्थिरीकरण और आलोचना के नये फ्रेमवर्क किस तरीके से राष्ट्रीय सीमाओं के बावजूद उभरते हैं, को समझने के लिए इनका पुनर्निर्माण अवश्य होना चाहिए। आप में से जो इस समाजशास्त्रीय शिल्प में प्रवेश कर रहे हैं, आप को यह करना होगा। ■

ल्यूक बोलतोंस्की से पत्र व्यवहार हेतु पता <boltansk@ehess.fr>
लौरा चारटेन से पत्र व्यवहार हेतु पता <laurachartain@gmail.com>
मेरीन जीन बाइसन से पत्र व्यवहार हेतु पता <boisson.marine@hotmail.fr>

> दक्षिण अफ्रीका में एक असाधारण संस्थान

सराह मोसोएत्सा के साथ साक्षात्कार

सराह मोसोएत्सा

रंगभेद की विरासत से उभरने के लिए दक्षिण अफ्रीकी विश्वविद्यालयों ने विशाल चुनौतियों का सामना किया है। हमने हाल के छात्र आंदोलन # रोहडस को गिरना चाहिए और # फीस कम होनी चाहिए – में देखा कि ये विरासतें कितनी गहन और जटिल हैं। लेकिन हमें दक्षिण अफ्रीकी उच्च शिक्षा में होने वाले अनूठे प्रयोगों से इन्कार नहीं करना चाहिए। इन सब में मानविकी और सामाजिक विज्ञान के राष्ट्रीय संस्थान (NIHSS) विशेष रूप से सफल नजर आती है। विषय क्षेत्र और महत्वाकांक्षा में NIHSS पूरे अफ्रीका में अनूठी है। उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग द्वारा निधिबद्ध, ये हमारों पी एच डी विद्यार्थियों को प्रायोजित कर, व्यापक जनता के लिए महत्वपूर्ण छात्रवृत्ति का प्रसार कर और अफ्रीका के अतीत और भविष्य के बारे में बातचीत को बढ़ावा दे कर विश्वविद्यालय में शिक्षकों की आने वाली पीढ़ी को तैयार करने में व्यस्त है। यह संस्थान वितवाटर स्प्रेंड विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की **प्रोफेसर सराह मोसोएत्सा** द्वारा निर्देशित और प्रेरित है। वे संयंत्र बंद होने का सामना करने में परिवार के अस्तित्व की रणनीतियों का वृत्तान्त प्रस्तुत करने वाली व्यापक रूप से सराही इटिंग फ्रॉम वन पॉट (2012) की लेखिका है। यहाँ, वितवाटरस्प्रेंड विश्वविद्यालय में उनकी सहकर्मी **मिशेल विलियम्स** NIHSS की उपलब्धियों और चुनौतियों पर उनका साक्षात्कार ले रही है।

एम. डब्ल्यू : हमें NIHSS की उत्पत्ति के बारे में बताइये।

एस. एम. : शायद मुझे ऐतिहासिक संदर्भ से प्रारम्भ करना चाहिए। 2010 में प्रोफेसर अरी सितास और डॉ. बोंगिनकोसी–जी मांदे, उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग ने हमारी उच्च शिक्षा प्रणाली में मानविकी और सामाजिहक विज्ञानों की स्थिति की जांच करने के लिए दो व्यक्तियों के कार्यदल का हिस्सा बनने के लिए सम्पर्क किया। मंत्री चिंतित थे कि मानविकी और सामाजिक विज्ञान STEM (विज्ञान, प्रोद्योगिकी, अभियांत्रिकी एवं गणित) विषयों के पक्ष में कर दी गई हैं। धारणा यह थी कि मानविकी और सामाजिक विज्ञान राष्ट्रीय बदलाव में अग्रणी नहीं थे। कार्यदल का व्यापक था और इसमें देश भर के शिक्षाविदों के साथ बातचीत पर आधारित तथ्य खोजने की मिशन भी सम्मिलित था। प्रोफेसर सितास इसके निर्देशक थे और मैंने उनके सहायक के रूप में कार्य किया।

मंत्रालिक कार्यदल के रूप में हमनें सभी विश्वविद्यालयों का दौरान किया और शिक्षाविदों, अधिष्ठाताओं, संकाय एवं विभागों के

>>

अध्यक्षों से मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के बारे में बातचीत की। हमें जो पता चला वह काफी खुलासा करने वाला था। यद्यपि प्राकृतिक विज्ञान महत्वपूर्ण है, उनका विकास मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के पर हुआ है। यह स्पष्ट हो गया था कि उच्च शिक्षा दो भागों में बँटी थी। लेकिन हमनें मानवीकि और सामाजिक विज्ञानों की सफलता की दिलचस्प कहानियाँ भी जानी।

एम. डब्ल्यू : तो यह इस संस्थान की उत्पत्ति थी?

एस. एम. : हाँ, कार्यदल ने चुनौतियों और अधिक महत्वपूर्ण रूप से मानविकी और समाज विज्ञान को कैसे और नई ऊर्जा मिल सकती है, को रेखांकित करने वाली रिपोर्ट ''चार्टर फॉर हयूमेनिटिस एण्ड सोशल साइन्सेज'' का तैयार की। चार्टर ने मानविकी और सामाजिक विज्ञान का राष्ट्रीय संस्थान (NIHSS) के गठन की अनुशंसा की। मंत्री ने चार्टर को स्वीकार किया और हमनें तुरन्त ही NIHSS के गठन के कार्य को प्रारम्भ किया जो औपचारिक रूप से दिसम्बर 2013 में गठित हो गया। बोर्ड की नियुक्ति के बाद, मुझे मई 2014 में इसका CEO बनने को कहा। तो फिर बोर्ड के साथ, मैंने मुख्य कार्यक्रम पर निर्णय कर, संस्थान की योजना बनानी शुरू कर दी।

एम. डब्ल्यू : मुझे पता है कि NIHSS के पास विविध कार्यक्रम है। क्या आप हमें उनके बारे में बता सकती हैं?

एस. एम. : यहाँ सात मुख्य प्रोग्राम हैं। मैं डाक्टोरल छात्रवृत्ति प्रोग्राम जो कि संस्थान का मुख्य कार्यक्रम है, से शुरू करती हूं। प्रत्येक वर्ष हम पी. एच. डी. में पंजीकृत दक्षिण अफ्रीकी नागरिकों के लिए 150 त्रि–वर्षीय छात्रवृत्तियाँ प्रदान करते हैं। छात्रवृत्ति प्रदान करते समय हम सभी दक्षिण अफ्रीकी सरकारी विश्वविद्यालयों के अधिष्ठाताओं के साथ निकटता से कार्य करते हैं। अधिष्ठाता हमें उन छात्रों की सूची दे कर जिन्हें वे छात्रवृत्ति दिलवाना चाहते हैं (अपने आंतरिक अधिनिर्णयन प्रक्रिया पर आधारित) और अपने मानदण्डों को काम में लेते हुए NIHSS अधिष्ठाताओं द्वारा दी गई सूची में से छात्रों को फण्ड करती है। यह एक पारदर्शी प्रक्रिया है जो सभी विश्वविद्यालयों में प्रस्तावों की वार्षिक कॉल से प्रारम्भ होती है। 80% प्राप्तकर्त्ता अश्वेत दक्षिण अफ्रीकी और 60% महिलाएँ है। 2016 के अंत तक, 451 पी. एच. डी. छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गई हैं। इसके अतिरिक्त, अफ्रीकी महाद्वीप से गैर–दक्षिणी अफ्रीकी नागरिकों के लिए 111 छात्रवृत्तियाँ हैं।

एम. डब्ल्यू : यह बड़ा रोचक है। तो आप अफ्रीका के अन्य हिस्सों से भी छात्रों को फण्ड कर रहे हैं?

एस. एम. : हाँ, यह देख कर कि दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप के चारों तरफ से काफी पी. एच. डी. छात्रों को स्वीकार करता हैं, हमारे पास एक विशेष अफ्रीकन पाथवेस प्रोग्राम (APP) है। APP के माध्यम से हम प्रति वर्ष 37 त्रि–वर्षीय छात्रवृत्तियाँ प्रदान करते हैं। इसके पीछे विचार NIHSS को बढ़ाने और उर्जावान बनाने के लिए साथ काम करने के साथ बाकी महाद्वीप की तरफ प्रेरणा के लिए देखना है। विशेष रूप से हम ऐतिहासिक विरासत से आगे जाना चाहते हैं और हमारे महाद्वीपीय तद्रूप् के साथ अधिक सहकार्य प्रोत्साहित करना चाहते हैं।

एम. डब्ल्यू : क्या आप इस सहकार्य के बारे में अधिक बता सकती हैं?

एस. एम. : एक युवा संस्थान के रूप में हमें, महाद्वीप पर अन्य इकाइयों, जिनमें से अधिकांश ने NIHSS जैसे के साथ कभी प्रयोग नहीं किया था, के साथ कार्य करने की आवश्यकता थी। अतः हमने काउंसिल फॉर द डेवलपमेण्ट ऑफ सोशल साईन्स रिसर्च इन अफ्रीका (CODESRIA) को विद्यार्थियों के चयन और महाद्वीप पर सहकार्य को विकसित करने के लिए सहयोगी के रूप में चिन्हित किया। हमारी साझेदारी फलफूल रही है।

NIHSS ने अफ्रीकन पाथवेज मोबिलिटी को भी शुरू किया। यह यूरोपीय इरासमुस मुण्डुस मॉडल पर आधारित है लेकिन दक्षिण अफ्रीकी अंदाज में। यह पहल शिक्षकों और विद्यार्थियों को महाद्वीप पर नये विचार और शोध के क्षेत्रों का अन्वेषण करने के लिए महाद्वीप को खोजने के लिए प्रेरित करता है। हम नये सम्पर्क विकसित करने, शोध नेटवर्क स्थापित करने के अलावा शिक्षण और शोध कार्य में सहकार्य विकसित करने के लिए शोध यात्राओं को फण्ड करते हैं।

एम. डब्ल्यू : चलिए दक्षिण अफ्रीका की तरफ मुड़ते हैं, क्या इतने सारे पी. एच. डी. विद्यार्थी मिलने में परेशानी आई?

एस. एम. : यह एक अच्छा प्रश्न है। सचमुच, हमारे पहले दो वर्षों (2013–15) में हमें यह दिखाना पड़ा कि फण्ड करने के लिए विद्यार्थी थे और हम वास्तव में उन्हें निधीयन प्रक्रिया में ला सकते हैं। अब हमारा ध्यान हमारे द्वारा प्रायोजित विद्यार्थियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना और यह देखना कि वे वास्तव में अपनी डिग्री पूरी करें, पर केन्द्रित है। दक्षिण अफ्रीका में, हमारे अंतराष्ट्रीय प्रोग्रामों, जहाँ सिर्फ 50% ही पी एच डी प्राप्त करते हैं, के समान ही संघर्षण दर पाई जाती है। अतः हमने बेहतर प्रवाह क्षमता को सुनिश्तिय करने के लिए मेण्टरशिप प्रोग्राम विकसित किया है।

एम. डब्ल्यू : यह काफी महत्वपूर्ण लगता है, क्या आप हमें इस मेण्टरशिप प्रोग्राम के बारे में अधिक बता सकती हैं?

एस. एम. : विभिन्न प्रदेशों में विद्यार्थियों के साथ कार्य करने के लिए 21 वर्तमान और सेवानिवृत्त प्रोफेसरों को नियुक्त किया गया है। उदाहरण के लिए, पश्चिम केप में हमने दो मेण्टरस के साथ एक प्रादेशिक डाक्टोरल स्कूल स्थापित किया है। मेण्टरस नियमित रूप से विद्यार्थियों को परामर्श देते हैं और सामुदायिक भावना उत्पन्न करते हैं। वे ऐसी कार्यशालाएँ जो व्यापक और समग्र होती हैं और पद्धतिशास्त्र, सिद्धान्त एवं लेखन के मुद्दों को समाविष्ट करती हैं, के पेशकश करते हैं। मेण्डरस एंकर हैं और वे अपने अनुभवों की धन सम्पदा को साझा करते हैं, लेकिन विद्यार्थी एक दूसरे से भी सीखते हैं हम सहकर्मी–शिक्षण को महत्वपूर्ण मानते हैं।

पी एच डी करना एक तन्हा प्रक्रिया है, यह प्रोग्राम एक वर्ग का निर्माण करने और विद्यार्थियों में एक जुटता का भाव पैदा करने में मदद करता है। मेण्टरस अविश्वसनीय रूप से उदार हैं और हमारे विश्वविद्यालयों की रूपांतरण प्रक्रिया में अपना काफी योगदान दे रहे हैं। हम एमेरिटी प्रोफेसरों के कौशल और अनुभवों को प्राप्त करने में सफल हुए हैं जिससे उन्हें भी रूपांतरण की प्रक्रिया में भागीदार बनने का अवसर प्राप्त हुआ है।

एम. डब्ल्यू : क्या NIHSS पी एच डी विद्यार्थियों को समर्थन के अलावा भी शोध को प्रोत्साहित करता है?

एस. एम. : हाँ, निश्चित ही, हमारे पास केटेलिक रिसर्च प्रोग्राम है जो नवाचारी और अग्रणी शोध को फण्ड करता है और शिक्षाविदों को पुराने शोध प्रश्नों/प्रोजेक्टों के आगे जा कर सोचने के नये तरीकें, नई पद्धतियाँ और नये नेटवर्क को खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है। ऐसे प्रोजेक्टस को शायद पारंपरिक फण्डरस से फण्डिंग न मिले जबकि NIHSS इस तरह के नवीन शोध को समर्थन देता

>>

है। हम जानते हैं कि मानवीकि और सामाजिक विज्ञानों में विद्वान पुस्तकें लिखते हैं, लेकिन मुख्यधाराई फण्डरस पत्रिका प्रोजेक्ट को पसंद करते हैं। हमारे केटेलिक्टिक प्रोग्राम के द्वारा हम आनर्स और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के शोध को भी सहायता प्रदान करते हैं।

एम. डब्ल्यू : ऐसा शोध, जो ''जरा हट के'' होता है, को प्रकाशन केन्द्र मिलने में परेशानी हो सकती है। क्या आप इस विषय में भी उनकी मदद कर पाते है?

एस. एम. : जैसा मैंने कहा, हम ऐसे प्रोजेक्ट को फण्ड, प्रारम्भ और सहयोग करते हैं जो केवल शोध और पी एच डी छात्रवृत्ति के बारे में नहीं हैं। हमें पता है कि कुछ महान कार्य इसलिए नहीं प्रकाशित हो पाते क्योंकि प्रकाशक उन्हें उम्दा तो मानते हैं परन्तु वित्तीय रूप से व्यवहार्य नहीं मानते। संस्थान प्रकाशकों को क्या प्रकाशित करना चाहिए, नहीं बताता है लेकिन हम हमारे उद्देश्य के साथ मेल खाने वाली पांडुलिपियों के प्रकाशन को समर्थन देते हैं। उन्हें प्रकाशकों की कठोर सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया से फिर भी गुजरना पड़ता है लेकिन हम या पुस्तकें खरीदने की गारंटी दे कर या प्रकाशन प्रक्रिया को सीधा फण्ड कर के प्रकाशन की लागत को आर्थिक रूप से सहायता देते हैं। हम संगोष्ठियों के फलस्वरूप निकलने वाले प्रकाशनों को भी फण्ड करते हैं।

एक पहल जिस पर मुझे काफी गर्व है, वह है मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए राष्ट्रीय पुस्तक एवं रचनात्मक पुरूस्कार, जिसके पहले पुरूस्कार मार्च 2016 में दिये गये। हमने विभिन्न प्रकार की कृतियों : सर्वश्रेष्ठ कथेतर साहित्य और उपन्यास, संपादित खण्डों, डिजीटल मीडियाके साथ साथ कला में छः पुरूस्कार प्रदान किये। ये पुरूस्कार सिर्फ दक्षिण अफ्रीकी विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों के लिए खुले हैं। प्रथम पुरूस्कार 2013 और 2014 में प्रकाशित पुस्तकों के लिए थे और हमें जबरदस्त संख्या में प्रस्तुतियाँ आई जिन्होंने दर्शाया कि हमारे मानविकी और सामाजिक विज्ञान वास्तव में समृद्ध हो रहे हैं। मार्च 2017 में पुरूस्कार का अगला समुच्चय होगा।

एम. डब्ल्यू : दक्षिण अफ्रीका में शिक्षाविदों के जन मामलों में संलग्न होने का लम्बा इतिहास रहा है। क्या आपके पास सार्वजनिक क्षेत्र में अपने विचारों और शोध को ले जाने के लिए विद्वानों को प्रोत्साहित करने की कोई योजना है?

एस. एम. : दरअसल, हमारे पास एक हयूमेनिटीस हब प्रोग्राम है जो सामान्य शैक्षणिक जगहों के बाहर शोध को प्रायोजित करता है और ज्ञान के निर्माण के लिए गैर–पारंपरिक स्थानों को विकसित करता है। हम इसे इतिहास से समृद्ध लिलियसलीफ फार्म, जो 1960 के दशक में भूमिगत मुक्ति आंदोलन का स्थान रहा है और जहाँ रिवोनिया आरोपी पकड़े गये थे, पर इसे संचालित कर रहे हैं। यह एक दुखद यथार्थ है कि कई शिक्षाविदों और विद्यार्थियों को इस जगह के बारे में पता नहीं है। यह प्रोजेक्ट ऐसी विरासत स्थलों को ज्ञान के खजाने और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में अलग ढंग से सोचने के तरीकों में परिवर्तित करता है। इस के भाग के रूप में, लिलियसलीफ फार्म स्वतन्त्रता चार्टर पर केन्द्रित एक वार्तालाप की मेजबानी करता जो इतिहास पर विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के लिए मंच और शिक्षाविदों, पेशेवरों और अन्य के मध्य वार्तालाप को प्रोत्साहित करता है। जैसा आप कहते हैं, हम स्वतन्त्रता आंदोलन से जानते हैं कि शिक्षाविदों और सामान्य विद्वजनों के संलग्न होने से महान विचार निकल सकते हैं।

एम. डब्ल्यू : क्या आप सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसे उपक्रम के कुछ उदाहरण दे सकती हैं?

एस. एम. : हमारे ''ळयूमेनिटीस हबस'' का लक्ष्य स्कूली विद्यार्थियों का मानविकी और सामाजिक विज्ञानों में रूचि पैदा करना है। उदाहरण के लिए, हाई स्कूल के बच्चों को बस द्वारा लिलियस लीफ फार्म ले जाया गया ताकि वे वहाँ प्रदर्शित इतिहास को देख सकें। लेकिन हर कोई लिलियसलीफ फार्म नहीं आ सकता है, अतः हमने ''लघु लिलियस लीफ'' को दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय, वेण्डा विश्वविद्यालय, लिमपोपो विश्वविद्यालय जैसी अन्य साइटस पर ले जाने के लिए एक गतिशील प्रदर्शनी विकसित की है।

यह हमारे साथ साथ बाकी दुनिया को मानविकी और सामाजिहक विज्ञानों की कहानी बताने का अनूठा तरीका है। यह इतिहास के चारों ओर, हमारे बारे में और स्वतन्त्रता चार्टर के बारे में भिन्न संवाद की अनुमति देता है। हमने सुझाव पेटी के साथ स्वतन्त्रता चार्टर मेज विकसित की है। हम लोगों से दो चीजें पूछते हैं : i) यदि आपको स्वतन्त्रता चार्टर पुनः लिखना हो तो आप इसमें क्या सम्मिलित करेंगे? और ii) स्वतन्त्रता चार्टर का कौन सी धारा आपको सबसे प्रिय है? लोग अदभुत बातें लिख रहे हैं। और बेरोजगारी, गरीबी और इत्यादि के चारों तरफ कई मुद्दें उभर रहे हैं। लिलियसलीफ एक प्रायोगिक परियोजना थी और हम अन्य स्थानों पर इसी तरह के ''हयूमेनिटीस हब्स'' प्रारम्भ करने की योजना बना रहे हैं।

एम. डब्ल्यू : क्या आपके संस्थान के कोई अंतराष्ट्रीय प्रोग्राम हैं?

एस. एम. : हमारे साउथ–साउथ नेटवर्क के माध्यम से हमने एक इंडियन काउंसिल फॉर सोशल साइनसेंस रिसर्च (ICSSR) की भागीदारी में एक भारत–दक्षिण अफ्रीका शोध प्रोगाम की पहल की है और इसे वित्तीय सहायता दी है। हम ब्राजील और अन्य देशों के साथ इसी तरह की शोध भागीदारी के अवसर तलाश रहे हैं।

हम BRICS - पाँच मुख्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अीका का संघ के लिए दक्षिण अफ्रीकी थिंक टैंक का भी संयोजन करते हैं। इसमें भिन्न प्रभाग है : व्यापार, शिक्षा, नागरिक समाज – और हम शैक्षणिक प्रभाग, जिसमें पाँच देशों के शैक्षणिक फोरम के साथ संयोजन सम्मिलित है जिसके बाद वार्षिक BRICS काउंसिल एवं समिट होता है, का संयोजन करते हैं। इस वर्ष शैक्षणिक फोरम चीन में हो रहा है और 2018 में दक्षिण अफ्रीका इसकी मेजबानी करेगा। यह पहल नीति कार्य और सरकारों को परामर्श देने पर केन्द्रित है। शैक्षणिक फोरम की मुख्य थीम भिन्न होती हैं (उदाहरण के लिए, सामाजिक सुरक्षा स्वास्थ्य, शिक्षा, उर्जा) और मेजबान देश द्वारा तय की जाती हैं। फोरम ब्रिक्स समिट को सूचना देती हैं एवं पाँच देशों के अध्यक्षों को नीति परामर्श प्रदान करती हैं। हम इसे एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में देखते हैं जो शैक्षणिक जगत और नीति निर्माण के मध्य एक निकट का निर्माण करती है।

एम. डब्ल्यू : आपने इतने कम समय में इतना कुछ प्राप्त कर लिया है, यह मुझे विस्मयकारी लगता है। आपकी मुख्य चुनौतियाँ क्या रहीं हैं?

एस. एम. : मेरे विचार से हम काफी दूर आ गये हैं। संस्थान केवल तीन वर्ष पुरानी है और हमने अब तक काफी कुछ कर लिया है। इसे उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग (DHET) द्वारा पूर्ण रूप से फण्ड किया जाता है लेकिन सरकारी विभाग में कार्य करना काफी बड़ी चुनौती है। पूरे समय हम DHET के मुख्य लोगों पर निर्भर थे जो नौकरशाही में चीजों को निकलवाते थे। उनके समर्थन के बिना हक कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते। यह NIHSS बोर्ड के साथ निकटता से कार्य कर एक बहुत सामूहिक प्रक्रिया भी रही है।

>>

प्रारम्भ में, कुछ शिक्षाविदों और विश्वविद्यालयों से हमें विरोध का सामना करना पड़ा जिन्हें डर था कि हम निवर्तमान इकाइयों को बदल देंगे, विश्वविद्यालय से पैसों को कर देंगे और यह कि यह मानविकी और सामाजिक विज्ञानों पर उच्च शिक्षा मंत्री को नियंत्रण मिल जायेगा। इन सभी चिंताओं को ..... और सम्बोधित किया गया और हमारे कई प्रारंभिक आलोचक अब हमारे सबसे बड़े समर्थक हैं। NIHSS एक वैधानिक इकाई है जो एक स्वतन्त्र बोर्ड के प्रति उत्तरदायी है। हम बिल्कुल स्पष्ट थे कि संस्थान चालू इकाइयों से प्रतिस्पर्धा नहीं करेगा बल्कि यह उनके कार्य को ..... करेगा।

कुछ दैनिक चुनौतियाँ हमारे प्रोग्राम की सरल कार्यप्रणाली से सम्बन्धित हैं। हम अभी भी आन्तरिक व्यवस्थाएँ स्थापित कर रहे हैं। जैसे, हम मेण्टरस और विद्यार्थियों के मध्य संचार को सुलभ बनाने वाले मेण्टरशिप प्रोग्राम के लिए एक नये ऐप से प्रयोग कर रहे हैं। हमने एक युवा संस्थान के रूप में बहुत कुछ सीखा है। मुझे लगता है कि स्थापित करने और व्यवस्थाओं को स्थापित करने में तीन से पाँच वर्ष का समय लगता है। हमने जो कुछ प्राप्त किया है उससे हम बहुत प्रसन्न हैं।

एम. डब्ल्यू : NIHSS का भविष्य क्या है?

एस. एम. : मैं सोचती हूं कि यह विस्मयकारी है कि इतने कम समय में हमने NIHSS को यथार्थ बना दिया है। मंत्री इस का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं लेकिन वे अकेले नहीं हैं। मंत्री के समर्थन ने संस्थान को समृद्ध बनाने में मदद की है। वे वास्तव में हमारे प्रलेख पढ़ते हैं, बातचीत करते हैं, हमें चुनौती देते हैं और समर्थन देते हैं। यह NIHSS के लिए बड़ा वरदान है। कुछ लोग सोच रहे हैं कि यदि मंत्री हट जायेंगे तो क्या होगा। राजनीति सभी जगह अस्थिर होती है और यह एक चिंता है लेकिन हम अपने आप को स्थापित करने के लिए मेहनत कर रहे हैं। और अच्छा कार्य करके हम अपने चिरस्थाई महत्व को साबित करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे पास 2019/20 तक निश्चित फण्डिंग है। इस समय के दौरान हम कम से कम 300 डोक्टोरल विद्यार्थियों को उपाधि देने की, कम से कम चार अवार्ड चक्र की मेजबानी करने की और कम से कम 40 पुस्तकों के प्रकाशन को वित्तीय सहायता देने की उम्मीद करते हैं। यदि यह पूरा हो जाता है, तो हमने अपना कार्य कर लिया है। इतने कम समय में हम किसी अन्य इकाई से अधिक कार्य कर चुकेंगे।

दक्षिण अफ्रीका में मानवीकि और सामाजिक विज्ञानों ने कैसे इस संस्थान को स्वीकारा से मैं खुश और उत्साहित हूं। प्रस्तावों की समीक्षा करने, निर्णायक के रूप में कार्य करने, डाक्टोरल विद्यार्थियों को मेण्टर करने इत्यादि के हमारे कई अनुरोधों के लिए शिक्षाविदों की प्रतिक्रियाओं से सुखद रूप से आश्चर्यचकित हूं। एक भी व्यक्ति ने हमें मना नहीं किया। शैक्षणिक समुदाय हमें एक मुख्य ..... के रूप में देखता है। ■

सराह मोसोएत्सा से पत्र व्यवहार हेतु पता <mosoetsa@nihss.ac.za>
मिशेल विलियम्स से पत्र व्यवहार हेतु पता <Michelle.Williams@wits.ac.za>

> अफ्रीकी–अमरीकी महिलाओं का प्रतिनिधित्व

पेट्रिशिया हिल कोलिन्स के साथ साक्षात्कार

पेट्रिशिया हिला कोलिन्स मेरीलैंड विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर तथा अमेरिकी समाजशास्त्रीय संघ की पूर्वी अध्यक्ष है। एक प्रमुख अमेरिकी सामाजिक विचारक जो 'बहु–उत्पीड़न', 'अंतरानुभगिता' और 'भीतर में बाहरी व्यक्ति' से सम्बद्ध विचारों को पूर्व में 'ब्लैक फेमिनिस्ट थॉट' (1990) में, जो अब क्लासिक कार्य माना जाता है और बाद में, 'फाइटिंग वर्ड्स (1998)' तथा 'ब्लैक सेक्सुअल पॉलिटिक्स (2006)' में विकसित करने के लिए जानी जाती हैं। यहां हम **लेबीनोत कुनुशेवी,** जो प्रिसटीना विश्वविद्यालय, कोसोवों में स्नातोत्तर की एक छात्र है द्वारा लिये गये एक लंबे साक्षात्कार के कुछ अंश प्रस्तुत कर रहे हैं।

पेट्रिशिया हिल कोलिन्स

एल. के. : आपकी दृष्टि से सामाजिक असमानता के अध्ययन में अनुसंधान करने के लिए सबसे उपयुक्त सैद्धांतिक और आनुभाविक पद्धतिशास्त्र कौन–सा है?

पी. एच. सी. : मेरे लिए, मैं 'प्रभावी विमर्श' से अध्ययन प्रारम्भ करती हूं तथा पश्चिम ं प्रभावी विमर्श (डामीनेंट डिस्कोंस) में ज्ञान परियोजना के एक समूह को सम्मिलित किया जाता है जो स्पष्ट रूप से विचारों एवं प्रथाओं के प्रभुत्व के समुच्चय को एक साथ निर्मित करता है। यह प्रभावी विमर्श बहस की स्थितियों/संदर्भों को निर्धारित करता है–किन प्रश्नों को महत्वपूर्ण माना जाता है, किन्हें साक्ष्य के रूप में स्वीकारना है, और साथ ही किन प्रश्नों को गौण मानकर उपेक्षा की जा सकती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रभावी विमर्श प्रजाति, वर्ग, जेंडर, यौनिकता एवं शक्ति की प्रणाली के रूप में राष्ट्र इत्यादि की अन्तः सम्बद्धता से आकार ग्रहण करता है। अपने अध्ययन में मैंने पाया कि किस प्रकार नस्लवाद, यौनवाद, वर्ग शोषण एवं विषम लैंगिकता विभिन्न सामाजिक समूहों के जीवंत अनुभवों को आकार देने का कार्य करते हैं। ब्लैक प्रजाति की महिलाओं के अनुभव शक्ति एवं ज्ञान के इन व्यापक सवालों में प्रवेश के बिंदु थे परंतु अफ्रीकी–अमेरिकी महिलाओं के अनुभव समापन बिंदु नहीं है। मैंने उन अफ्रीकी–अमेरिकी महिलाओं से संपर्क किया जो सामाजिक समस्याओं के समुच्चय का सामना कर रही है जो शक्ति की बहु–प्रणालियों की अन्तः सम्बद्धता से निर्मित हैं। उदाहरण के लिए हिंसा को ही ले लो। अपने पुरूष मित्रों, पतियों एवं पिताओं के द्वारा ब्लैक प्रजाति की महिलाओं के विरूद्ध लैंगिक घरेलू हिंसा ब्लैक लोगों के विरूद्ध राज्य द्वारा स्वीकृत नस्लीय हिंसा के संदर्भ में उत्पन्न होती है जो दासता और नस्लीय भेदभाव की विरासत का हिस्सा है। हिंसा के ये दोनों स्वरूप एक–दूसरे से अर्थ ग्रहण करते हैं–ये दोनों अन्तः सम्बद्ध हैं। ब्लैक नारीवाद पर मेरा यह अध्ययन बताता है कि कैसे ब्लैक महिलाओं–एंजेला डेविस, जून जार्डल एवं किम्ब्रले रेनशॉ–ने बुद्धिजीवियों एवं कार्यकर्त्ताओं के रूप में लगातार यह बताया कि ब्लैक महिलाओं ने जिन समस्याओं का सामना किया उन्हें केवल शोषण की एक प्रणाली के रूप में देखकर कभी भी हल नहीं किया जा सकता। अफ्रीकी अमेरिकी महिलाओं के अनुभवों के विशेषताओं

> >

को प्रयुक्त करके ब्लैक नारीवादी बुद्धिजीवियों ने दमन के समकालीन प्रश्नों को उठाया और जिसने बाद में विद्वता एवं राजनीति के जीवंत क्षेत्रों को खोल दिया जिसे अब हम अन्तरानुभागिता/अन्तःसम्बद्धता की संज्ञा देते हैं।

शक्ति की प्रणालियों का संयोजन जो एक दिये हुए समाज के प्रभावी विमर्श को आकार देता है, भिन्न–भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए शक्ति की प्रणालियों–जैसे प्रजाति, वर्ग, जेंडर, यौनिकता तथा नागरिकता (राष्ट्रीयता)–की अन्तः सम्बद्धता जो मैंने अमेरिका में देखा, अमेरिका के विशिष्ट इतिहास को दर्शाती है। मेरा मतलब है कि एक बिल्कुल नया राष्ट्र जैसे आपका अपना है जो अपने विभिन्न अंतरानुभागों उदाहरण के लिए नृवंशीयता, वर्ग एवं धर्म के साथ अभी अस्तित्व में आ रहा है उसका कोसोवों के इतिहास के संदर्भ में विशेष महत्व है। यह याद रखना जरूरी है कि विभिन्न इतिहासों के संदर्भ जो शक्ति संबंधों के विभिन्न समूहों को दर्शाता है, अभिजन समूह अति महत्वपूर्ण प्रभावी विमर्श के साथ–साथ ज्ञान, जो परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है, के नियमों को भी नियंत्रित करता है। समूह एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न हो सकते हैं परंतु सामाजिक असमानता के शक्ति संबंधों का मतलब है कि हर किसी के पास प्रभावी विमर्श को आकार देने के क्षमता नहीं होती यद्यपि समाज में प्रत्येक व्यक्ति कुछ मात्रा में इससे प्रभावित होता है।

सबसे उपयुक्त सैद्धांतिक एवं आनुभविक पद्धतिशास्त्र का सवाल यह दर्शाता है कि सामान्यतः ज्ञान उत्पादन के शक्ति संबंधों में कोई कहाँ स्थित है, मैंने सैद्धांतिक कार्य में संलग्न रहने को चुना, यह तर्क देते हुए कि जब आप ज्ञान मीमांसा को मजबूती देने वाली विद्वता पर ध्यान देते हैं तब आप मन की शक्ति के निकट आ जाते हैं। मेरा सैद्धांतिक कार्य शक्ति संबंधों के अंतः सम्बद्धता की विभिन्न आयामों से जांच करता है, इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए कि वे कैसे ज्ञान को आकार देते हैं। इस संदर्भ में सामाजिक असमानता का परीक्षण करने के लिए अंतःसम्बद्धता का ढाँचा अकादमिक बहस और साथ ही राजनीति में भी एक उपयोगी विश्लेषणात्मक उपकरण साबित हुआ है।

एल. के. : महिलाओं के उत्पीड़न एवं मुक्ति में मीडिया प्रतिनिधित्व की क्या भूमिका है और ये किस प्रकार सार्वजनिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता को प्रभावित करता है?

पी. एच. सी. : सभी महिलाएं मीडिया के प्रतिनिधित्व को अनुभव करती हैं जो 'कैसी महिला होनी चाहिए' के विषय में सामाजिक आलेख (Social script) प्रस्तुत करता है। क्योंकि नाटकीय ढंग से समाज एक–दूसरे से भिन्न होते हैं, अदर्श महिलाओं की छवि भी उसी के अनुरूप भिन्न होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और समन बहुसांस्कृतिक समाजों में महिलाओं का मीडिया में प्रतिनिधित्व प्रजाति, लैंगिक अस्मिता, नृवंशीयता, वर्ग एवं नागरिक प्रस्थिति के विभिन्न संयोजनों पर निर्भर करती है। श्वेत मध्यवर्गीय विषमलैंगिक महिला को अमेरिका की नागरिकता धारण करने पर उसे अन्य समूहों की महिलाओं के लिए एक आदर्श महिला के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह एक आदर्श, एक प्रतिनिधित्व, एक सामाजिक रचना है न कि व्यक्तियों की वास्तविक श्रेणी/परंपरागत रूप से घर में रहने वाली मां की छवि को एक आदर्श महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया था, परंतु हाल ही में इस छवि को नवीनीकरण करते हुए उच्च–अधिकार संपन्न नौकरियों में कार्य कर रही महिलाओं को भी इसमें शामिल किया गया। एक बहुसांस्कृतिक समाज के अंदर महिलाओं के अन्य निकट के समूह उस आदर्श से मिलने आए, अधिक पक्षपातपूर्ण ढंग से उन्हें परखा गया।

ब्लैक नारीवादी परिप्रेक्ष्य में, मैंने देखा कि कैसे अफ्रीकी–अमेरिकी महिलाएं चार प्रमुख रूढ़ियों का सामना करती हैं : (1) खच्चर, एक महिला जो एक पशु की भाँति बिना शिकायत किये काम करती है, (2) बदनाम स्त्री (Jezebel), एक अत्यधिक कामुक महिला जिसे अक्सर एक वैश्या के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, (3) मां (मैमी), ब्लैक महिला की घरेलू श्रमिक की भूमिका जिसकी वफादारी अपने नियोक्ता के प्रति संदेह से परे हैं तथा (4) ब्लैक महिला, एक शिक्षित ब्लैक महिला जिसने करियर के लिए अपना पारिवारिक जीवन छोड़ दिया। परंतु इनका प्रतिनिधित्व केवल सौम्य रूढ़िया ही नहीं करती अपितु नस्लवाल, (यौनिकता), लैंगिक भेदभाव, वर्ग शोषण से सम्बद्ध अतीत की प्रथाएं भी करती हैं। बजाय इसके कि लोग ब्लैक महिलाओं को कैसे देखते और व्यवहार करने की आशा करते हैं मीडिया इनसे संबंधित सामाजिक आलेख उपलब्ध करवाता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसी सामाजिक आलेख को ब्लैक महिलाएं अन्तरीकृत करने की अपेक्षा करती हैं।

नारीवाद एवं व्यापक रूप से महिला अधिकारों से सम्बद्ध आंदोलनों का उद्देश्य इन दोनों के प्रतिनिधित्व एवं शक्ति संबंधों, जिसे वे प्रस्तुत करते हैं, को बाधित करना था। जब महिलाएं स्वयं को निष्क्रिय गृहणियों या खच्चरों के रूप में प्रस्तुत करने से इंकार करती हैं, जिसे कम आय पर रखा जाता है और जिसकी नौकरी सुरक्षित नहीं होती या प्रजाति एवं नृवंशीयता के परे पुरूष एवं महिला बॉस के वफादार नौकर के रूप में होती है, वे अत्यधिक बदली हुई समझ के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करती हैं। इस अर्थ में, विचार और सक्रियता परस्पर घनिष्ठता से सम्बद्ध होते हैं। बदला हुआ प्रतिनिधित्व व्यवहार को बदल सकता है और परिणामस्वरूप बदला हुआ व्यवहार सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं के विषय में विभिन्न मान्यताओं को प्रोत्साहित करता है। ■

पेट्रिशिया हिल कोलिन्स से पत्र व्यवहार हेतु पता <collinph@umd.edu>
लेबीनोत कुनुशेवी से पत्र व्यवहार हेतु पता <labinotkunushevci@gmail.com>

> ली कुआन यू के बाद

विनीता सिन्हा, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, सिंगापुर, प्रकाशन के लिए ISA के उपाध्यक्ष 2014 से 2018 तक

गुआनिन मंदिर के चीनी भक्त पडोस के श्री कृष्णन मंदिर पर अगरबत्तियाँ चढ़ाते हुए। डैनियल गोह द्वारा फोटो।

स्वतंत्र सिंगापुर के प्रथम प्रधानमंत्री, स्वर्गीय ली कुआन यू एक उभरते व्यक्तित्व थे जिन्होंने इस द्वीप राष्ट्रीय–राज्य के प्रारम्भिक अस्तित्व और पहचान को परिभाषित किया। प्रशासन की सिंगापुर शैली को ली कुआन यू की छवि से जोड़ा गया और विस्तार देने के लिए इसे 'व्यावहारिक अधिनायकवाद', 'नम्र शैली का अधिनायकवाद', 'प्रबुद्ध निरंकुशतावाद' एवं यहां तक कि 'उदार निरंकुशतावाद' की संज्ञा दी गई। राज्य के आख्यानों से श्रेष्ठ योग्यतातंत्र के सिद्धांतों, बहुसंस्कृतिवाद तथा कानून के नियमों की पुष्टि होती है जो स्वच्छ प्रशासन, कुशल नौकरशाही, आधुनिकीकरण, आर्थिक विकास एवं समृद्धि तथ विश्व की सर्वोच्च प्रति व्यक्ति आय प्राप्त करने वालों में से एक को उत्पन्न करते हैं। एक विचारधारा की शुरूआत करते हुए जो अपने नस्लीय समूहों के बीच सामाजिक–सांस्कृतिक भिन्नताओं को स्वीकार करती है तथा उसी के अनुरूप सभी के लिए ''समानता'' को स्वीकार करती है (इस संदर्भ में नूरमन अब्दुल्ला के निबंध 'बहुनस्लवाद के बाद सिंगापुर का समाजशास्त्र' को देखें), यह आख्यान संख्यात्मक समानता के लिए नहीं है अपितु अवसरों की समानता, योग्यता को प्राथमिकता, आधिकारिक एवं संस्थागत रूप से स्वीकृत नस्लीय भेदभाव को अस्वीकार करने के विषय में बताता है। प्रजातीय/नस्लीय भेदभाव और प्रजातिवाद पर संवाद को व्यक्त करने, यद्यपि यह असंभव नहीं है, को इस शक्तिशाली प्रणाली ने चुनौतीपूर्ण बना दिया है, यह एक जाँचे हुए श्रेष्ठ योग्यतातंत्र की अस्पष्ट राजनीति एवं अंतर्विरोधों को प्रस्तुत करता है (इस संदर्भ में यूयेनतियों का निबंध 'श्रेष्ठ योग्यतातंत्र के बाद सिंगापुर का समाजशास्त्र' देखें)।

राजनीति के संदर्भ में सिंगापुर की प्रबंधकीय एवं प्रशासकीय शैली को योजना, दक्षता, नियंत्रण एवं विनियमन के आधर पर प्राथमिकता दी गयी। सिंगापुर के समाज की दिन–प्रतिदिन की गतिविधि नौकरशाही से निर्देशित होती है जिसे भ्रष्टाचार और बेईमान प्रथाओं से रहित प्रणाली के रूप में देखा जाता है–और जिसे कुशलता से, संभवतः बहुत कुशलता से संचालित किया जाता है। ब्रिटिश से विरासत में प्राप्त इस ''बुनियादी ढाँचे'' को पैना कर दिया गया और कुशलता से शासन संचालित करने के लिए व्यवहार में ईमानदारी को मजबूती देने के लिए सिंगापुर के नेताओं ने इसे सतर्कतापूर्वक उत्पन्न किया–जो मैक्सबेवर को प्रभावित और परेशान दोनों करेगा। केन्द्रीकृत प्रशासन के मार्गदर्शक सिद्धांत और सभी सामाजिक क्षेत्रों के साथ इसके निकट संबंधों को नौकरशाही संगठनों के समर्थन के साथ एक विशाल राज्य मशीनरी (प्रशासनतंत्र) की आवश्यकता होती है। यह ठीक है कि राज्य इन मध्यस्थता संस्थाओं के माध्यम से नीतियों को लागू करने की आकांक्षा रखता है जो नागरिकों के प्रतिदिन के जीवन पर प्रभाव डालती है, जो अनिवार्य रूप से व्यापक सत्तावादी और व्यावहारिक विचारधाराओं की छत्र–छाया में अधिनियमित होती हैं। सिंगापुर की 'नियंत्रण की संस्कृति' का वर्णन करते हुए कार्ल ट्रा की ने तर्क दिया कि उत्तर–औपनिवेशिक राज्य ने सत्ता के अधिक से अधिक स्तरों का प्रयोग किया और ''समाज के पूर्ण प्रबंधन एवं निगरानी की जिम्मेदारी ली।'' चुआ बेंग हुअत एवं क्बोक कियान बून ने भी बताया कि स्वतत्रोत्तर सिंगापुर में, राज्य के हस्तक्षेप में वृद्धि तथा [.....] राज्य की मशीनरी (प्रशासनतंत्र) में शक्ति के केन्द्रीयकरण'' ने प्रतिदिन के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्वायत्तता को पुनः कम कर दिया है।

सिंगापुर से सम्बद्ध एक जैसे शैक्षणिक और स्थापित संवादों को स्पष्ट और विकट रूप से ली कुआन यू के साथ और उसके गैर–समझौतावादी, अधिनायकवादी राजनीति के साथ जोड़ कर देखा जाता है। आमतौर पर, सिंगापुर के नागरिकों को रूढ़िवादी, भयभीत, विनम्र और निष्क्रिय के रूप में वर्णित किया गया। हालांकि सिंगापुर के नागरिक लंबे समय से शासन के अधोगामी उपागम (Top-down approach)–जो सिंगापुर की सार्वजनिक बहस का एक अनावश्यक और कभी–कभी उबाऊ हिस्सा था–की आलोचना करने का अनावश्यक प्रयास कर रहे थे।

राजनीतिक संरचनाओं तथा समाज विज्ञान के बीच क्या संबंध है? तथा सिंगापुर के समाजशास्त्र को भी निरंतर ली कुआन यू के नजरिये से देखा जा रहा था। उत्तर–औपनिवेशिक सिंगापुर के नेताओं ने आर्थिक वृद्धि को प्राथमिकता दी जो एक नव स्वतंत्र देश की आवश्यकता को दर्शाती है, जहां आर्थिक विकास और सुनियोजित सामाजिक परिवर्तन अत्यावश्यक लग रहा था। समाज विज्ञान में अनुसंधानों (बड़े पैमाने पर सरकार द्वारा वित्त पोषित) के

>>

'प्रासंगिक' होने की उम्मीद थी यदि ये आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से योगदान नहीं भी कर रहे तो राष्ट्र–निर्माण की योजना को तो बढ़ावा दे रहे हैं। 1970 से 1990 के दशक तक समाज विज्ञान के ज्ञान का उत्पादन सिंगापुर के तीव्र सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के बारे में जानकारी उत्पन्न करने की दिशा में सक्षम था, जो एक राष्ट्र–राज्य की बहुजातीय, बहु–धार्मिक आबादी के प्रबंधन की प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

हालांकि, हाल ही में विश्वविद्यालय आधारित समाज वैज्ञानिकों और राष्ट्रीय हितों के बीच यह संबंध–जो कभी पूर्ण नहीं था–अधिक कमजोर हो गया है। सिंगापुर के समाजशास्त्री बहुसंस्कृतिवाद, श्रेष्ठ योग्यतातंत्र, परिवार, नव–उदारवाद, वैश्वीकरण, सिंगापुर के इतिहास, बहु धार्मिकता और धार्मिक सद्भाव, निर्धनता की अनुपस्थिति एवं असमानता इत्यादि के संबंध में राज्य के वर्णन से समस्याग्रस्त हैं। अन्य संदर्भ में, सिंगापुर के राज्य अब अपने विभिन्न मंत्रालयों में स्वतंत्र अनुसंधान की क्षमता का निर्माण कर रहे हैं, यह एक ऐसा प्रयास है जो विश्वविद्यालय आधारित अनु–संधान पर निर्भरता को कम कर सकता है।

आश्चर्य नहीं होगा–सिंगापुर के अनेक लोगों को आंतरिक प्रतिक्रियाओं के लिए प्रेरित करने वाले ली कुआन यू का 2015 में निधन होने पर व आधुनिक सिंगापुर के वास्तुकार और नियंत्रक के खोने पर राष्ट्र विलाप करने लगे। परंतु दिलचस्प बात यह है कि इसे भी प्रतिबंधों और अति नियमन से अपार होने की भावना के साथ–साथ राजनीति सहित स्वतंत्रता के लिए आंदोलन से मुक्ति का बल बना दिया गया।

परंतु इस जश्न के स्वर को समाजशास्त्रीय कल्पना की एक उचित मात्रा के साथ संतुलित करने की आवश्यकता है। एक नृवंशविज्ञानशास्त्री के रूप में मैं सिंगापुर में अपनी कला का अभ्यास कर रहा था, व्यवहार में मेरा अनुसंधान धर्म पर प्रतिदिन के जीवन में श्रेष्ठता और क्षमता पर आधारित है। सामाजिक और राजनितिक जीवन के व्यापक संगठन जो नौकरशाही, प्रशासनिक एवं विधायी सीमाओं द्वारा तैयार किये गये हैं, द्वीप के पवित्र क्षेत्रों में एक अत्यधिक तर्कसंगत मानसिकता के साथ सम्बद्ध है। सिंगापुर के धार्मिक परिदृश्य की विशिष्टता, विशेष रूप से नौकरशाही की इसकी संस्कृति एवं धार्मिकता की अभिव्यक्ति पर इसके प्रभाव के विस्तार की आवश्यकता है। इस संदर्भ में फ्रांसिस लिम के निबंध 'धर्मनिरपेक्षतावाद के बाद सिंगापुर का समाजशास्त्र' देखें)।

सिंगापुर का राज्य मध्यस्थतावादी है, मेरे कार्य का प्रारंभिक बिंदु था, जो सिंगापुर के धार्मिक परिदृश्य की अव्यवस्था को मापता है, यह ''जंगली मंदिरों''–पवित्र स्थल जो अधिकारियों की नजर से बचने के लिए आश्रय स्थलों पर स्थित हैं–के विश्व और धार्मिक उत्सवों एवं पूजा के स्थानों से प्रदर्शित होता है–हिंदु, ताओ, बौद्ध, कैथोलिक के रूप में स्थापित सिंगापुर के लोगों के प्रतिदिन के धार्मिक जीवन से घनिष्ठता से जुड़ा हुआ दिखायी देता है। धार्मिक कार्यकर्त्ताओं के रूप में पवित्र भूगोल और अत्यधिक सीमित भूभाग में चेतना को उत्पन्न करता है, नगरीय सिंगापुर की भौगोलिक स्थिति ''अव्यवस्था'' को और इसके धार्मिक क्षेत्र की ''अस्त–व्यस्तता'' को दर्शाती है : धार्मिक जुलूसों का आयोजन खेल के स्टेडियमों में तथा धार्मिक उत्सव तरण–तालों में आयोजित होने लगे हैं। ली कुआन यू के अधिनायकवादी शासन के दौरान 'पवित्र/धर्मनिरपेक्ष' तथा 'निजी/सार्वजनिक' के बीच सावधानीपूर्वक खींची गई सीमाओं की 'उपेक्षा' ने सिंगापुर के धार्मिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। धार्मिक क्षेत्रों के ये वैकल्पिक अध्ययन एवं स्वच्छ, निष्फल तथा अत्यधिक नियमन, सिंगापुर नगर के प्रभावी विचार राजनीतिक मुकाबला करने में संलग्न रहे।

तब अधिकारिक संरचनाओं से समझौता करने की प्रतिदिन की क्षमता के बारे में क्या कहा जा सकता है? नौकरशाही संरचनाओं की मजबूत उपस्थिति तथा एक मध्यस्थ की भूमिका के बावजूद धार्मिक प्रयोग के लिए एक मजबूत इच्छा सिंगापुर के धार्मिक क्षेत्र को परिभाषित करती है। जबकि ऐसी मध्यस्थता धार्मिक क्षेत्र को आकार देती है, वे धार्मिक नवाचार एवं सृजनात्मकता को समाप्त नहीं करती। अनजाने में, धर्म के विनियमन ने धार्मिक स्वतंत्रता के नये क्षेत्रों को खोला है। व्यवहार में, अधिकारी वर्ग की यह भूलभूलैया समझौते के लिए स्थान छोड़ती है, अभ्यासकर्त्ता के रूप में नियमों का सामरिक प्रयोग करके प्रतिदिन के इच्छित परिणामों को प्राप्त किया जाता है।

सिंगापुर के जटिल सामाजिक–राजनीतिक एवं धार्मिक परिदृश्य से सम्बद्ध मेरे नृवंशविज्ञान ने विशेष रूप से ली कुआन यू के शासन काल के दौरान एक अत्यधिक अधिनायकवादी सरकार का सामना कर रहे थके हुए, निष्क्रिय और दमित नागरिकों की पारंपरिक विशेषताओं के बारे में सवाल पूछने अथवा जानने के लिए मुझे प्रेरित किया। मेरा आख्यान वास्तव में सिंगापुर के धार्मिक क्षेत्र के विशिष्ट लेखों के साथ मेल नहीं खाता था तथा यह एक नियंत्रित सिंगापुर राज्य के प्रभुत्वकारी संवाद के विरूद्ध व्यवस्थित था जिसने लोगों के जीवन को अति नियंत्रित करने का कार्य किया, अच्छे रूप में विनम्र एवं अपेक्षा के अनुरूप व्यवहार को उत्पन्न किया और खराब अर्थ में अपंगता व संस्था की कमी को उत्पन्न किया।

एक अधिनायकवादी राज्य के नजरिये से शैक्षणिक (और स्थापित) आख्यानों को अक्सर इस सुनिश्चितता के साथ परिभाषित किया जाता है कि या तो सिंगापुर की कहानी को पहले से ही अच्छी तरह जानते हैं या जो कुछ प्रकट होना चाहिए वह जाहिर तौर पर निष्क्रिय और प्रेरित करने वाला नहीं होगा। सामान्यतः सिंगापुर के अध्ययन सिंगापुर के सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के वृत्तांतों का निरंतर सामना करते हैं बजाय सिंगापुर की राजनीति के पुराने विचारों की मध्यस्थता के। वास्तव में, सिंगापुर समाज के वैकल्पिक विजन को प्रस्तुत करने में, कभी–कभी या तो एक सत्तावादी राज्य के लिए सुधारक के रूप में या 'सूक्ष्म' का वर्णन करने वाली सरल अंतर्वस्तु के रूप में अधीनस्थ/गैर–कर्त्ता की प्रतिदिन की जीतों को मैंने पढ़ा, बिना यह जाने कि वृहद्, राजनीतिक उपकरणों का आधिपत्य मजबूती से बना हुआ है।

अतः सिंगापुर के समाजशास्त्र में इसका पूरा–पूरा हाथ है। इसने न केवल अधिकारिक, प्रभावी आख्यानों और सिंगापुर के समाज के वृत्तांतों के वैकल्पिक अर्थों को उत्पन्न किया, बल्कि सिंगापुर के समाज और इसकी समाजशास्त्रीय समझ दोनों की निरंतर व्यंग्यात्मक तरीके से व्याख्या को भी प्रस्तुत किया। सिंगापुर के सामाजिक और राजनीतिक जीवन की वैकल्पिक कल्पनाओं, बहुवचनों के इन घिसे–पिटे फार्मूलाबद्ध संवादों के परे जाकर एक चुनौती और महत्वाकांक्षा के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। सामाजिक संरचनाएं लोगों के द्वारा तैयार नहीं होती, ना ही वे रातों–रात गायब की जा सकती है। वास्तव में एक उचित सवाल यह हो सकता है कि : वर्तमान प्रधानमंत्री ली सीन लूंग के बाद सिंगापुर का राजनीतिक परिदृश्य क्या होगा? ■

विनीता सिन्हा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<socvs@nus.edu.sg>

> बहु–नस्लवाद के बाद

नूरमन अब्दुल्लाह, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सिंगापुर तथा 'समझ एवं समाज' से सम्बन्ध ISA के थेमेटिक (विषयगत) समूह के सदस्य (TG 07)

सिंगापुर के वर्तमान कालिक चाइना टाउन जिले के तेलोक अयर ऐतिहासिक स्थल पर मलय और भारतीय व्यापारियों की मूर्ति। डैनियल गोह द्वारा फोटो।

अगस्त 2016 में एक राष्ट्रीय दिवस पर रैली को संबोधित करते हुए सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सीन लूंग ने सिंगापुर में प्रजाति/नस्लीय संबंधों पर चर्चा की तथा उच्चतम स्तर के राजनीतिक पदों पर प्रतिनिधित्व करने के लिए अल्पसंख्यकों का आह्वान किया। इस संदर्भ में अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व विशेष रूप से प्रजाति से संबंधित है न कि जेण्डर, यौनिकता या अन्य किसी सामाजिक दृष्टि से अर्थपूर्ण अंतः संबंधित श्रेणियों से। यह दिलचस्प है कि पहले 1989 में, ली के पिता पूर्व प्रधानमंत्री ली कुआन यू ने जोर देते हुए कहा था कि सिंगापुर एक गैर–चीनी प्रधानमंत्री के लिए तैयार नहीं था, 2008 में काफी विलंब से, युवा ली ने कहा ऐसा परिणाम 'संभव था परंतु जल्दी नहीं था' (द स्ट्रेटस टाइम्स, नवंबर 9, 2008)। विडंबना यह है कि, 2016 की रैली के 2 सप्ताह बाद, सिंगापुर के प्रमुख अंग्रेजी दैनिक 'द स्ट्रेटस टाइम्स' ने एक पेज में 'आगे कौन सिंगापुर का नेतृत्व करेगा'? (हू विल लीड सिंगापुर नेक्सट?) (स्लिण्ट 4, 2016) शीर्षक से ली के संभावित उम्मीदवारों–सभी नस्लीय बहुसंख्यक चीनी केबिनेट मंत्रियों–की प्रोफाइल को प्रकाशित किया।

ली के भाषण अनवरत सिंगापुर समाज के नस्लवाद की प्रक्रिया को प्रकट करते हैं। इसे कम महत्व देने के बजाय, प्रजाति/नस्लवाद की प्रमुखता एवं उपलब्धता को और अधिक उजागर किया है तथा सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक नीति के माध्यम से इसमें वृद्धि हुई है तथा सिंगापुर के प्रतिदिन के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस तरह के आयोजन से सामाजिक और राजनीतिक जीवन की संस्तरणमूलक अभिव्यक्तियाँ बहुनस्लवाद के सिंगापुर के मॉडल से आकार ग्रहण करती हैं, 'चीनी', 'मलय', 'भारतीय' तथा 'अन्य' श्रेणियां अधिकारिक तौर पर इन्हें संक्षेप में CNIO के रूप में जाना जाता है–प्रत्येक प्रजातीय/नस्लीय श्रेणी की अपनी संस्कृति एवं भाषा निर्धारित है।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद की विरासत पर निर्मित CNIO बहुनस्लवाद एवं श्रेष्ठ योग्यतातंत्र एक साथ मिलकर आकस्मिक राज्य के परिभाषित प्रमुख विचारधारायी सिद्धांतों को निर्मित करते हैं जो मलेशिया से 1965 में निष्कासित सिंगापुर द्वारा बनाया गया था–ऐसा निष्कासन जो चीनी एवं अन्य अल्पसंख्यकों के नस्लीय अधिकारों के संरक्षण पर मलेशिया एवं सिंगापुर के बीच कड़वे सांप्रदायिक विवादों का परिणाम था। यह ढाँचा स्वतंत्रोत्तर सिंगापुर में राष्ट्र–निर्माण का अनिवार्य अंग बन गया: एक छोटे नगर–राज्य के रूप में सिंगापुर के अस्तित्व को सुरक्षा व वैधता प्रदान करने के उसके प्रयासों में सरकार ने विभिन्न नस्लीय और धार्मिक समूहों को समान प्रस्थिति, उपचार अवसर एवं सम्मान प्रदान करने व गारंटी देने पर बल दिया। प्रजाति के साथ ऐसे अनुबंध सर्वव्यापी शैक्षणिक एवं भाषायी नीतियों, स्वयं सहायता समूहों, सरकारी आवास आवंटन, जनसंख्या नियंत्रण तथा राजनीतिक प्रतिनिधियों की श्रेणी में देखे जा सकते हैं।

सिंगापुर के दावे को स्पष्ट रूप से प्रजाति–तटस्थ उपागम के रूप में देखा जाता है, राज्य राष्ट्रीय हितों की सीमाओं के भीतर ही प्रजाति के संबंधों को एक–समान एवं अरूचिकर संरक्षक के रूप में प्रस्तुत करता है। एक ही समय पर अनेक नीतियां राज्य की जनसंख्या को विशिष्ट प्रजातीय अनुपात में पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति देती है। यह प्रजातीय गणना, विडंबनापूर्ण तरीके से, समानता पर बल देने के बावजूद चीनियों के नस्लीय बहुमत एवं प्रभुत्व को बनाये रखती है और सुनिश्चित करती है। तत्कालीन उप–प्रधानमंत्री और बाद में चयनित राष्ट्रपति ओंग तेंग चिओंग ने पुनः दावा किया कि कुछ समूहों के साथ प्राथमिकता के आधार पर व्यवहार करना संविधान की भावना एवं पत्र के विरूद्ध नहीं था। वास्तव में, बहुसंस्कृतिवाद की चर्चा जो सभी संस्कृतियों को अन्य संस्कृतियों की तुलना में अधिक समान बनने की अनुमति देता है।

हालांकि एक अति महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य के रूप में सामाजिक भेदभाव का प्रबंधन करने के लिए सामाजिक संगइन के एक साधन के रूप में CNIO का बहुनस्लवाद इन आधिकारिक तौर पर स्वीकृत श्रेणियों के भीतर सामाजिक दृष्टि से सार्थक नस्लीय, क्षेत्रीय, भाषायी, धार्मिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं को छिपाना और अस्पष्ट बनाये रखता है। यह CNIO जैसे नस्लीय समूहों में भेदभाव की जटिलताओं, उत्सवों, मान्यता के माध्य से नस्लीय सीमाओं को बढ़ावा और मजबूती भी देता है। और संस्कृति के विस्तार द्वारा प्रजाति को राजनीतिक एवं प्रशासनिक श्रेणियों में गिना जाता है और इसे वर्गीकृत व आवश्यक रूप से संस्थागत सीमित तथा आंतरिक रूप से सजातीय संदर्भों में देखा जाता है।

इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक प्रथाओं के बारे में महत्वपूर्ण विचार–विमर्श अक्सर नस्लीय सहिष्णुता और सद्भाव बनाए रखने तक सीमित रहते हैं। सहिष्णुता पृथक्करण के माध्यम से अनवरत

>>

बनी हुई है तथा असुविधाओं के रूप में क्या अर्थ लगाया जाता है, के साथ यह आवश्यक है। दूसरी तरफ, अन्तः सांस्कृतिक संवाद, परस्पर सम्मान, सहयोगात्मक गतिविधियों और बहुसांस्कृतिक रूचियों एवं जिज्ञासाओं पर बहुत कम ध्यान दिया है जो भिन्नताओं के मूल्य और प्रयोग की स्वीकृति, गहन समझ, ज्ञान एवं प्रशंसा को विस्तार देते हैं। नस्लीय सद्भाव का ही परिणाम है कि कोई सरकारी अभियानों में वर्णित सांस्कृतिक भेदभावों के परे जाने का साहस नहीं करता।

अभी तक एक ही समय पर विकल्प की संभावनाओं एवं प्रतिदिन के जीवन में कल्पनाओं तथा स्वतंत्रोत्तर सिंगापुर में प्रजाति, भेदभाव तथा बहुसंस्कृतिवाद के साथ अधिक गहरा जुड़ाव सुझाव देता है कि राज्य के हस्तक्षेप एवं अन्य उतारों–चढ़ावों के परे आगे बढ़ने की अपार संभावनाएं हैं। ये प्रतिदिन की अन्तः सांस्कृतिक प्रथाएं हस्तक्षेप, विघटन और बाहरी व्यवधान के बिना सांस्कृतिक सीमाओं के परे तथा पारगम्य समूहों की सीमाओं में सावयवी रूप से उत्पन्न होती है। सांस्कृतिक उत्पादकों के रूप में लोग सामान्य मुलाकात में, बातचीत में तथा सांस्कृतिक भेदभाव एवं परिवर्तन के साथ अन्तः क्रिया करने में संलग्न हैं।

प्रतिदिन के जीवन की समृद्ध संरचना सांस्कृतिक प्रथाओं की विरासत है जो संस्थागत रूप से मान्यता प्राप्त नस्लीय व सांस्कृतिक श्रेणियों की उपज के विरूद्ध या परे जाती है, राज्य के हस्तक्षेप में बहुत अधिकम उतार–चढ़ाव किये बिना ऐसा होता है। धर्म के क्षेत्र में ऐसी सीमाओं के विषय में बातचीत को जिन प्रक्रियाओं के द्वारा समझा जाता है उनमें 'समन्वयता', 'संकरण' तथा 'रूपांतरण' एवं 'मिश्रण व मेल' सम्मिलित हैं। हिन्दु धर्म मान्यताओं, प्रथाओं, स्थान तथा संस्कारगत प्रथाओं के संदर्भ में ताओ धर्म से मिलता जुलता है, मंदिरों को ताओ या हिंदु धर्म में आसानी से वर्गीकृत नहीं कर सकते, जबकि हिंदु परिवारों में कृष्ण, मुरूगन एवं गणेश के साथ यीशु मसीह, मरियम, गुआन यिन देवी तथा लाफिंग बुद्धा उनके पूजा स्थलों में सम्मिलित हो सकते हैं। ऐसा मिश्रण एवं मेल यह दर्शाता है कि व्यक्ति सक्रिय रूप से प्रतिदिन की धार्मिक गतिविधियों में अपने प्रदर्शन को विभिन्न धर्मों से चुनते हैं। नस्लीय मलय, मुस्लिम एवं चीनी आध्यात्मिक दुख की घटना में दोनों तरफ से आध्यात्मिक चिकित्सकों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

इसी प्रकार, सिंगापुर में प्रतिष्ठित सांस्कृतिक भोजन (एथनिक फूड)–लक्सा, चिकन राइस, रोजक, मी गोरेंग एवं अन्य–भोजन संबंधी उधारी एवं संकरण को दर्शाता है, यद्यपि आधिकारिक तौर पर अक्सर भोजन अमान्य होता है जो CNIO जैसे नस्लीय समूहों[1] के प्रतिनिधि व्यंजन के साथ मिलाकर तैयार किया जाता है।

भाषा के क्षेत्र में, सिंगलिश (सिंगापुर की अंग्रेजी) के जैवकीय उत्पत्ति एवं प्रतिदिन इसका उपयोग CNIO की नस्लीय श्रेणियों एवं भाषाओं के सरल सम्मिश्रण को बाधित करता है। बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी–आधारित क्रियोल भाषा तथा चीनी बोलियां, मलय, तमिल एवं अन्य स्थानीय भाषाओं से निर्मित खास भाषा है, सिंगलिश के प्रति राज्य की दुविधा उसके 'अच्छी अंग्रेजी बोलो' अभियान में स्पष्ट नजर आती है।

समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों ने अनुबंध, मुठभेड़ तथा अनुभवों का पता लगाया जो समस्त सिंगापुर में विभिन्न स्तरों पर घटित होते हैं। इनसे प्रतिदिन की जीवनचर्या, धर्म, भोजन एवं भोजन के तरीकों, भाषा, इंद्रियों व फिल्मों तथा नाटकों को आकार मिलता है। ऐसी सांस्कृतिक प्रथाएं अधिकारिक रूप से स्वीकृत नस्लीय श्रेणियों में स्थापित अपरिहार्य एवं परस्पर अनन्य सीमाओं को बाधित करती हैं। प्रजाति के सवाल के साथ एक महत्वपूर्ण जुड़ाव, CMIO का बहुनस्लवाद, तथा शक्ति एवं प्रभुत्व से उत्पन्न विशेषाधिकार राज्य केन्द्रित चर्चाओं एवं विनियोजन से परे सिंगापुर की कल्पना की संभावनाओं को व्यक्त करता है।

आज, सिंगापुर तेजी से असमान होते विश्व में एक तीव्र प्रवासी अन्तः प्रवाह का सामना करने के साथ–साथ सर्वव्यापी अस्मिताओं के साथ सम्बद्धता एवं नवीन आकांक्षाओं का सामना कर रहा है। नस्लीय सद्भाव के काल्पनिक आदर्श विचार को पूरा करने के बजाय, अथवा एक श्रेणी के रूप में प्रजाति को उदारपूर्ण ढंग से छिन्न–भिन्न करने के साथ, समाजशास्त्रियों व मानवशास्त्रियों को सिंगापुर के समाज में विभिन्न समूहों में स्पष्ट व प्रतिवर्त आत्म–आलोचना तथा प्रजाति की स्थितियों, सीमाओं एवं विकल्पों, भेदभाव के प्रति जागरूक तथा बहुसंस्कृतिवाद के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इन प्रयासों के माध्यम से व्यक्तियों और समुदायों को बहस, कल्पना, विचार के बारे में चिंतन को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा सिंगापुर की सार्थक पहचानों को महत्वपूर्ण ढंग से निर्मित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जो एक ही समय पर समान भी है और भिन्न भी। इन विचारों को पैना करने के लिए अधिक महत्व पूर्ण सूचनाओं से युक्त, सृजनात्मक एवं बहुसंस्कृतिवादी नागरिकों को स्वीकृति एवं क्रिया, सम्मान एवं संदेह तथा सहमति एवं संघर्ष दोनों सीखने की आवश्यकता होती है। ■

नूरमन अब्दुल्लाह से पत्र व्यवहार हेतु पता <socnoorm@nus.edu.sg>

[1] Chua Beng Huat and Ananda Rajah (2001). "Hybridity, Ethnicity and Food in Singapore" pp. 161-197 in David Y.H. Wu and Tan Chee-Beng (eds.) *Changing Chinese Foodways in Asia*, Hong Kong: The Chinese University Press; Low, Kelvin E.Y. (2015). "Tasting Memories, Cooking Heritage: A Sensuous Invitation to Remember" pp. 61-82 in Lily Kong and Vineeta Sinha (eds.) *Food, Foodways and Foodscapes: Culture, Community, and Consumption in Post-Colonial Singapore*, Singapore: World Scientific Publishing.

> श्रेष्ठ योग्यतातन्त्र के बाद

यूवेन तियो, नानयांग प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सिंगापुर

समकालीन सिंगापुर में ''संवर्धन'' और ''ट्यूशन'' केन्द्र आज आम रूप से दिखाई देते हैं; योवेन तियो द्वारा फोटो।

सिंगापुर के किसी भी मॉल में जाने पर वहां 'शिक्षण केन्द्र' एवं 'ट्यूशन' केन्द्र देखे जा सकते हैं जो ऐसे बच्चों की सहायता का विज्ञापन कर रहे होते हैं जो अपने 'स्कूल एवं जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं' तथा विद्यार्थियों के प्रशिक्षण के लिए 'कैसे सीखे जानने की कला' से संबंधित प्रशिक्षण का विज्ञापन करते नजर आयेंगे। कुछ केन्द्रों में स्कूली पाठ्यक्रम से सम्बद्ध विषयों जैसे–अंग्रेजी, मंदारिन, गणित, विज्ञान, भौतिकी, अर्थशास्त्र–को पढ़ाया जाता है जबकि उनमें से अधिकांश अभिरूचि केन्द्रित विषयों जैसे शतरंज एवं रोबोटिक जैसे विषयों पर ध्यान देते हैं। प्रत्यक्ष रूप से या अन्यथा उनका लक्ष्य एक अकादमिक केन्द्र की स्थापना करना होता है ताकि वे बच्चों को ''परीक्षा की तैयारी'' करवा सके।

इन केन्द्रों की सर्वव्यापकता सिंगापुर की शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषताओं को तथा इसके प्रारंभिक स्तरीकरण के तरीकों तथा माता–पिता द्वारा अपने तीन वर्ष के बच्चों के 'शिक्षण' के लिए जल्दबाजी में केन्द्रों को खोजने की बाध्यता को दर्शाता है। नियमित स्तरीकरण बच्चों की समग्र स्कूली शिक्षा के दौरान उन पर दबाव बनाएं रखता है तथा शिक्षण/ट्यूशन केन्द्र सभी आयु समूहों और स्तरों पर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। स्कूल मानकीकृत परीक्षाओं पर भरोसा करते हैं इसलिए सभी प्रकार की गतिविधियाँ 'परीक्षा की तैयारी' के नाम पर बेची जाती हैं। अंततः जोखिम ज्यादा है और प्रतियोगिता तीव्र है इसलिए केन्द्र न केवल उन विद्यार्थियों से अपील करते हैं जो असफल हो रहे हैं अपितु उनसे भी जो विद्यार्थी सर्वोच्च स्थान प्राप्त करना चाहते हैं। समकालीन सिंगापुर में, सामान्य तौर पर आगे बढ़ने या अच्छा प्रदर्शन करने के लिए पाठ्येतर ट्यूशन/शिक्षा को 'आवश्यकता' माना जाता है।

सिंगापुर में श्रेष्ठ योग्यतातंत्र की सबसे सामान्य आलोचना है कि यह उस रूप में काम नहीं करती जैसे इसे करना चाहिए। माता–पिता बहुत अधिक गृहकार्य (होमवर्क) तथा कई परीक्षाएं देने पर पीड़ा व्यक्त करते हैं। आलोचक असमानता के प्रति चिंतित होकर इस बात को सुनिश्चित करने की जरूरत महसूस करते हैं कि निम्न आय वाले घरों के बच्चों को भी अवसर प्राप्त हो। परंतु श्रेष्ठ योग्यतातंत्र से इतर तार्किक परिणामों के रूप में पाठ्येतर प्रशिक्षण के कुछ पक्ष जरूरी है।

समाजशास्त्रीय साहित्य में श्रेष्ठ योग्यतातंत्र को व्यापक रूप से एक प्रणाली के रूप में स्वीकारा जाता है जो पुरस्कारों को भिन्न तरीके से वर्गीकृत करती है और उसके बाद विजेताओं को वैधता मिलती हैं। पुरस्कार के योग्य कौन है और कौन नहीं है, संकीर्ण विचारों पर निर्भर करता है तथा यह वहाँ अच्छी तरह से काम करता है–जिसे पियरे बोर्दियों ने 'अमान्यता' की संज्ञज्ञ दी–जहाँ जनता यह विश्वास करती है कि प्रणाली नियमों के एक संकुल पर आधारित है, परंतु वास्तव में यह अन्य आधारों पर अच्छी तरह काम करता है। इस मामलें में सिंगापुर की प्रणाली केवल व्यक्ति के कठिन परिश्रम के बजाय माता–पिता से बच्चों को प्राप्त आर्थिक एवं सांस्कृतिक पूंजी के आधार पर पुरस्कृत करती है। स्तरीकरण के वास्तविक सिद्धांतों एवं तकनीक की अमान्यता के द्वारा श्रेष्ठ योग्यतातंत्र विजेताओं को वैधता प्रदान करता है, ऐसे व्यक्तियों को चुनता है जो विरासत में प्राप्त अनुचित लाभों के माध्यम की बजाय अपने कठिन श्रम और बुद्धि के आधार पर सफल हुए हैं। और योग्यतातंत्र हमें असफलताओं के विषय में भी एक विशिष्ट कहानी बताता है और व्यवस्था की कमियों के बजाय व्यक्ति के लक्षणों को दोष देता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से सिंगापुर की शिक्षा प्रणाली बिल्कुल अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) के रूप में काम करती है। लक्षणों के संकीर्ण समुच्चय को बढ़ावा देने तथा सीमित मात्रा में छात्रों को छाँटने के अलावा सामान्य जनता सचमुच यह मानती है कि जिन गुणों/विशेषताओं को पुरस्कृत किया जा रहा है वे व्यक्ति की क्षमताओं और प्रयासों के प्रतिबिंब हैं। व्यक्ति जो अच्छी तरह से जानते हैं, वे उचित 'शाखा' (स्ट्रीम) और 'अच्छे' स्कूलों के माध्यम से औपचारिक शिक्षा, व्यवसाय, अकादमिक क्षेत्र, सिविल सेवा या सरकारी क्षेत्रों में सुरक्षित नौकरियां प्राप्त करते हैं तथा व्यापक तौर पर यह देखा गया है कि वे जिस पद एवं वेतन के योग्य होते हैं,

उसे प्राप्त करते हैं। प्रत्यक्ष रूप से प्रशिक्षण एवं कोचिंग केंद्र व्यवस्था में लोगों के सामान्य विश्वास को कम ही हिला पाते हैं। न्यायालय को उच्च माना गया है, कभी–कभी इससे भी ज्यादा मानाजाता है, परंतु पुरस्कार मनमाने ढंग से प्राप्त नहीं होते।

शिक्षा एवं श्रेष्ठ योग्यतातंत्र के बारे में समाजशास्त्रीय आलोचनात्मक चेतना मुश्किल से ही आकर्षित कर पाती है। 'क्यों' समझने के लिए हमें सिंगापुर समाज की दो विशेषताओं को जानना चाहिए : व्यक्तिवाद का सांस्थीकरण एवं उद्देश्यपरक व्याख्यान की प्रमुखता।

तर्क यह है कि श्रेष्ठ योग्यतातंत्र को बहु राज्यीय संस्थाओं एवं जटिल नीतियों के माध्यम से मजबूती देना प्रतिदिन के जीवन में अन्तः सम्बद्ध होता है, जो विवाह, प्रसव और पालन–पोषण, घरेलू प्रबंधन तथा बुजुर्ग या बीमार की देखभाल के तरीकों को प्रभावित करता है तथा विकल्पों को आकार देता है। इसके पीछे यह तर्क दिया जाता है कि : व्यक्तियों को अपनी और अपने स्वयं के परिवारों की देखभाल करनी चाहिए। यद्यपि सिंगापुर राज्य, अपने जीवन को विशिष्ट ढंग से व्यवस्थित करने के लिए लोगों को मार्ग दिखाने में अत्यधिक हस्तक्षेप करता है, ने सार्वभौतिक कल्याण संबंधी प्रावधानों का कठोरता से विरोध किया। व्यक्ति का साख एवं कौशल प्राप्त करना सतत रोजगार, विषमलैंगिक साझेदारी, सार्वजनिक वस्तुओं और कल्याण–आवास, स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की देखभाल, सेवानिवृत्ति सहयोग की पूर्व शर्त हैं। पूर्व शर्तों–जैसे साख, नौकरी, विवाह, बच्चे (जो वंश को आगे बढ़ाते हैं)–को पूरा करने में असफल होने का मतलब है सुरक्षा, कल्याण और सामाजिक सदस्यता से बाहर होना। अतः व्यक्तिगत 'प्रतिभा' प्राप्त करना उचित अवसर का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जबकि पार–पीढ़ीगत अंतः निर्भरता के साथ एकल परिवार, नीति निर्माण और प्रशासन की एक आधारभूत सामाजिक–आर्थिक इकाई है। अतः स्वीकृत प्रतिभा की प्राप्ति में परिवारों द्वारा निवेश करना समझदारी है, और आवश्यक भी।

दूसरा, श्रेष्ठ योग्यतातंत्र को राष्ट्र एवं विशिष्ट–स्वयं के शक्तिशाली उद्देश्यपरक व्याख्यान द्वारा समर्थन प्राप्त है। सिंगापुर का श्रेष्ठ योग्यतातंत्र–अपने निकटतम पड़ोसी–मलेशिया के नृवंशीय–प्रजातीय पूर्वाग्रहों तथा भेदभाव का विरोधी है। श्रेष्ठ योग्यतातंत्र को–तर्कसंगत, व्यवस्थित एवं अवैयक्तिक–सिंगापुर की अभूतपूर्व आर्थिक सफलता तथा राष्ट्र के रूप में अपने चमत्कारिक अस्तित्व के स्त्रोत के रूप में जानाजाता है। राष्ट्र की प्रगति के विवरण सिंगापुर की जीवनी के वृत्तांत में पाये जाते हैं, जिसने इसे 'बनाया' है। जैसा पियरे बोर्दियों के फ्रांस में 'राज्य का कुलीन वर्ग'–जिन्हें विशय के शीर्ष विश्वविद्यालयों द्वारा 'मेधावी' घोषित किया गया है–ऐसे पदों पर विराजमान हैं जहां से वे लोगों को सम्बोधित कर सकते हैं और उन्हें सुना जाता है। राजनीतिक अभिजन तथा नीतिनिर्माताओं के कार्यालयों से, पत्रकारों एवं विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरा की डेस्क से, व्यक्ति व्यवस्था को अपने सीमित जीवनी आख्यानों की सहायता से देखते हैं : एक व्यवस्था के रूप में पूरी तरह काम नहीं किया जा सकता, परंतु स्पष्ट रूप से काम किया है, क्यों वे/हम व्यवस्था में या शीर्ष पद पर उपस्थित हैं। जो असफल रहे वे व्यक्तिगत असफलताओं के आख्यान पर चुप है, पृथक हैं और विनम्र हैं। श्रेष्ठ योग्यतातंत्र को एक अच्छी व्यवस्था माना जाता है, विशेष रूप से जो उसके विरूद्ध बोल सकते थे, ने अचानक व्यवस्था की आलोचना करना रोक दिया क्योंकि इस व्यवस्था से उनके अपने सामाजिक पदों तथा योग्यता की समझ को वैधता प्राप्त होती थी।

श्रेष्ठ योग्यतातंत्र की कीमत अधिक है। निम्न आय वाले माता–पिता, जो अपने बच्चों को योग्यता के गुण प्राप्त करने के संसाधन उपलब्ध नहीं करा पाते, वे वस्तुओं और प्रतीकात्मक मूल्य (हीनता) के रूप में अधिक कीमत चुकाते हैं। समाज में असमानता तेजी से बढ़ी है, लोग आय की दृष्टि से उच्च होने के कारण भी कीमत चुका सकते हैं, यहां तक कि अपने भय के कारण कुछ कम गतिशीलता होने पर भी वास्तविक कीमत का भुगतान कर सकते हैं। बड़े पैमाने पर एवं महंगा अस्पष्ट शिक्षा व्यापार, युवाओं में अवसाद एवं चिंता, माता–पिता में तनाव तथा गृहकार्य (होमवर्क) की निगरानी पर समय की बर्बादी तथा जुआ खेलने की असमान व्यवस्था के माध्यम से उत्पन्न असमानता की खाई–वे कीमत हैं जो समाज द्वारा वहन की जाती है।

समाजशास्त्री क्या कहते हैं? हमें एक अनुसंधान कार्यक्रम और एक कार्यशील एजेंडे दोनों की आवश्यकता है।

अनुसंधान के क्षेत्र में यह स्पष्ट है कि शिक्षा का समाजशास्त्र परिवार, कल्याण, राज्य–समाज संबंधों तथा राजनीति से संबंधित अध्ययनों से पृथक नहीं किया जा सकता। श्रेष्ठ योग्यतातंत्र का पता लगाने के लिए हमें अपने उपकरण बॉक्स में गहन प्रशंसा सहित सभी विश्लेषणात्मक उपकरणों की जरूरत होती है, जो एक ओर से क्या अतार्किक है (उदाहरण के लिए शिक्षा में महंगा निजी निवेश) को पूर्ण अर्थ प्रदान करता है जब हम दूसरे पक्ष के परिवर्तनों को समझते हैं (उदाहरण के लिए परिवारवादी कल्याण विरोधी शासन)। हमें केवल शिक्षा के संदर्भ में इन सवालों को जानने की जरूरत नहीं है अपितु असमानता एवं पुनरूत्पादन के कई अन्तः सम्बद्ध स्थानों की पूछताछ के लिए एक व्यापक एजेण्डे की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त यदि समाजशास्त्रीय उपकरण श्रेष्ठ योग्यतातंत्र के बारे में जन चर्चा में आकर्षण का केन्द्र बनते हैं तो हमें प्रभावी आख्यान को रोकने की आवश्यकता है। प्रभावी आख्यान को रोकने के लिए, एक पूर्व शर्त के रूप में, आत्म–नियंत्रण की आवश्यकता होती है। विद्वानों को श्रेष्ठ योग्यतातंत्र एवं असमानता को समस्या के रूप में–जिनका वे अपने अनुसंधान कार्य के दौरान सामना करते हैं–नहीं देखना चाहिए अपितु उन्हें प्रतिदिन की कार्यप्रणाली और चर्चाओं के माध्यम से अपने विशेषाधिकारों तथा अपने द्वारा विकसित असमानता के तरीकों की भी जांच करनी चाहिए। प्रभावी आख्यान को रोकने के लिए शिक्षा जगत के परे के श्रोताओं को भी जोड़ने की आवश्यकता होती है। एक अनुशासन के रूप में, अगर हमारे पास विशेषाधिकार और हाशिए के पुनरूत्पादन को समझने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण पहले से हैं तो हमें विभिन्न जनता के बीच लेखन के द्वारा विविध दर्शकों के साथ चर्चाओं और वार्ताओं के द्वारा तथा नागरिक समाज, शिक्षाविदों, नीति–निर्माताओं एवं अभिभावकों के बीच शिक्षा जगत से परे इन विचारों को प्रसारित करके एक बेहतर काम करना चाहिए। ■

यूवेन तियो से पत्र व्यवहार हेतु पता <yyteo@ntu.edu.sg>

> धर्मनिरपेक्षतावाद के पश्चात्

फ्राँसिस खेक गी लिम, ननयाँग प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सिंगापुर

एक सार्वजनिक आवास फ्लैट में गृह मंदिर में श्रद्धालु पूजा करते हुए। फ्राँसिस लिम द्वारा फोटो।

कई मायनों में, सिंगापुरवासी बनने के लिये अपरिहार्य है, राज्य द्वारा निजी एवं जन दोनों ही जीवन में लादे हुये सामाजिक वर्गीकरण से, एक निरंतर समझौता करना। हालाँकि, सभी आधुनिक राष्ट्र–राज्य उनके यहाँ विभिन्न सामाजिक एक सांस्कृतिक समूहों परिभाषित करने, सीमित करने एवं इस प्रकार उन पर राज करने में संलग्न रहते हैं; आखिर ये शासन एवं आधुनिक राष्ट्र निर्माण के आवश्यक उपकरण हैं। सिंगापुर निवासी होने का मतलब है राज्य द्वारा तीन अहम् पहचान चिन्हों से निरंतर संलग्नता रखना। प्रजाति, भाषा एवं धर्म, राष्ट्र की पौराणिक नींव के साथ महत्वपूर्ण शासन उपकरण हैं, जिनके द्वारा राज्य सामाजिक एवं राजनीतिक नियंत्रण रखने की कोशिश करता है।

जब प्रत्येक स्कूल का छात्र चाहे व किसी भी भाषा, प्रजाति एवं धर्म का हो, सिंगापुर के ''वचन'' कि हम एक संगठित राष्ट्र रहेंगे का प्रतिदिन गाता है; जब प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्रीय पहचान पत्र पर अपनी ''प्रजाति'' घोष्ति करनी पड़ती है; जब अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिये प्रेसीडेंट काउंसिल एवं मेनटेनेंस ऑफ रिलिजियस हारमनी एक्ट (1991) सिंगापुर के बहुसंस्कृतिवाद के लिये महत्व पूर्ण है, जब कुछ ईसाईयों पर अति–उत्साही धर्म–परिवर्तन के लिये राजद्रोह का आरोप लगा जबकि कुछ ''स्वयं उग्र सुधारवादी'' मुसलमानों को तथाकथित आतंकी योजनाओं को बनाने के लिये आंतरिक सुरक्षा एक्ट के अंदर नजरबंद कर लिया; यह देखना काफी आसान हो जाता है कि सिंगापुर में प्रजाति, भाषा एवं धर्म के मुद्दे काफी गहराई तक गुथे हुये हैं एवं राजनीति से आवेशित है।

सिंगापुर की सरकार के लिये, धर्मनिरपेक्षता देश के विभिन्न धार्मिक एवं प्रजातीय समूह के सह–अस्तित्व के लिये आवश्यक है। किसी भी समाजशास्त्रीय अनुसंधान, जो प्रजातीय एवं धर्म से संबंधित है, को इस तर्क का सामना करना पड़ता है कि सिंगापुर एक बहुधार्मिक समाज है एवं आधिकारिक रूप से धर्मनिरपेक्ष राज्य है। सिंगापुर का बहु–धर्मीय होना प्रासंगिक, ऐतिहासिक कारकों का, जिसमें उसकी पूर्व में महत्वपूर्ण व्यापारिक उपनिवेश की प्रस्थिति का होना शामिल है जिसने एशियन प्रदेश एवं उससे भी दूर के प्रदेश से विभिन्न समुदायों को आकर्षित किया का परिणाम है। यद्यपि धर्मनिरपेक्षता का प्रचार, राष्ट्र की नींव के साथ ही, राज्य के जागरूक विचारधारा से प्रस्फुटित होता है। यह एक निरंतर प्रयास है उन परिस्थितियों से जिनके अन्तर्गत सिंगापुर 1965 में फेडरेशन ऑफ मलेशिया से अलग हुआ से उलझा हुआ है। उसके राजनीतिक नेताओं एवं नागरिकों के अथक प्रयासों से एक राष्ट्रीय पहचान तराशी गयी जो कि पड़ोसी मलेशिया एवं इंडोनएशिया के ताकतवर इस्लामी संस्कृति के विपरीत है।

एक स्पष्ट धर्मनिरपेक्ष राज्य के लिये, यह काफी आश्चर्यजनक है कि सिंगापुर में मुस्लिम मुद्दों का मिनिस्टर–इन–चार्ज है। 2016 में ईद–अल–अदा (कुर्बानी का त्यौहार) पर मंत्री ने सिंगापुर वासियों को चेताया कि वो ऐसे विचारों को नकारे जो एकता को दुर्बल करते हो, एवं उन्हें याद दिलाया कि यह धार्मिक पर्व, ''धार्मिक एक प्रजातीय एकीकरण को प्रतिबिंबित करने का अच्छा समय है।'' देश के सार्वजनिक राजनीतिक विमर्श में, इस्लाम को अक्सर 'दूसरे' के तौर पर चित्रित किया गया हैं–ऐसा सिंगापुर की धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र–राज्य के रूप में स्वयं की अवधारणा एवं सामाजिक तालमेल के लिये एक सशक्त खतराजो कि विश्व दृष्टि में 'उग्रवादी' विचार धारा से जुड़ा है, दोनों ही से संबंधित करते हुये किया गया।

इस संदर्भ में जहां ताकतवर राज्य लोगों को स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित करता है, जहां प्रजाति को सांस्कृतिक विभिन्नता जैसे भाषा एवं धर्म से परिभाषित किया जाता है, समाजशास्त्रीय शोध जो प्रजाति एवं धर्म को छूता है, दो विभिन्न उपागम अपनाते है। एक उपागम, जो कि प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्रीय परम्परा में है, ''प्रजाति'' एवं ''धर्म'' को स्वतंत्र चर मानता है। दूसरा उपागम जो आलोचनात्मक रूप से यह परखता है कि किस प्रकार शक्ति सीमा–निर्माण को आकार देती है, यह अन्वेषण करते हुये कि किस प्रकार प्रजाती एवं

>>

धर्म दोनों की सीमायें जमीन पर स्थानान्तरित होती है एवं धुंधली होती है और एक अस्पष्ट, मिश्रित एवं बहु–पहचान जो स्पष्ट वर्गीकरण की अवहेलना करती है को उत्पन्न करती है। इस प्रकार, सिंगापुर में धार्मिक बहुलता पर अनुसंधान में पाया गया कि प्रसिद्ध हिंदुत्व एवं दा ओइंजन (क्रमशः ''भारतीय'' एवं ''चीनी'' समुदाय से) मुनीसवारान, तुआ पीक कोंग, ताई सेंग, श्रीकृष्ण, हनुमान जैसे देवताओं की पूजा करते हैं, जो इन दो धार्मिक परम्पराओं से आते हैं। इनमें कुछ देवता एक ही मंदिर में भी स्थापित है।

धर्मनिरपेक्षता पर आलोचनात्मक अध्ययन सुझाव देते हैं कि धर्मनिरपेक्षता सामाजिक तालमेल के लिये सिंगापुर के वैधानिक बहुप्रजातीवाद को वैधानिकता प्रदान कर सकती है। परंतु साथ ही वो राजनीतिक एवं नीति निर्माण प्रक्रिया में, वस्तुनिष्ठ एवं तार्किक विवेचन लाने के प्रयास में धर्मनिरपेक्षता की भूमिका पर बल देती है। सिंगापुर की शैली का धर्मनिरपेक्षतावाद, आस्तिक विरोधी, सैन्य संस्करण जै, जैसा कुछ साम्यवादी देशों में पाया जाता है/नहीं है, अपितु सिंगापुर का धर्मनिरपेक्षतावाद, लोगों की जिंदगी में धर्म की महत्वता को मानता है एवं सैद्धान्तिक रूप से सभी धर्मों को बराबरी का दर्जा देता है। संविधान में धर्म की स्वतंत्रता की गारन्टी के अलावा राज्य विभिन्न धार्मिक समूहों को समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भागीदारी निभाने के लिये प्रेरित करता है, विशेषतः समाज कल्याण सेवाओं में एवं नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार करने में।

सिंगापुर का धर्मनिरपेक्षतावाद दो महत्वपूर्ण पहलु को शामिल करता है। एक तरफ, राज्य धर्म को राजनीति से बाहर रखने पर दृढ़ रहता है, महत्वपूर्ण रूप से धार्मिक संगठनों को अपने सदस्यों को राजनीतिक सक्रियता में प्रेरित करने से रोकते हुये। दूसरी तरफ, राज्य धार्मिक समुदायों को नियंत्रित एवं संचालित करने के उद्देश्य से धार्मिक संगठनों जैसे सिंगापुर इस्लामिक काउंसिल (MUIS), मंदिर, मस्जिद एवं आस्था आधारित स्वैच्छिक कल्याण समूह पर सरकारी प्रतिनिधी को ''परामर्शदाता'' के रूप में लाता है। यह ''परामर्शदाता'' धार्मिक वार्ताओं को राज्य एजेंडा से समानिरूप करने का प्रयास करते हैं।

ज्यादातर आधुनिक राज्यों की तरह, सिंगापुर विभिन्न धार्मिक समूहों के लिये वैधानिक रूप से पूजा का स्थान देता है, प्रादेशिकता की प्रकार्यात्मक अवधारणा का प्रसार करते हुये, जो कि विकास एवं आधुनिकता की विचारधारा से मजबूत हुयी है। एक राज्य जो जमीन की अल्पता का सामना कर रहा है, प्राधिकारी एक अति उपयोगितावादी एवं हस्तक्षेप वाली शहरी योजना उपागम को अपना रहे है। सिंगापुर जमीन प्राधिकरण के उन जमीनों पर कब्जा करने से जो पूर्व में धार्मिक संगठनों के पास थी, धार्मिक समूहों अन्यत्र जाने पर मजबूर हुए, बन्द हुए या यहाँ तक कि धार्मिक सभायें को जोड़ा गया। उदाहरण के लिये, चीनी मंदिर जो पूर्व में अलग अलग स्थानों पर थे, को अब एक साथ ''मंदिर जत्था'' के रूप में लाया गया है। पूर्व में अलग–अलग मंदिरों में स्थापित वेदियां अब एक ही इमारत में स्थापित की गयी हैं। हाल ही में, सरकार ने ऐसी बहुमंजिला इमारतों का निर्माण करने के लिये प्रस्ताव दिया जहां विभिन्न धार्मिक समूह अपनी क्रियाओं के लिये जगह किराये पर ले सकते हैं।

सिंगापुर के धर्म पर किये गये कई शोधकर्त्ताओं ने धर्म को प्रबंधन एवं नियमित करने वाली राज्य की व्यूह रचनाओं को परखा, परन्तु इस पर कम शोध हुआ है कि कुछ धार्मिक समूह किस प्रकार धर्मनिरपेक्ष नीतियों में गतिरोध पैदा करने के लिये नवाचार ढूंढते हैं। उदाहरण के लिये, टेरेंस चोंग, डेनियल गोह ने पता लगाया कि किस प्रकार ईसाई, राजनीतिक नेताओं के साथ मिलकर नीति निर्माण एवं राजनीतिक वार्ता को सूक्ष्मता से आकार देते हैं। वो सरकार की लैंगिकता एवं परिवार संबंधित रूढ़िवादी नीतियों पर समर्थन जाहिर करते हैं। लोकप्रिय हिन्दुत्व पर अध्ययन, जिसमें विनीता सिन्हा का मुनीसवारन पूजा पर कार्य भी शामिल है, जंगल क्षेत्र में अनुष्ठान क्रियाओं का विवरण करते हैं, जो प्राधिकारियों की नजरों में नहीं है। मेरी स्वयं की शोध यह पता लगती है कि किस प्रकार यिगुएन डाओ, चीनी उद्भव का एक पारदेशी ''मोक्ष धर्म'' ने जन आवासीय अपार्टमेंट (जिन्हें आधिकारिक रूप से ''धर्मनिरपेक्ष'' स्थल कहा जाता है) को मंदिरों में परिवर्तित किया। इसी प्रकार ईसाईयों ने अपने घरों में ''कोशिका समूह'' की मीटिंग का आयोजन किया, जबकि चीनी आत्मा माध्यमों एवं डेओइसट पुजारियों ने ''गृह मंदिर'' स्थापित किये।

ये मामले सिंगापुर में धर्म पर राज्य प्रबंधन की संभावित कमियों को बताते हैं। यह धर्मनिरपेक्षता के ''निजी'' एवं ''सार्वजनिक'' धार्मिक क्षेत्रों के फलस्वरूप हुआ है। यह एक ऐसा अन्तर है, जे धर्म पर सरकार के पूर्ण नियंत्रण की क्षमता पर परिसीमा एवं कुछ धार्मिक समूहों के लिये राज्य अधिकारिक क्षेत्र के बाहर जाकर क्षेत्र का निर्माण कर सकता है। ■

फ्राँसिस खेक गी लिम से पत्र व्यवहार हेतु पता <fkglim@ntu.edu.sg>

> वैश्वीकरण के बाद

डेनियल पी. एस. गोह, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सिंगापुर

मरीना खाड़ी में राष्ट्रीय दिवस परेड पर तैरते हुए मँच पर पूर्वाभ्यास करते हुए। डेनियल गोह द्वारा फोटो।

सिंगापुर में राष्ट्रीय संग्राहलयों एवं इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के संबंध में दो बुनियादी कहानियाँ कही जाती है। पहली एवं दीर्घावधि कहानी 1965 में स्वतंत्रता के बाद से कही गयी। यह टापु पर 1819 में अंग्रेजी बस्ती के प्रारम्भ की कहानी है। यह बस्ती ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सर स्टेमफोर्ड रेफल्स ने बसायी थी। इस कहानी में, रेफल्स की प्रतिभा की पहचान है, सिंगापुर की सामरिक भौगोलिक स्थिति, जो कि मलाया पेनिनसुला के शीर्ष पर बैठा है, सीधे इनडियन सागर एवं ईस्ट के मध्य ट्रेड हवायों के मिलने के स्थान पर। सुशासन एवं खुले आव्रजन के साथ, बस्ती एक मलय मच्छी गाँव से आधुनिक बहुप्रजातिय महानगर में बदल गयी। दूसरी कहानी, जिसे अभी हाल ही में अपनाया गया है, द्वीप पर सबसे प्राचीन बस्ती, टेमासेक के विषय में है। प्रारंभिक एशियाई अन्वेषकों के पुरातत्व संबंधी रिकॉर्ड एवं अन्वेषण के अनुसार टेमोसक एक मजबूत शहर एवं महानगरीय व्यापारिक पोर्ट था, जिसको चौहदवीं शताब्दी में ह्रासोन्मुख श्रीविजया साम्राज्य के राजकुमार ने स्थापित किया था। पंद्रहवीं शताब्दी में यह मलाका के सल्तनत के नियंत्रण में आ गया। 1511 में मलाका के पुर्तगालियों के अधीन आने से शहर को त्याग दिया गया एवं यह जगह द्वीप के संस्कृत नाम सिंगापुरा पर पुनः लौट गई।

दोनों प्रारंभिक कहानियों का साझा समापन बिन्दु, ब्रिटिश उपनिवेश में प्रथम बार सर्वजन मताधिकार और स्वशासन की स्थापना होने के बाद, 1959 से सत्तारूढ़ दल पीपल्स एक्शन पार्टी की निपुणता है। इस प्रकार शहर की उन विशेषताओं की पहचान हुई जो उसकी सफलता गढ़ेंगे। दोनों कहानियाँ में समान सूत्र है कि सिंगापुर की सफलता के लिए भूमण्डलीकरण केवल अनिवार्य ही नहीं अपितु उसके जीवित रहने के लिए अतिआवश्यक है। भूमण्डलीकरण सिंगापुर है। इसलिए, सिंगापुर को अवांछनीय रूप से फेडरेशन ऑफ मलेशिया से अलग करने के बाद जब उसे 1965 में एक काल्पनिक राष्ट्रीय समुदाय गढ़ने के लिए मजबूर किया गया, सत्तारूढ़ दल के वैचारिक नेता एस. राजारत्नम, जो युवा देश के राष्ट्र–निर्माण प्रयासों के केन्द्र में थे, ने 1972 में सिंगापुर को एक वैश्विक शहर के रूप में सम्बोधि किया। इसे अब भविष्यदर्शी उक्ति के रूप में माना जा रहा है, चूंकि आज सिंगापुर का वणिक अर्थव्यवस्था से और फिर औद्योगिक अर्थव्यवस्था से उत्तर–औद्योगिक वैश्विक शहर में सफल रूपांतरण के लिये अभिनन्दन किया जा रहा है और वह भूमण्डलीकृत एशिया में प्रमुख वित्तीय और सेवा हब के रूप में भूमिका निभा रहा है।

परन्तु सिंगापुर को वैश्विक शहर बनाने की राजनैतिक–आर्थिक आवश्यकता के बारे में राजारत्नम की अंतदृष्टि एक लापरवाह तर्क नहीं था। अरनोल्ड टायनबी से प्रेरणा ले कर, राजारत्नम उत्तर–हीगलवाद ज्ञानोदय से ओतप्रोत तर्क उठा रहे थे कि सिंगापुर एक वैश्विक शहर है। सिंगापुर को अपने सत्व को साबित करने एवं इतिहास में अपने मुकद्दर को पूर्ण करने के लिए एक वैश्विक शहर रहना होगा और विकसित होना होगा। राष्ट्र–निर्माण एवं राष्ट्रीय औद्योगिकरण को सिंगापुर के वैश्विक शहर के सतत विकास के विपरीत नहीं चलना होगा। अतः, अर्थव्यवस्था को आव्रजन के लिए खुले बहुराष्ट्रीय निगमों एवं समाज के लिए आकर्षित बनाये रखने के निर्णय सिर्फ आर्थिक उत्तरजीविता के लिए व्यवहारिक आवश्यकता नहीं थे बल्कि सिंगापुर के वैश्विक शहर के आवश्यक चरित्र को ध्यान में रख कर किये गये थे।

सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में आधुनिकीकरण के प्रयासों के हिस्से के रूप में 1965 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना हुई। पिछले 50 वर्षों में, विशेष रूप से प्रारंभिक दशकों में, विभाग में कार्यरत मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री, जिनमें से अधिकांश ने पश्चिम के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों से स्नातकोत्तर प्रशिक्षण प्राप्त किया था, सरकारी सामाजिक नीतियों के निर्माण और कभी कभी क्रियान्वयन में संलग्न थे। इसके अन्तर्गत जनसंख्या के बड़े भाग को जनआवास के साथ समायोजन करने में मदद करना, नृजातीय एवं धार्मिक बहुलता का प्रबंधन करना, विवाह एवं प्रजनन मुद्दों से निपटना और सरकार के एक पीढ़ी की विश्वदृष्टि एवं व्यवहार को आधुनिक करने हेतु चलाये जा रहे गहन सामाजिक इंजीनियरिंग अभियान से सम्बन्धित अन्य मुद्दे सम्मिलित थे।

विवेचनात्मक विद्वान इसे आज सत्तारूढ़ दल के वैचारिक आधिपत्य और निरकुंश प्रभुत्व को बनाये रखने में समाजशास्त्रियों की सह अप–राधिता के रूप में देख सकते हैं। लेकिन यह पश्च दृष्टि में किया गया एक बहुत सरल दोषारोपण है। स्वतन्त्रता के बाद के तात्कालिक वर्षों में नव स्वतन्त्र लोगों की उत्तर–औपनिवेशिक आकांक्षाओं से सहानुभूति रखने वाला कोई भी सिंगापुर निवासी या अप्रवासी सत्तारूढ़ दल की दमदार दृष्टि का समर्थन करता विशेष तौर पर तब जब यह दृष्टि राजारत्नम जैसे विचारक द्वारा व्यक्त की गई हो। वि–औपनिवेशीकरण के दौरान वामपंथ की पराजय के बाद और सत्तारूढ़ दल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद से जुड़े तत्वों के विहीन, समाजवादी विचारों और नीतियों के चयनात्मक विनियोग के बाद, सिंगापुर अपने विश्ववादी एवं सांसारिक प्रकृति के प्रति कैसे सच्चा रह सकता है पर वैकल्पिक वर्त्तान्त एवं विमर्श के अभाव में यह और अधिक सारगर्भित हो जाता है।

1990 के दशक में सिंगापुर के समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण बदलाव आया। 1995 में चुआ बेंग हुआत द्वारा कम्यूनिटेरियन आइडियोलोजी एण्ड डेमोक्रेसी इन सिंगापुर का प्रकाशन, जिसमें उन्होंने सत्तारूढ़ दल

>>

की प्रभावी विचारधारा को तोड़ कर एक नाम दिया, निस्सन्देह एक निर्णायक मोड़ था। इसके पश्चात 1997 में जन आवास पर चुआ की पुस्तक का प्रकाशन हुआ, जिसमें उन्होंने बहस की कि जनआवास, जहां चौथा–पांचवां से अधिक सिंगापुर निवासी रहते हैं, उस सामुदायिक विचारधारा जो सत्तारूढ़ दल द्वारा एकजुट राजनैतिक आर्थिक व्यवस्था में प्रत्येक नागरिक को एक साझेदार बनाती है, का मूर्त रूप है। यह कोई तानाशाही नहीं थी जिसने सत्तारूढ़ दल के सतत प्रभुत्व को बनाये रखा अपितु ग्रामशी के सिद्धान्त के अनुरूप लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी में मूर्त आकार लेने वाले विचारों के प्राधान्य ने एकल–दलीय शासन को अपनाया। सिंगापुर के मानवशास्त्रियों और समाजशास्त्रियों की एक नई पीढ़ी ने इस रहस्योद्घाटन का प्रत्युत्तर अध्ययन एवं प्रलेखन के लिए वैकल्पिक वृत्तान्त और कार्यप्रणालियों को ढूंढने से दिया। इस तरफ इस संवाद श्रंखला के पूर्ववर्ती चार निबन्ध इशारा कर रहे हैं।

विशिष्ट रूप से, सिंगापुर के समाजशास्त्र में यह बदलाव ऐसे समय में आया जब राजारत्नम का वैश्विक शहर तेजी से इस तरह बढ़ रहा था कि वह सासकिया सासेन के वैश्विक शहर की तरह दिखने लगेगा। सरकार नवउदारवादी वैश्वीकरण को अपना रही थी और अर्थव्यवस्था को पूंजी, वस्तुओं एवं अप्रवासी बहाव में तीव्र वृद्धि का लाभ उठाने हेतु पुनः आकारित कर रही थी। एक नई शब्दावली उभरी जो समुच्चय 'और– द्वारा जोड़ी गये द्विभाजन को चिन्हित कर रही थी। नागरिकों को ''विश्वनागरिक'' एवं 'हार्टलेण्डर' से सम्बोधित किया गया जो निधडक दुनिया भर में घूम सकते हैं और जब आवासीय के ''स्थानीय'' जीवनक्षेत्र में आराम से रह सकते हैं। देश को एक राष्ट्र और एक वैश्विक शहर कहा गया। अब वह ऐसा राष्ट्र नहीं था जो वैश्विक शहर है। तीव्र आव्रजन से जो विविधता बढ़ी वह बहु प्रजातीय और बहुसांस्कृतिक दोनों ही थी। 1989 में द इंस्टीटयूट ऑफ साउथ–ईस्ट एशियन स्टड़ीज ने दो भूगोलशास्त्रियों द्वारा संपादित एक ऐतिहासिक पुस्तक मेनेजमेंट ऑफ सक्सेस : द मोल्डिंग ऑफ माडर्न सिंगापुर प्रकाशित की। इस पुस्तक में सिंगापुर की वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था में एक एशियन टाइगर के रूप में सफल प्रवेश का अभिनन्दन करते हुए सिंगापुर के पहली पीढ़ी के कई समाज वैज्ञानिकों के लेख हैं। 2010 में उसी संस्थान ने समाजशास्त्री टेरेन्स चोंग द्वारा संपादित पुस्तक मेनेजमेंट ऑफ सक्सेस : सिंगापुर रिविजिटेड प्रकाशित की। इस बार उसमें नवउदारवादी वैश्वीकरण द्वारा उपजे तनावों को समझने के प्रयासों वाले लेख थे।

यदि वैश्वीकरण सिंगापुर है, तब वैश्वीकरण के पश्चात का सिंगापुर का समाजशास्त्र क्या होगा? इसकी तीन सम्भावनाएँ हैं : मनहूसियत, आदर्शलोकीय एवं भविष्यवादी। पश्यदृष्टि में, मुझे 2010 के मेनेजमेंट ऑफ सक्सेस में लिखा मेरा स्वयं का लेख अपने दृष्टिकोण में काफी हद तक मनहुसियत से भरा लगता है। उसने पुराने बहुप्रजातीयवाद में नये बहुप्रजातीयवाद को गूंथने के सरकारी प्रयासों को जांचने का प्रयास किया था। ये प्रयास इसलिए किये गये थे ताकि आव्रजन द्वारा उत्पन्न विविधता का प्रबंधन किया जा सके और राजनैतिक नियन्त्रण बनाये रखने आर्थिक असमानताओं से उत्पन्न अंतर प्रजातीय तनावों को सुलझाया जा सके। नवउदारवादी वैश्वीकरण के तनाव अब आधुनिकीकरण के विरोधाभास के साथ इस तरह स्तरित हो गये हैं कि अब उनको दूर करने के लिए कोई मार्ग नहीं है सिवाय इसके कि उनके प्रबंधन के लिए मजबूत सरकारों पर हमेशा निर्भर रहा जाए। यह निश्चित तौर पर दुर्खीम का फ्रेम था जो बहुलवादी समाज में सुदृढ़ता की समस्या से प्रारम्भ हो कर इस निराशावाद पर अंत होता है कि सामाजिक एकीकरण एवं नियमन के लिए राज्य पर निर्भरता अपरिहार्य है। इसका अभिप्राय है कि सिंगापुर के समाजशास्त्र में प्रचलित वैकल्पिक प्रथाओं और वृत्तान्तों की खोज इसीलिए लाभदायक है क्योंकि राज्य को इन वैकल्पिक प्रथाओं और वृत्तान्तों को अपने सांस्कृतिक खजाने में सम्मिलित कर अपनी नैतिक संरक्षकता को नवीनीकृत करने की आवश्यकता है।

दूसरी संभावना आदर्शलोकीय दृष्टिकोण है हम इसे यहां प्रस्तुत लेखों में पाते हैं। यह दृष्टिकोण लोकतंत्र और समानता के रूप में चिन्हित इष्टतम आबादी वाले द्वीप पर एक आदर्श गणराज्य के सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक रीति रिवाजों की खोज में थामस मोरे के यूटोपिया की भावना को प्रकट करता है। सरकार पर न्यूनतम निर्भरता पर बल दिया जाता है और राज्य की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वायत्तता और निजी संतुष्टि के लिए स्थान का विस्तार की आशा की जाती है। लोग आर्थिक रूप से रचनात्मक, सामाजिक रूप से सचेत और राजनीतिक रूप से संलग्न दिखाई देते हैं। कुछ मानवशास्त्री और समाजशास्त्रियों के लिए सिंगापुर में आशाओं के इन स्थानों की खोज और विश्लेषण, जो कभी कभी नवउदारवादी वैश्वीकरण के विडंबना युक्त मदद के कारण अस्तित्व में आते हैं, पर्याप्त है। ऐसा विश्वास है कि ऐसी वैकल्पिक कहानियाँ विश्वविद्यालय कक्षाओं में विद्यार्थियों को प्रेरित करेंगी ताकि वे बाहर जा कर दुनिया को बदलेंगे। कुछ और आगे जायेंगे और स्पष्ट तौर पर अपने जीवन की परिस्थितियों को बदलने में सामान्य व्यक्तियों के साथ असाधारण व्यक्तियों की सक्रियतादको मानचित्रित करेंगे। तथापि, दूसरों के लिये, जैसा कि योवेन तियो इस अंक में प्रकाशित निबन्ध में कहती हैं, वे ऐसे विकल्पों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने के लिए स्वचेत शैक्षणिक सक्रियता का आह्वान करेंगे ताकि समाजशास्त्री बदलाव एजेंट बन जाएँ।

महत्वपूर्ण रूप से, आदर्शलोकीय दृष्टिकोण अपनी राजनीति में न तो विरोधात्मक और न ही अतिवादी है, यद्यपि वैचारिक प्रभुत्व से इर्ष्या करने वाले शासकीय अभिजनों द्वारा इसे इस प्रकार से गलत पहचाने जाने की संभावना है। आदर्श लोकीय दृष्टिकोण काफी हद तक राजारत्नम के वैश्विक शहर दृष्टि के समरूप है। उन्होंने 1972 के भाषण को दर्शकों के मध्य बैठे पत्रकारों से ''मारे लोगों को बौद्धिक और आत्मिक रूप से वैश्विक शहर [...] को स्वर्ग रूपी शहर बनाने के लिए सशक्त करें जिसका स्वपन चिरकालीन समय से भविष्यवक्ताओं और सिद्ध पुरूषों ने देखा था, का आह्वान किया (द स्ट्रेट्स टाइम्स, फरवरी 7, 1972)। आदर्शलोकीय दृष्टिकोण मोरे के माध्यम से हिपो के अगस्तीन तक अपनी विरासत को देखता है।

आखिरी संभावना भविष्यवादी दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण से रूढ़िवादी सिंगापुर में लिखना राजनैतिक रूप से संभव नहीं है लेकिन शायद बौद्धिक रूप और राजनैतिक रूप से भी इस दृष्टिकोण द्वारा उठाये जाने वाले संभावित प्रश्नों के बारे में सोचना आवश्यक है। यदि वैश्वीकरण सिंगापुर है, तो तब क्या होगा जब वैश्वीकरण पलटने लगेगा, जब विश्व व्यवस्था वि–वैश्वीकृत होने लगेगी? ऐसा 1920 और 1930 के दशकों में पहले भी एक बार हो चुका है, और यह एक अशांत समय था जब ब्रिटिश मलाया में वामपंथी और नृवंशीय–राष्ट्रीयवादी राजनैतिक लामबंदी ने द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् हिंसक संघर्ष के लिए राजनीतिक भूमि तैयार की थी। बदले में, संघर्षों ने तीन राष्ट्रीय संस्थाओं को जन्म दिया जो पचास वर्ष पूर्व अकल्पनीय थी : पहला, फेडरेशन ऑफ मलाया, फिर फेडरेशन ऑफ मलेशिया और अंत में रिपब्लिक ऑफ सिंगापुर। इन संस्थाओं ने स्थानीय समाजों को पहले की पीढ़ी द्वारा संभावित से अधिक परिवर्तित कर दिया। आज कौन सा भविष्य अकल्पनीय एवं अचिन्तय है? अगर अकल्पनीय होता है तो सिंगापुर समाज कहां होगा? वैश्वीकरण के बाद सिंगापुर क्या बन जायेगा, जब यह वैश्विक शहर नहीं रहेगा? ■

डेनियल पी. एस. गोह से पत्र व्यवहार हेतु पता <dsong@nus.edu.sg>

> अनुदारवादी भविष्य की ओर

लैंगिक–विरोधी एवं वैश्वीकरण–विरोधी

एग्निज्का ग्राफ, वारसॉ विश्वविद्यालय, पोलेण्ड एवं **एल्जबियता कोरोच्जुक,** सोडरटोन विश्वविद्यालय, स्वीडन एवं महिलाओं एवं समाज (RC 32) और सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (RC 47) पर आई. एस. ए. की शोध समिति के सदस्य

लिंग–विरोधी रैली में एक बैनर, अगस्त 30, 2015। एल्जबियता कोरोईस्जुक द्वारा फोटो।

वैश्विक राजनीति में लिंग महत्व पूर्ण स्थान रखता है। यू. एस. चुनावों के उपरान्त हम यह पहले से बेहतर जान गये हैं : ट्रम्प की स्त्री द्वेष की मुखर अपील इस समस्या का सिर्फ एक हिस्सा है। यू. एस. या अन्यत्र जनवाद न सिर्फ आर्थिक अस्थिरता और एवं डर पर ही पोषित नहीं होता है बल्कि लैंगिक सम्बन्धों, (सम) लैंगिकता एवं प्रजनन के चारों ओर घूमती हुई व्यग्रता पर भी होता है। एक देश के बाद दूसरे देश में, रूढ़िवादी (विशेष रूप से कैथोलिक) जिसे ''लिंग'' या ''लैंगिकवाद'' कहते हैं–लिंग समानता नीतियाँ, यौन शिक्षा, LGBTQ एवं प्रजनन अधिकारों, के आलोचकों ने महिलाओं और पुरूषों को सक्रिय करने में मदद की है। इससे जनवादी नेताओं का मार्ग प्रशस्त हुआ है। जहां नारीवाद और लिंग समानता नीतियों का विरोध कोई नया नहीं है, वर्तमान लहर पूर्व के नव–रूढ़िवादी प्रारूप से विलगता को चिन्हित करती है। सामाजिक रूढ़िवादिता अब स्पष्ट रूप से वैश्विक पूंजी के प्रति द्वेष से सम्बन्धित है।

पौलेण्ड में दक्षिण पंथी जनवादी विधि एवं न्याय पार्टी की 2015 में चुनावी विजय काफी हद तक रूढ़िवादी मीडिया एवं धार्मिक विमर्श में ''लैंगिकवाद'' के विरूद्ध

> >

अभियान के कारण संभव हुई थी। 2012 से पौलेण्ड के कैथोलिक चर्च और रूढ़िवादी समूहों ने नीति प्रलेखों एवं जन विमर्श में "लिंग" सम्बोध के प्रयोग का विरोध किया। उन्होंने लिंग समानता शिक्षा एवं कानून (जैसे महिलाओं के विरूद्ध हिंसा और घरेलू–हिसा की रोकथाम एवं बचाव करने वाला इस्तांबुल कनवेन्शन की संपुष्टि करना) से लड़ाई की एवं यौन और प्रजनन अधिकारों को सीमित करने का प्रयास किया। अभियान में कैथोलिक धार्मिक नेता, रूढ़िवादी राजनेता, दक्ष्झिण पंथी विचार टैंक एवं चयन–विरोधी समूह सम्मिलित थे। अन्य समूह भी जुड़ गये : उदाहरण के लिए, अभिभावकों का जमीनी जन आंदोलन रातुजमी मलुची! (छोटों को बचाओ!) जिसका उद्‍भव 2009 में शैक्षणिक सुधारों के विरोध में हुआ, इस्तांबुल कन्वेंशन के विरूद्ध लड़ाई में इस आधार पर सम्मिलित हो गया कि घरेलू हिंसा की रोकथाम करने वाले कदम अभिभावकों की सत्ता के लिए खतरा पैदा करते हैं। जमीनी संगठनों एवं नेटवर्कों ने बड़ी संख्या में लोगों, विशेष रूप से "समलैंगिक लॉबी" और यौन शिक्षकों द्वारा अपने बच्चों के लिए तथाकथित खतरों से चिंतित अभिभावकों को सक्रिय बनाने में मदद की। लैंगिकता विरोधी बच्चों और परिवार एवं पोलिश सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों की उन नारीवादी समूहों, LGBTQ और मानवा–धिकार सक्रियकर्त्ताओं, जिन पर उदारवादी राजनेताओं एवं भ्रष्ट पश्चिम के समर्थन का इल्जाम लगा है, से बचाने का दावा करते हैं। इस लिंग–विरोधी विमर्श में, तत्कालीन सत्तारूढ़ पार्टी सिविक प्लेटफॉर्म, जो रूढ़िवादी–उदारवादी है, अक्सर चरम वामपंथ के एक हिस्से के रूप में चित्रित की गई। उस पर "परम्परागत" परिवार और पोलिश राष्ट्र को यूरोपीय संघ जैसी विदेशी संस्थाओं के कहने पर, नष्ट करने का दोषारोपण भी किया गया।

इस रूढ़िवादी हमले में "जेण्डर" लिंग भेद पर चर्चा करने का या पौरूष एवं स्त्रीत्व के निर्माण की विवेचना करने का एक लेबल नहीं है। अपितु, "जेण्डर" को लगातार अंतराष्ट्रीय साजिश, जो यौन आंदोलन और/या साम्यवादी–स्टाइल में लादी जेण्डर समानता से उपजी है, के रूप में प्रस्तुत किया गया। यू. एन. जैसी पराराष्ट्रीय संगठनों और वैश्विक पूंजी का समर्थन पा कर, "जेण्डर समर्थक" कथित रूप से गर्भपात, नैतिक पतन एवं विकृति के साथ अनियंत्रित व्यक्तिवाद जो समुदायों और पारंपरिक परिवारों को नष्ट करता है, को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखते है। मासूम बच्चों पर मनमाना लिंग परिवर्तन थोपना इस आंदोलन के उद्देश्यों में से एक है; जेण्डर की अवधारणा लिंग भेद के उन्मूलन के साथ ही मानवीय कामुकता के क्षेत्र में उथल पुथल से लगातार सम्बन्धित रहती है। इससे विश्व के कुछ भागों में जनसंख्या ह्रास भी होता है।

लैंगिकता विरोध सिर्फ एक पोलिश विशेषता नहीं है। इसी प्रकार का विमर्श अन्यत्र भी पाया जाता है। समकालीन रूस में, यह दावा कि समलैंगिक और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाले स्थानीय पारंपरिक मूल्य के लिए खतरा पैदा करते हैं, ने पुतिन शासन काल के लिए जन समर्थन को मजबूत किया है; फ्रांस में समलैंगिक विवाह के खिलाफ जन लामबंदी ने स्पष्ट रूप से नेशनल फ्रन्ट की लोकप्रियता बढ़ाने में योगदान दिया है। यू. एस. में डोनाल्ड ट्रम्प की खुली स्त्री–द्वेषता ने उसकी विजय को नहीं रोगा, न ही ऐसा प्रतीत हुआ कि मतदाता देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति को चुनने के लिए जुड़े हैं (वस्तुतः 53% श्वेत अमरीकी महिलाओं ने ट्रम्प को वोट दिया)। दक्षिण पंथी जनवाद के उदय और लैंगिकवाद–विरोध के मध्य क्या सम्बन्ध है? ये दो विचारधाराएँ जेण्डर सम्बन्धों के सामाजिक–रूढ़िवादी दृष्टि को बढ़ावा देने के लिए ही नहीं बल्कि उदारवादी अभिजात वर्ग को सामान्य आबादी के आर्थिक और सामाजिक पतन के लिए उत्तरदायी ठहराने पर भी समानिरूप होती हैं।

हमने अपने विश्लेषण को यूरोप में हाल ही के लिंग विरोधी अभियानों का प्रत्युत्तर देने वाले कई सहयोगी प्रोजेक्टों में भाग लेकर और साथ ही साथ अपने सक्रियता के अनुभव जिसमें पौलेण्ड के लिंग–विरोधी अभियान द्वारा निशाने पर कई पहलों में भागीदारी के द्वारा विकसित किया है। हमने असंख्य पाठ्यसामग्री : लिंग विरोधी सर्किट की मुख्य आवाजों द्वारा लिखी गई पुस्तकें और आलेख; लैंगिकवाद विरोधी प्रमुख प्रस्तावकों (जिसमें दो पोप, स्थानीय कैथोलिक नेता एवं बुद्धिजीवी है) के द्वारा सार्वजनिक वक्तव्य; लिंग–विरोधी घटनाओं का मीडिया कवरेज और पोलिश नेटवर्क www.stopgender.pl और अंतराष्ट्रीय प्लेटफार्म जैसे www.citizengo.org या www.lifesitenews.com. जैसे संगठन और आंदोलनों की वेबसाइट पर प्रकाशित विभिन्न सामग्री, का विश्लेषण किया है।

सभी "जेंडर विरोधी" पाठ्यसामग्री ने उदारवादी अभिजात वर्ग की तरफ से खतरे के अंदेशे को प्रदर्शित किया है, जिसमें नारीवादी भी शामिल है, जिनको शक्तिशाली एवं खतरनाक रूप में चित्रित किया गया है। इसके विपरीत, जेंडर समानता एवं गे–अधिकारों के विरोधी दावा करते हैं कि वो आम जन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मेहनती एवं अपने परिवारों की तरफ समर्पित होते हैं। महत्वपूर्ण रूप से पीड़ित होने के बुनियादी अनुभव के आर्थिक एवं सांस्कृतिक दोनों आयाम है : "जेंडर इसट" को वैश्विक अभिजात वर्ग से भली भांति फंडेड एवं अच्छी तरह से संबंधित देखा जाता है; आम जन को वैश्वीकरण का मूल्य चुकाने वाले के रूप में देखा जाता है। इस सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिकी का अंतः संबंध स्पष्ट रूप से जेंडर–विरोधी द्वारा प्राथमिकता दी हुयी असंबद्ध व्यूह रचना में प्रतिबिंबित होता है। यह उपनिवेशवाद विरोधी फ्रेम के रूढ़िवादी रूपान्तर में दिखाई देता है। लैंगिकता को निरंतर रूप से विदेशी भार, उपनिवेशवाद से बराबरी का दर्जा देते हुये एवं बीसवीं शताब्दी के निरंकुशतावाद एवं वैश्विक आतंकवाद से तुलना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह दलील पश्चिम द्वारा वास्तविक ऐतिहासिक औपनिवेशिक प्रभुत्व के संबंध में बहस से असंबधित है, परन्तु यह काफी बार उन देशों में जैसे पौलेण्ड में भी प्रयोग हुआ है जहां उपनिवेशवाद का कोई स्पष्ट इतिहास नहीं है। जैसा कि सभी जनवादी विवरण में हैं, यह शब्दाडंबरपूर्ण, भ्रष्ट अंतराष्ट्रीय अभिजात का विरोध करता है, जो आम लोगों का शोषण करता है एवं "लोग" खुद को स्थानीय, प्रामाणिक एवं परेशान के रूप में प्रस्तुत करते है।

इस प्रकार के जेंडर विरोधी वार्ता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, पौलेंड के तत्कालीन न्याय मंत्री जेरोस्लो गोविन, जिन्होंने 2012 में इस्तानबुल कन्वेनशन के अनुसमर्थन का विरोध किया था। उन्होंने दावा किया कि कन्वेनशन "जेंडर विचार धारा का संवाहक" है, एक वैचारिक ट्रेजोन घोड़ा है जिसकी पारम्परिक परिवारों एवं स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों का तोड़ना छुपा हुआ उद्‍देश्य है। इसी प्रकार, जनवरी 2016 में, पोप फ्रांसिस ने भरोसेमंदो को "जेंडर विचारधारा" के विरूद्ध चेताया एवं बताया कि यह अमीर पश्चिमी देशों द्वारा थोपा हुआ खतरा है। यह एक प्रकार का वैचारिक के साथ आर्थिक औपनिवेशवाद भी है। पोप के अनुसार, विदेशी सहायता एवं शिक्षा, जेंडर

>>

समानता नीतियों के साथ बाँध दी जाती है, परन्तु ''अच्छे एवं मजबूत परिवार'' इस खतरे से उभर सकते हैं।

''जेंडरइसम'' के विवरण में कैथोलिक चर्च के नेता, दक्षिण पंथी कट्टरवादी एवं जेंडर विरोधी आन्दोलन के पंडित, वैचारिक औपनिवेश को आर्थिक शक्ति से जोड़ते है। यह शक्ति पराराष्ट्रीय संस्थाओं एवं कारपोरेशन में स्थापित है, ऐसा वर्णन किया जाता है। पौलेंड में, अधिकतर सक्रियवादी यूरोपीय संघ की तरफ इशारा करते हैं परन्तु अन्य अन्तराष्ट्रीय संगठनों, संस्थाओं एवं संघ पर भी निशाना लगाया जाता है, जिसमें एड्स, तपेदिक एवं मलेरिया से लड़ने के लिये ग्लोबल फंड, WHO, UN या UNICEF एवं विश्व बैंक भी शामिल है। पॉलिश संदर्भ में, जेंडर–विरोधियों ने उन सिविल सोसाइटी संरचनाओं पर भी निशाना साधा जिनकी नींव 1990 में पश्चिम दाताओं द्वारा रखी गयी थी, विशेषतः LGBTQ दक्षिण पंथी समूह जैसे होमोफोबिया के विरूद्ध अभियान (KPH)। इन समूहों को विदेशी भ्रष्ट अभिजात वर्ग के एजेंट के रूप में चित्रित किया गया। एक महत्वपूर्ण यूरोपीय जेंडर विरोधी प्राधिकारी के रूप में, गैबरीले कुबी ने कैथोलिक वर्ल्ड रिपोर्ट में इसे एक साक्षात्कार के रूप में रखा है :

अब यह वैश्विक यौन क्रांति शक्ति अभिजातों द्वारा वहित की जा रही है। इसमें अंतराष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र एवं यूरोपीय संघ अपने गूढ़ उप–संगठनों के जाल के साथ, वैश्विक कारपोरेशन जैसे–अमेजन, गुगल एवं माइक्रोसाफ्ट, बड़े संस्थान जैसे रॉकफैलर एवं गूगेनहीम, अत्यधिक अमीर व्यक्ति जैसे बिल एवं मेलिंडा गेट्स, हेड टरनर जोरजिस सोरोस एवं वॉरन बफेट एवं स्वयं सेवी संस्थायें जैसे अंतराष्ट्रीय योजनाबद्ध अभिभावक फेडरेशन एवं अंतराष्ट्रीय लेसबियन एवं गे एसोसिएशन शामिल है।

''स्थानीय'' एवं ''प्रामाणिक'' मूल्यों पर दबाव के बावजूद, जेंडर–विरोधी आन्दोलन को पराराष्ट्रीय नेटवर्क जिसमें वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फेमीलीस एवं सिटीजनगो जैसे प्लेटफार्म शामिल है से मजबूत हुआ है। उदाहरण के लिये पौलेंड के ओरडो इयूरिस इन्सटीट्यूट, को काफी नजदीकी से यू. एस. के कैथोलिक परिवार एवं मानवा–धिकार इन्स्टीट्यूट, वर्ड लूथ एलिएन्स युरोप, ब्रूसरलस् के यूरोपियन डिगनिटी वाच एवं अजन्मे बच्चों के बचाव के लिये बनायी गयी ब्रिटिश सोसाइटी, जो कि विश्व की सबसे पुरानी चयन विरोधी संगठन है, का सहयोग करती है।

इन पराराष्ट्रीय सम्बन्धों के बावजूद, लैंगिकता–विरोधी नियमित रूप से एक अभिजात–विरोधी विमर्श को काम में लेते हैं। वे साधारण लोगों की मर्यादा और एक उत्पीड़ित बहुसंख्यक के रूप में उनकी पहचान को समर्थकों को लामबंद करने के लिए काम में लेते हैं। ऐसा कर वे अपने परिवारों और बच्चों के भविष्य से सम्बन्धित उनकी वैध व्यग्रता से सफलतापूर्वक अपील करते हैं।

रूढ़िवादी कर्ता में नव–उदारवादी विचार धारा एवं नीतियों के कारण उत्पन्न व्यग्रता एवं आर्थिक अस्थिरता को उपयोग में लेने में सफल हुए हैं। इन भावाओं को पतनोन्मुख अभिजात वर्ग के विरोध में उपयोग किया गया है। इस अभिजात वर्ग को पौलेंड में नैतिक रूप से भ्रष्ट ''यूरो समर्थक'' के रूप में चित्रित किया जाता है (एक चरम दक्षिण पंथी नारा है ''पीडोफीलीस एवं पीडरएसट्, ये तो यूरो समर्थक हैं'') या फिर यू. एस. में ''धूर्त हिलेरी'' के संदर्भ में प्रतिनिधित्व किये जाते हैं। जेंडर–विरोधी नई लहर लैंगिक समानता वाली नीतियाँ के विरोध में एवं 1970 के आखरी दशक के सालों में हुयी वार्ताओं पर आधारित है। परन्तु यह स्थानीय राष्ट्रवाद एवं अनुदार जना–धिकारवाद के पराराष्ट्रीय पुनरूत्थान को भी प्रतिबिंबित करती है। यह अपने आपको एक ऐसे आन्दोलन के रूप में प्रदर्शित करती है जो ''प्रामाणिक'' स्थानीय मूल्यों एवं आम जन को विदेशी वैश्विक शक्तियों एवं अमीर भ्रष्ट अभिजात से बचाव करती है। ''जेंडर'' को अनियंत्रित व्यक्तिवाद एवं सांस्कृतिक और आर्थिक शोषण के बराबर बताते हुये, यह व्यूह रचना अनुदार जनाधिकारवाद के राजनीतिक सफलता के लिये मार्ग प्रशस्त करती है। जेंडर–विरोध अब नवउदारवादी वैश्वीकरण के प्रतिरोध की नई, रूढ़िवादी भाषा बन गया है। ■

एग्निज्का ग्राफ से पत्र व्यवहार हेतु पता
<bekorol@gmail.com>
एल्जबियता कोरोच्जुक से पत्र व्यवहार हेतु पता
<abgraff@go2.pl>

> पोलेण्ड में

प्रजनन अधिकारों की रक्षा करते हुए

जूलिया कुबिसा, वारसाव विश्वविद्यालय, पोलेण्ड

नये गर्भपात कानून के खिलाफ वारसा में पोलिश महिलाएँ प्रदर्शन करती हुई, अक्टूबर 3, 2016।

सन् 2016 के पतझड़ में, पोलेण्ड में, गर्भपात के नियोजित अवैधीकरण के विरोध में महिला प्रतिरोधों की एक नई लहर का उद्‌भव हुआ। पोलिश नारीवादियों ने पोलेण्ड में 1993 में कठोर कानून आने के बाद से ही गर्भपात विरोधी कानून के विरूद्ध लड़ाई लड़ी है, पॉलिश का गर्भपात कानून, जो यूरोपीय संघ में कठोरतम कानूनों में से एक है, केवल निषेध या बलात्कार की स्थिति में, महिला के स्वास्थ्य एवं जीवन के लिये खतरे की स्थिति में, भ्रूण की आनुवांशिक विकृति की स्थिति में, गर्भपात की अनुमति देता है।

जैसा कि पॉलिश कार्यकर्त्ताओं ने सुस्पष्ट किया है कि वैध निषेधों ने देश में भूमिगत गर्भपात जाल को जन्म दिया है। परन्तु 2016 तक इस मुद्‌दे ने गति नहीं पकड़ी थी। पोलेण्ड के 2015 के संसदीय चुनावों के पश्चात् दक्षिण पंथी, कानून एवं न्याय दल को संसदीय बहुमत मिला। यह सिर्फ प्रजनन अधिकारों पर अधिक प्रतिबंध प्रस्तावित करने से पहले, एक वक्त की बात थी। 2016 के प्रारंभ में, सरकारी नेता, जिनमें प्रधानमंत्री सुश्री बियाटा सुजायदलों भी शामिल है, ने गर्भपात पर पूर्ण प्रतिबंध के प्रति समर्थन का संकेत दिया जबकि अति रूढ़िवादी स्वयंसेवी संस्था, ओरडो इयूरिस, ने महिलाओं एवं महिला चिकित्सकों को कारावास की सजा देने के समर्थन में हस्ताक्षर लेने शुरू कर दिये। साथ ही यह मांग रखी कि अधिकारी यह सुनिश्चित करने के लिये जांच करें गर्भपात मेडिकल गर्भनाशकों के द्वारा तो नहीं कराया गया है।

ओरडो इयूरिस के नये अभियान से उत्तेजित क्षोभ जल्द ही 'दो सक्रियवादी अभियानों में परिवर्तित हो गया : हाल ही में बनी नारीवादी एजेंडा वाले एक बुनियादी संगठन, गर्ल्स फॉर गर्ल्स के द्वारा आयोजित प्रदर्शन एवं धरने एक विधिक पहल, सेव द वुमन। सेव द वुमन, को सामाजिक प्रजातांत्रिक नारीवादियों के समूह ने उठाया, जिसने पोलेण्ड के गर्भपात विरोधी कानून को उदार बनाने के लिये अभियान चलाया।

2016 के मध्य में ओरडो इयूरिस ने घोषणा की, कि उसने अपने प्रस्ताव के समर्थन में 5,00,000 से ज्यादा हस्ताक्षर ले लिये है, जबकि सेव द वुमन ने 250,000 इकट्‌ठे किये। दोनों ही प्रस्तावों को संसद में रखा गया। दक्षिण पंथी कैथोलिक संगठनों ने पूर्व में इसी प्रकार के कई प्रस्तावों को प्रस्तुत किया, परन्तु इन्हें मत नहीं मिलें;

> >

1990 के प्रारंभिक समय, जब 1.2 मिलियन नागरिकों द्वारा हस्ताक्षर की हुयी उदारीकरण की याचिका को खारिज कर दिया गया था, से कोई भी उदारीकरण वाला प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया गया।

इस बार, संसद ने तत्काल ही 'सेव द वुमन' प्रोजेक्ट को अस्वीकृत कर दिया। इसके बजाय अवैधीकरण के प्रस्ताव पर चर्चा जारी रखी। यह एक ऐसा कदम था जिसने 'सेव द वुमन' एवं वामपंथी राजिम पार्टी को प्रदर्शन करने के लिये उत्तेजित किया। इन्होंने समर्थकों को काले वस्त्र पहन कर धरने से जुड़ने या सोशल मीडिया पर हेशटेग # काला प्रदर्शन का प्रयोग करते हुये फोटो पोस्ट करने का आवाहन किया। जब पोलेण्ड की एक अति आदरणीय अभिनेत्री ने एक अखिल पोलेण्ड महिला हडताल का सुझाव दिया, जो कि आइसलैंड में 1975 में महिलाओं द्वारा की गयी हडताल के प्रारूप पर आधारित हो, सोशल मीडिया के सक्रियवादी इस सुझाव में शामिल हो गये और उन्होंने अक्टूबर 3, 2016 की तिथी को अखिल पोलेण्ड महिला काला प्रदर्शन हडताल के लिये घोषित कर दी। यद्यपि किसी भी महिला संगठन से कार्य की पहल का आवाहन नहीं किया गया, नारीवादी आन्दोलनों के कई कार्यकर्त्ताओं एवं राजनीतिक दलों ने इस प्रयत्न को अपना समय एवं संसाधन देकर समर्थन दिया। हड़ताल से पहले के दिनों में, कई निजी कर्मचारियों एवं स्थानीय सरकारी अफसरों ने उन महिलाओं को समर्थन दिया था जो हडताल चाहती थी। कर्मचारियों को 3 अक्टूबर का अवकाश लेने को बोला गया। कई विश्वविद्यालय शिक्षकों ने लेक्चर नहीं लिये।

अवरोधों के बावजूद, जैसे कि हड़ताल की वैध प्रस्थिति, यह लामबंदी के अप्रत्याशित स्तरों से काफी सफल साबित हुयी। राजधानी एवं अन्य बड़े शहरों में प्रदर्शनों से भिन्न, महिला हडताल को पूरे पोलेण्ड में सही मायनों में समर्थन मिला।

महिलाओं एवं लड़कियों ने कुछ पुरूष समर्थकों के साथ, पूरे देश भर में, कम से कम 142 शहरों एवं गाँवों में, जिसमें तकरीबन 150,000 लोक सभी काले वस्त्रों में शामिल थे, प्रदर्शन का आयोजन किया। नारे, महिलाओं के मूल अधिकार, प्रजनन, चयन एवं महिला निष्ठा से संबंधित थे, जो कि गर्भपात पर पूर्ण रोक से उल्लंघित होंगे। हड़ताल वाले दिन भरी बारिश हुयी, इसलिये ज्यादातर सहभागी छाते के नीचे ही खड़े हुये एवं चले, जो विरोध का एक अनापेक्षित प्रतीक बन गया।

विरोध की ऊर्जा एवं पैमाने ने कैथोलिक चर्च के अधिकारियों और दल को विस्मय में डाल दिया। प्रारंभिक सत्तारूढ़ प्रत्युत्तर स्पष्टतया महिला विरोधी थे : एक कैथोलिक बिशप ने दावा किया कि, ''महिला बलात्कार के दौरान गर्भवती नहीं हो सकती'', एक प्रसिद्ध नेता ने दृढ़तापूर्वक कहा, महिलाओं में यौन स्वच्छंदता होती है एवं उनको नियंत्रित किया जाना आवश्यक है एवं विदेश मंत्री ने तो महिलाओं को पूर्णतया गैर जिम्मेदार घोषित कर दिया। तथापि विरोध के तीन दिन पश्चात्, संसद ने गर्भपात पर पूर्ण निषेध के प्रस्ताव को खारित कर दिया–यह पोलेण्ड की सत्तारूढ़ दल की हाल ही की पराजयों में से एक थी। सरकार ने अपने विरोध रवैये की जगह नरम रूख अपनाया। प्रधानमंत्री ने घोषणा की, कि पोलिश महिलाएँ जो ''कठिन गर्भावस्था'' का अनुभव करती हैं–''कठिन'' ऐसे मामलों से संबंधित है जिसमें गर्भावस्था के दौरान असाध्य बीमारी एवं भ्रूण विकृति का पता लगा हो – को लगभग 1,000 यूरो का एक मुश्त लाभ दिया जायेगा। यह लाभ उन बच्चों को जन्म देने पर दिया जायेगा जो जल्द ही अपने जन्म के बाद मर जायेंगे। इस आलोचना के बावजूद कि यह महिला का वस्तुकरण करता है, इस लाभ को देना प्रारम्भ कर दिया है।

काफी सक्रियवादियों ने जो अखिल पोलेण्ड महिला काला प्रदर्शन हड़ताल के आयोजन में शामिल थे, ने निर्णय लिया कि वह विरोध जारी रखेंगे, ताकि सरकार पर दबाव बना रहे। दो सप्ताह के पश्चात् उन्होंने दूसरी हड़ताल का आयोजन किया जो कि अपेक्षाकृत कुछ छोटी थी, परन्तु जिसने ग्यारह सूत्री एजेंडा को आगे बढ़ाया, जिसने महिला निष्ठा एवं स्वतंत्रता की तरफदारी की, यौन आक्रामकता, घरेलू हिंसा एवं समाज के सैन्यकरण का विरोध किया। इसने महिला अभिमुखी सामाजिक नीतियों का भी आवाहन किया। काले प्रदर्शन ने कम से कम दो प्रतिष्ठित हस्तियों को आम जन में अपने स्वयं के गर्भपात की चर्चा करने के लिये प्रेरित किया। इस चर्चा ने जनविमर्श में निषेष को तोड़ा। काले प्रदर्शन ने 58% समर्थन के साथ महत्वपूर्ण जन पहचान अर्जित की। साथ ही इसको अंतराष्ट्रीय पहचान भी मिली, जिसने अर्जेन्टीना, आइसलैंड एवं दक्षिण कोरिया में महिलाओं को इस प्रकार के विरोध आयोजित करने के लिये प्रेरित किया। 'सेव द वोमेन' की बारबारा नोवाका एवं रेजाम से ऐगनीसका डिजीमेइनोविक–बेक को फॉरेन पॉलिसी पत्रिका की तरफ से महिला काला विरोध हड़ताल आन्दोलन के प्रतिनिधियों के रूप में वैश्विक चिंतक 2016 पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हडताल के पश्चात् से पोलेण्ड की सरकार ने गर्भपात पर और रोक लगाने के संबंध में किसी भी विचार को न लाते हुये अपना नर्म रूख जारी रखा। सरकार ने उन बच्चों के समर्थन में जो विकृतियों के साथ पैदा होते हैं, विमर्श को प्रोत्साहित किया–हालांकि उसने इस संदर्भ में फंड को बढ़ाने की दिशा के कोई वास्तविक कदम नहीं लिये। परन्तु नारीवादी सक्रियवाद जिसने अक्टूबर में राष्ट्रीय हडताल को उत्पन्न किया था, गतिमान है। यह उन परिस्थितियों में हुआ जब हाल ही में स्वास्थ्य मंत्रालय ने अस्पतालों में जन्म एवं मातृ देखभाल के राष्ट्रीय मानकों का स्तर नीचा किया एवं सत्तारूढ़ विधि एवं न्याय पार्टी ने उजागर किया तो वो महिलाओं के विरूद्ध हिंसा एवं घरेलू हिंसा के बचाव से संबंधित यूरोप के इस्तानबुल कन्वेन्शन के काउंसिल को खारिज करने की योजना बना रही है। जो अखिल पोलेण्ड महिला हडताल से संबंधित महिलाए हैं, ने घोषणा की कि वो ''अपने छाते बंद नहीं करेंगी।'' ■

जूलिया कुबिसा से पत्र व्यवहार हेतु पता <juliakubisa@gmail.com>

> ISA का कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क

ओलेग कोमलिक, बेन–गरियान विश्वविद्यालय, इजरायल और अध्यक्ष, ISA कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क

चित्रण अरबू द्वारा

अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् का कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क, समाजशास्त्र और संबंधित संकायों में कार्यरत, सभी विषयगत रूचियों और वैज्ञानिक दृष्टिकोणों वाले, विद्यार्थियों, शुरूआती कैरियर वाले शिक्षाविदों और व्यवहारकर्ताओं को साथ लाता है। कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क के कार्यों और वर्तमान गतिविधियों की रूपरेखा बनाते हुए, इस निबंध में, मैं यह दिखाने की आशा करता हूं कि कैसे यह अद्वितीय अंतर्राष्ट्रीय समुदाय अपने सदस्यों के पेशेवर पथ को बढ़ावा देता है और अधिक विस्तार में, एक पेशे के रूप में समाजशास्त्र को पोषित करता है।

2006 में शुरू हुआ और आई एस ए के अध्यक्ष और कार्यकारी समिति द्वारा प्रोत्साहित किया गया, कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क पीएचडी विद्यार्थियों की आई. एस. ए. प्रयोगशालाओं, कनिष्ठ समाजशास्त्री प्रतियोगिता और ISA कांग्रेसों के प्रतिभागियों के सशक्त करने वाले अनुभवों से विकसित हुआ। हमारे समुदाय के साथी समवर्ती स्थानीय रूप से बसे और वैश्विक स्तर पर जुड़े हुये है–यह एक ऐसी स्थित है जो आकर्षक होने के साथ ही चुनौतीपूर्ण भी है। इस क्षमता को पहचानते हुये, कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क का मिशन इसे यथार्थ में लाना है। इस तरह कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क का उद्देश्य कनिष्ठ समाजशास्त्रीयों के लिए जानकारी साझा करने, विचारों के आदान प्रदान करने और अपने कैरियर को बढ़ाने के लिये सहयोग स्थापित करने, और समाजशास्त्रीय ज्ञान और अंतदृष्टि के सृजन, प्रसार और प्रयोग करने के लिए एक उपयोगी और सहायक मंच प्रदान करना है।

पिछले ढाई सालों ने कनिष्ठ समाजशास्त्री, नेटवर्क में रोमांचक विकास देखा है। कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क के प्रचार के लिये व्यापक सक्रिय प्रयासों के पश्चात्, प्रमुखतः वैश्विक दक्षिण में, 2500 से अधिक एम. ए. विद्यार्थी, पी एच डी उम्मीदवार और कनिष्ठ और वरिष्ठ

>>

शिक्षकों को भी शामिल करते हुये, नेटवर्क की सदस्यता काफी बढ़ी है। यद्यपि अधिकतर प्रतिभागी अकादमिक हैं, पेशेवरों और कार्यकर्ताओं से भी नेटवर्क में शामिल होने के लिये पूछा गया है; हम उन सभी का स्वागत करते हैं जो समाजशास्त्र को उनके कार्य में एक सहारे के रूप में देखते हैं।

कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क की गतिविधियां चार पूरक स्तंभों पर आधारित हैं; सबसे पहले, एक नयी जे एस एन मेलिंग सूची तेजी से कनिष्ठ समाजशास्त्रीयों के लिये एक लोकप्रिय जानकारी का स्त्रोत बन गयी है। हर दो सप्ताह में, जे एस एन संवादपत्र उपयोगी, रूचिकर और प्रासंगिक अपडेट प्रदान करता है; पत्रों के लिये आमंत्रण, पोस्ट–डॉक पद, अनुदान सूचनायें, नौकरी सूचनायें और समाजशास्त्र और अकादमिक जीवन से संबंधित विचारोत्तेजक लेख।

दूसरा आई एस ए का शोध–प्रबंध सार एक मुक्त पहुँच डाटाबेस है जो कनिष्ठ समाजशास्त्रीयों को अपनी लघु जीवनी और संपर्क जानकारी के साथ उनके डॉक्टरेट शोध–प्रबंध के सार प्रस्तुत करने की अनुमति देती है; इसमें अभी करीब 650 सार शामिल हैं। प्रतिभागियों को समान विषय पढ़ रहे अन्य को खोजने में मदद कर के, यह मंच शोधार्थियों के बीच सहयोग पैदा करता है। इसके अलावा प्रकाशन घर पहले से ही डाटाबेस को देखना सीख रहे हैं। कभी कभी वे उन लोगों से संपर्क करते हैं जिन्होंने अपने सार प्रस्तुत किये हैं।

तीसरा, जैसा कि ढाई साल पहले कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क ने अपना फेसबुक पेज और ट्विटर अकाउंट शुरू किया है, ऑनलाइन घोषणाओं, शोध प्रबंध सार और रूचिकर लिंक पर पहुंच कर और पोस्ट कर के हजारों अनुयायी और आगन्तुकों सोशल मीडिया के गुणात्मक और परिसंचारी प्रभाव का फायदा लेने में सफल रहे हैं।

अंतिम पर कमतर नहीं, विभिन्न देशों और क्षेत्रों के कनिष्ठ विद्वानों को साथ लाते हुये, कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क ने स्लोवेनियन सोशल साइन्सेज के वार्षिक अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के सह–आयोजन और अन्य अकादमिक बैठकों को प्रायोजित करने की परंपरा को बनाये रखा है।

मैं कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क के बोर्ड सदस्यों डोलोरस मोदिक और तमारा बी. वलिक का उनकी भागीदारी के लिये और आइ. एस. ए. सचिवालय को उनकी त्वरित और निरंतर सहायता के लिये आभार व्यक्त करता हूं। मैं यह बताने का अवसर लूंगा कि कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क हमेशा नये सुझावों के लिये खुला है; किसी भी प्रकार की पहल और सहायता बहुत सराहनीय होगी।

आई एस ए की महत्वपूर्ण परियोजनाओं और इसकी शोध समितियों के साथ, सामाजिक–राजनैतिक की उलझनों को सुलझाने के लिये बेहतर रूप से सुसज्जित, कनिष्ठ समाजशास्त्री नेटवर्क समाजशास्त्रीयों के एक बेहतर वैश्विक समुदाय बनाने में मदद कर रहा है। कनिष्ठ समाजशास्त्री के रूप में, कठोर नवउदारवादी और बाजारीकृत वास्तविकताओं और सत्तावादी और राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों के छाया के बीच, ऊपर की ओर अपना रास्ता बनाते हुये, हम समाजशास्त्र की एक पेशे के रूप में अनिवार्यता और सार का ध्यान रखते हैं। इस समान यात्रा की राह में, स्थापित सहकर्मियों के सहयोग से, हम समाजशास्त्र की कीमती बौद्धिक मशाल को लिये हुये साथ आगे बढ़ने की आशा करते हैं। ■

ऑलेग कामलिक से पत्र व्यवहार हेतु पता
<komlik@gmail.com>

> इण्डोनेशियाई में वैश्विक संवाद का अनुवाद

कमान्तो सुनार्तो, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय, डेपोक, इंडोनेशिया

अप्रैल, 2015 में इंडोनेशियन समाजशास्त्रीयों के समूह ने इंडोनेशियन संपादकीय टीम का गठन किया। वैश्विक संवाद खंड 5 अंक 3, ग्लोबल डॉयलोग ..... का पहला इंडोनेशियन भाषा संस्करण और उस समय पर इसकी सोलहवीं भाषा, सितंबर 2015 में प्रकाशित हुआ।

टीम में चार शहरों के पांच विभिन्न विश्वविद्यालयों से जुड़े हुये नौ समाजशास्त्री शामिल थेः इंडोनेशिया विश्वविद्यालय, डेपोक, योगकराता में गद्जाह मदा विश्वविद्यालय एवं सनाता धर्म विश्वविद्यालय, बोगोर में बोगोर कृषि संस्था और कुपांग में नुसा कैडाना विश्वविद्यालय। चार सदस्य वर्तमान में ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, इकोले डेस होट्स एट्यूड्स एन साइंस सोशलस, पेरिस, एम्सटर्डम विश्वविद्यालय और लाइडन विश्वविद्यालय में डॉक्टोरल अभ्यर्थी हैं।

अनुवाद किये हुये लेखों की सहकर्मी समीक्षा के कार्यभार के लिये तीन सदस्य संपादकीय बोर्ड का गठन करते है। बोर्ड सदस्य लेखों के अनुवाद में भी हिस्सा लेते हैं मुख्य रूप से उन समयों पर जब उपलब्ध अनुवादकों की संख्या सीमित हो जाती है, और एक दूसरे के अनुवादों की सहकर्मी समीक्षा करते हैं। इसके अलावा, एक बोर्ड सदस्य बोर्ड के एडिटर–इन–चीफ की तरह कार्य करता है, दूसरा सदस्य लेखों के अनुवाद के कार्य में शामिल टीम सदस्यों के साथ बोर्ड के संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करता है, जबकि तीसरा बोर्ड सदस्य GD प्रबंधकीय टीम के साथ संपर्क सूत्र का कार्य करता है। कॉलेज का एक स्नातक विद्यार्थी बोर्ड को इंडोनेशियन में GD के संपादन, डिजाइन और लिखने में सहायता करता है।

आई एस ए के GD को प्रकाशित करने से एक महीने पहले, संपादकीय टीम हर एक टीम सदस्य को, उनकी उपलब्धता के आधार पर, एक या दो लेखों का अनुवाद करने के लिये आमंत्रित करती है। सदस्यों के विश्वविद्यालयों के मध्य दूरी के कारण 65 से लेकर 2770 किलोमीटर तक सभी संवाद ई–मेल या सोशल मीडिया के माध्यम से किये जाते हैं।

अनुवाद की प्रक्रिया में इंडोनेशियन टीम के सामने चुनौतियां कमोबेश रोमानियन संपादकीय टीम के अनुभव जैसे ही है जैसा कि GD 6.3 (सितंबर 2016) में उल्लेखित है। अंग्रेजी और इंडोनेशियन

> *"कई आधारभूत अवधारणाओं का अभी तक औपचारिक रूप से अनुवाद नहीं किया गया है"*

भाषा के बुनियादी संरचना के मध्य अंतर के अलावा, सामाजिक विज्ञानों के कई आधारभूत अवधारणाओं का प्रमुखतः अभी हाल की, अभी तक औपचारिक रूप से अनुवाद नहीं किया गया है, इसलिये कई शिक्षाविद् आधारभूत अवधारणाओं को बिना अनुवाद किये छोड़ देते हैं। शब्दकोषों, शिक्षाविदों और पेशेवर प्रकाशनों को देखने के अलावा, और आपस में विशिष्ट अनुवाद के मुद्दों पर चर्चा कर, बोर्ड सदस्यों को कभी कभी संबंधित पेशेवरों से सलाह लेनी होती है और, कई बार, GD लेखों के लेखकों से स्पष्टीकरण तलाशते हैं जिनका अनुवाद किया जा रहा होता है।

स्वयं के सहित सारे लेखों की सहकर्मी समीक्षा और एक दूसरे से बचे हुये अनुवाद के मुद्दों की बातचीत के बाद, बोर्ड सदस्य लेआउट चरण की ओर बढ़ते हैं। ग्लोबल डॉयलोग के संपादकों के सामने अंतिम मसौदा प्रस्तुत करने से पहले, यह सुनिश्चित करने के कदम उठाये जाते हैं कि GD को आई एस ए दिशानिर्देशों के अनुसार अनुवादित और लिखा गया है।

वेबसाइट पर ग्लोबल डॉयलोग के प्रकाशन के बाद, बोर्ड GD का लिंक इंडोनेशियन समाजशास्त्रीय परिषद् (ISI) द एसोसियेशन ऑफ इन्डोनेशियन सोशियोलोजी स्टडी प्रोग्रामस (APSSI)] विभिन्न समाजशास्त्र विभागों और शिक्षा प्रोग्रामों, पुस्तकालयों, शोध केन्द्रों, समाजशास्त्र छात्र संगठनों और विभिन्न विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्रीयों को भेजता है। ■

कमान्तो सुनार्तो से पत्र व्यवहार हेतु पता <kamantos@yahoo.com>

> इंडोनेशियाई संपादकीय टीम का परिचय

कमान्तो सुनार्तो समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान संकाय, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर ऍमरिटस हैं। उन्होंने 1980 में शिकागो विश्वविद्यालय से शिक्षा में पी एच डी अर्जित की। उनकी वर्तमान शोध रूचि उच्च शिक्षा और समाजशास्त्र के इतिहास में हैं वे शिक्षा के समाजशास्त्र (RC 04) और समाजशास्त्र का इतिहास (RC 08) पर ISA की शोध समितियों के सदस्य हैं।

हरी नुग्रोहो वर्तमान में लाइडन विश्वविद्यालय, नीदरलैंडस के सांस्कृतिक मानवशास्त्र और विकास के समाजशास्त्र संस्थान में एक शोध छात्र है और समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान संकाय इंडोनेशिया विश्वविद्यालय में व्याख्याता हैं। उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज, एरामुस विश्वविद्यालय, हेग, नीदरलैंडस से अपना एम. ए. प्राप्त किया। हरी श्री आंदोलन (RC 44) सामाजिक वर्ग और सामाजिक आंदोलनों (RC 47), और सामाजिक आंदोलन, सामूहिक क्रिया और सामाजिक परिवर्तन (RC 48) पर ISA की शोध समितियों के सदस्य हैं।

लुसिया रतिह कुसमादेवी सेंटर डी एनालिस एत द इंटरवेन्शन सोशियोलोजिक (CADIS), एकोले डेस हाट्स एट्यूडस एन माइन्सेज सोशलेज (EHESS), पेरस, फ्रांस में एक शोध छात्रा है। उन्होंने 2006 में EHESS से Diplome d' Etudes Approfondies (DEA) हासिल किया। वह वर्तमान में समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान संकाय, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय में व्याख्याता हैं। उनकी प्रमुख शोध रूचि सामाजिक आंदोलन, पहचान, धर्म, युवा और शिक्षा में है। लुसिया धर्म का समाजशास्त्र (RC 22) और सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (RC 47) पर ISA की शोध समितियों के सदस्य हैं।

फिना इट्रियाति समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान संकाय, गद्जाह विश्वविद्यालय योराकराता में व्याख्याता और शोधकर्ता हैं। वह वर्तमान में कला एवं समाज विज्ञान कॉलेज (CASS) आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से अपनी पी एच डी कर रही हैं। द बायोसोशियलिटी एण्ड रिडेफिनेशन ऑफ आइडेन्टिटी ऑफ न्यूली डिसएबल्ड वुमन इन पोस्ट–अर्थक्वेक इंडोनेशिया के शीर्षक से उनकी शोध परियोजना है जिसमें वह आपदाओं में जीवित अशक्त महिलाओं की रोजमर्रा की जिंदगी को समझने के लिए नवंशविज्ञान पद्धति का उपयोग करती है। उनकी रूचि लिंग संस्कृति और समाज, अभिव्यक्ति, अशक्तता आपदा और मानवाधिकारों के मुद्दों में है। फिना इंडोनेशियन समाजशास्त्रीय परिषद् और द बॉडी इन द सोशल साइन्सेज (RC 54) पर ISA की शोध समिति की सदस्य हैं।

> >

इंदरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान संकाय, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय में एक व्याख्याता हैं। उनके शोध का क्षेत्र सामाजिक स्तरीकरण और गतिशीलता, सामाजिक असमानता, गरीबी और शिक्षा का समाजशास्त्र है। इंदरा ने समाजशास्त्र में अपनी पीएचडी, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय से और एम. ए., मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय, यू. एस. ए. से हासिल की है। वे शिक्षा का समाजशास्त्र (RC 04) और सामाजिक स्तरीकरण (RC 28) पर आई एस ए की शोध समितियों की सदस्य हैं। वह इंडोनेशियन समाजशास्त्रीय परिषद् की सदस्य भी है।

बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, Yogyakarta इंडोनेशिया में ग्रेजुएट प्रोग्राम ऑफ रिलिजियस एण्ड कल्चरल स्टडीज, सनाता धर्मा विश्वविद्यालय में एक व्याख्याता है। वे प्रवासी मजदूर मुद्दों पर काम करने वाली एक स्थानीय स्वयंसेवी संगठन साहबत इंसान में शोधकर्ता भी है। उन्होंने अपनी मास्टर ऑफ फिलोसफी की डिग्री 2007 में और विकास अध्ययन में पी एच डी 2011 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम से पूरी की। उनकी मुख्य शोध रूचि श्रम आंदोलनों, प्रवासी मजदूरों, पहचान की राजनीति और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में है।

मोहम्मद शोहीबुद्दीन समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र विभाग, एम्सटर्डम विश्वविद्यालय, नीदरलैंडस में एक शोध छात्र है। वह संचार और सामुदायिक विकास विभाग, मानव पारिस्थितिकी संकाय बोगोर कृषि संस्थान में एक व्याख्याता हैं। वह गरीबी, ग्रामीण विकास और कृषक परिवर्तन से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने वाले एक शोध संस्थान सजोग्य संस्थान के कार्यकारी निदेशक थे। उनकी शोध रूचि में भूमि सुधार नीतियां, कृषक अध्ययन, शांति और संघर्ष अध्ययन और ग्रामीण सामाजिक आंदोलन शामिल हैं।

डोमिंगगस एल्सीड ली संसाधन प्रशासन और सामाजिक परिवर्तन संस्थान (IRGSC) में कार्यकारी निदेशक होने के साथ साथ शोधकर्ता भी है। उन्होंने बर्मिंघम विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम से 2014 में पीएचडी प्राप्त की और केनेडी हार्वर्ड स्कूल, बोस्टन यू. एस. ए. से 2014 से 2015 के बीच में एक पोस्ट डोक्टोरल कार्यक्रम आयोजित किया। वह वर्तमान में पूर्वी इंडोनेशिया में सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान संकाय नुसार कैड़ाना विश्वविद्यालय, कुपांग में एक व्याख्याता हैं। उनकी शोध रूचि प्रवास, मानव तस्करी, लोकतंत्र सहभागिता और ग्रामीण समाजशास्त्र में है।

एंटोनियस एरिया सेटो हार्डजन ने अपनी डॉक्टोरल डिग्री इंस्टिट्यूट ऑफ एथनोलोजी, गोइथे विश्वविद्यालय फ्रेंकफर्ट, जर्मनी से पूरी की है। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन में पसाड विश्वविद्यालय जर्मनी से एम. ए. की पढ़ाई पूरी की है। वर्तमान में वह समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय में व्याख्याता हैं। उनकी मुख्य शोध रूचि सांस्कृतिक अध्ययन, सामाजिक मीडिया और सामाजिक नेटवर्क में है।